'भविष्य' की पुरस्कार-प्रतियोगिता के लिए २५) नक़द पुरस्कार ! [विवरण भीतर देखिए]

भारत के सुप्रसिद्ध विप्लवकारी नेता—श्री० रासबिहारी बोस ('रासूदा') जो आजकल जापान में हैं। कहा जाता है, वहाँ आपने एक जापानी विदुषी से विवाह कर लिया है। आपका दाम्पत्य जीवन बड़ा सफल बतलाया जाता है। आपकी २-३ सन्तानें भी हैं। आपने हाल ही में एक भारतीय स्वातन्त्र्य-सङ्घ की स्थापना भी की है।

छप गया !

प्रकाशित हो गया !!

का

राजपूताना-अङ्क

"भविष्य" और "चाँद" के विद्वान् लेखक—

डॉक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी-लिट्, विशारद

के सम्पादकत्व में प्रकाशित

इसकी विशेषताएँ :—

राजपूताने की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दशा का

सच्चा चित्र और सुधार के उपाय

लेखों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :—

वर्तमान राजपूत कौन हैं—हूण या आर्य !
मेवाड़—प्रताप से पूर्व और पीछे (सचित्र)
राजपूताने के प्रसिद्ध युद्ध
राजपूताने के प्रसिद्ध क़िले (सचित्र)
जौहर और भीषण आत्मोत्सर्ग (सचित्र)
मुग़ल-कालीन राजपूताना (सचित्र)
राजपूताने की रियासतों से अङ्गरेज़ी सरकार की सन्धियाँ।
राजपूताना और मराठे
राजपूतों के अन्तःपुर
रियासतों का राज-प्रबन्ध
राजपूताने में राजनैतिक असन्तोष
बीजोलिया और बूँदी
गुलाम और बेगार
राजपूताने के कर
मारवाड़ी व्यापारी
राजपूताने के अङ्गरेज़ी अफ़सर
डिङ्गलकाव्य
मीराबाई के भजन
जयपुर का अजायबघर
राजपूत चित्र-कला
इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि।

शीघ्र ही ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
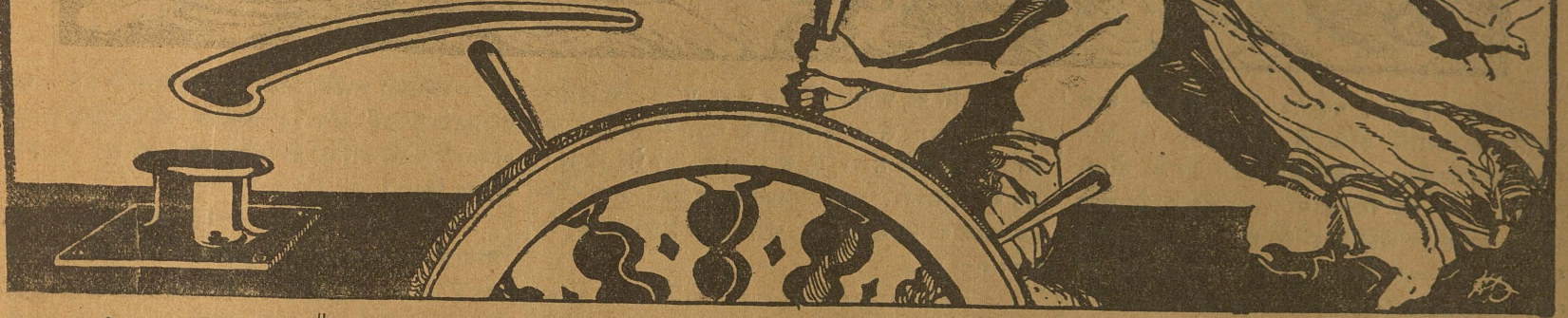
वर्ष २, खण्ड १ | इलाहाबाद—सोमवार ; १६ नवम्बर, १९३१ | संख्या ७, पूर्ण संख्या ५७

'सच्ची दिवाली तभी होगी जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे'

"चटगाँव और हिजली को याद रक्खो"

'अगर सरकार हमारी माँग स्वीकार न करे तो ब्रिटिश माल का बॉयकाट और पिकेटिङ्ग आरम्भ कर देना चाहिए'

जेल जाते समय श्री० सुभाषचन्द्र बोस का सन्देश !

११ ता० को दोपहर के समय श्री० सुभाषचन्द्र बोस ढाका से चार मील के फ़ासले पर तेजगाँव नामक स्टेशन पर गिरफ़्तार कर लिए गए। वे ढाका में पुलिस के अत्याचारों की जाँच करने वाली ग़ैर-सरकारी कमिटी में शामिल होने जा रहे थे। सब-डिविज़नल ऑफ़िसर ने उनको लौट जाने को कहा, और इस आज्ञा के न मानने पर वे ढाका सेन्ट्रल जेल में भेज दिए गए। जेल जाते समय सुभाष बाबू ने बङ्गाल के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को सन्देश दिया कि "चटगाँव और हिजली को याद रक्खो। इन घटनाओं का पूरा प्रतिकार और क्षतिपूर्ति हुए बिना हम शान्त नहीं हो सकते। मैं अपने देशवासियों से अपील करता हूँ कि वे चटगाँव और हिजली के सम्बन्ध में हमारी सार्वजनिक माँग से सहयोग करें और इसके लिए देश-व्यापी आन्दोलन करें। अगर सरकार हमारी माँग को स्वीकार न करे तो हमको ब्रिटिश माल के बायकॉट का आन्दोलन और पिकेटिङ्ग आरम्भ कर देना चाहिए। यदि कॉङ्ग्रेस किसी कारण से इस कार्य को अपने ऊपर लेने में आगा-पीछा करे तो जनता को यह स्वयं आरम्भ करना चाहिए; क्योंकि यह प्रश्न आत्म-सम्मान, मनुष्यत्व और जनता के अधिकारों की रक्षा का है। अन्त में मैं समस्त भारतवासियों से प्रत्येक महीने की १६ तारीख़ को 'चटगाँव और हिजली-दिन' मनाने की अपील करता हूँ।"

—दिल्ली षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० रुद्रदत्त मिश्र को सरदार भागसिंह डिप्टी-सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस को तमाचा मारने के अभियोग में नौ मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। सज़ा पूरी हो जाने के बाद नेकचलनी के लिए ५००)-५००) की दो ज़मानतें दो वर्ष के लिए देनी पड़ेंगी। ज़मानत न दे सकने पर दो साल की सादी क़ैद की सज़ा होगी।

—चिनसुरा (बङ्गाल) का समाचार है कि मनकुण्डा सशस्त्र मोटर डकैती के अभियुक्त श्री० देवेन्द्रनाथ भट्टाचार्य और श्यामविहारी मुकर्जी को क्रमशः सात और चार वर्ष की क़ैद की सज़ा दी गई।

—यू० पी० सरकार ने सूचना प्रकाशित की है कि २ नवम्बर को लगान वसूल करने के सम्बन्ध में फ़तेहपुर ज़िले में एक ज़मींदार को किसानों ने मार डाला और उसके साथी को सख़्त घायल किया।

—पबना की ख़बर है कि बाबू रञ्जीतचन्द्र लाहिड़ी नामक एक प्रसिद्ध वकील की छः नली पिस्तौल छः कारतूसों सहित उनके गाँव के घर से चोरी चली गई। वे उस समय पूजा की छुट्टियों में बाहर गए थे।

—मेरठ षड्यन्त्र-केस के अभियुक्त श्री० घाटे, जो डेढ़ वर्ष पहले स्वास्थ्य के ख़राब हो जाने से ज़मानत पर छोड़ दिए गए थे, स्वास्थ्य सुधर जाने से फिर जेल भेज दिए गए।

—१० तारीख़ को पुठिया (राजशाही, बङ्गाल) में डाक के थैले लूट लिए गए। गाँव वालों ने दोनों आक्रमणकारियों को, जिनके नाम श्री० विजनकुमार सेन गुप्ता और श्री० अमलेन्दु बागची हैं, बहुत बीमा किए हुए लिफ़ाफ़ों, एक रिवॉल्वर और एक खुकरी (नैपाली छुरा) के साथ पकड़ लिया। कहा जाता है कि अभियुक्तों ने डाक के हरकारे पर तीन गोलियाँ चलाईं जिससे डर कर वह भाग गया।

स्पेन के बादशाह को जन्म क़ैद

स्पेन की नई प्रजातन्त्र सरकार ने पुराने शासन-कर्ताओं के दोषों की जाँच करने के लिए एक कमिटी नियत की थी। उसने बादशाह अलफ़ेन्ज़ो को आजन्म क़ैद और समस्त सम्पत्ति की ज़ब्ती का दण्ड दिया है। साथ ही यह भी कहा है कि यदि सरकार ने फाँसी की सज़ा रद्द न कर दी होती तो अलफ़ेन्ज़ो इसी के पात्र थे। इस समय अलफ़ेन्ज़ो स्पेन छोड़ कर विदेश में भाग गए हैं।

—लाहौर की ख़बर है कि १३ तारीख़ को काश्मीर के जत्थे भेजने के सम्बन्ध में अहरार पार्टी के तीन नेता हबीबुर्रहमान, अहमदअली और मुहम्मदशफ़ी गिरफ़्तार कर लिए गए। लाहौर की अहरार पार्टी के दफ़्तर की तलाशी भी ली गई है।

महात्मा गाँधी का सन्देश

दिवाली के दिन महात्मा गाँधी ने एक सम्बाददाता को सन्देश दिया है कि—"सच्ची दिवाली तभी होगी जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे। हमको याद रखना चाहिए कि दीवाली का उत्सव रामचन्द्र जी की सेनाओं —अर्थात् अहिंसा और सत्य—की रावण की सेनाओं —अर्थात् हिंसा और असत्य—पर विजय पाने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

—मेरठ षड्यन्त्र केस में सरकार की तरफ़ से गत ३० सितम्बर तक १२ लाख १८ हज़ार रु० ख़र्च हो चुका था।

—१३ ता० को लाहौर के उर्दू दैनिक पत्र "ज़मींदार" के कार्यालय की पुलिस ने तलाशी ली।

—पटना की १० ता० की ख़बर है कि पटना बम केस में आजन्म क़ैद की सज़ा पाने वाले हज़ारीलाल ने एक बयान दिया है जिससे बिहार के एक क्रान्तिकारी सङ्गठन का भेद खुला है।

—ख़बर है कि पटना के दीहन मुहल्ला का रहने वाला राधाकिशन लोहार गत सोमवार को विस्फोटक पदार्थ सम्बन्धी क़ानून में गिरफ़्तार किया गया है। यह गिरफ़्तारी पटना बमकेस के अभियुक्त हज़ारीलाल के बयान के आधार पर हुई है, जो उसी मुहल्ले का रहने वाला था।

श्रीनगर का समाचार है कि स्पेशल ऑफ़ीसर मि० जेङ्किंस के सामने बयान देते हुए कितने ही सत्याग्रह करने वाले मुसलमान वालण्टियरों ने कहा है कि अहरार पार्टी ने इस वायदे पर उनको वालण्टियर बनाया था कि उन्हें सिर्फ़ दस दिन जेल में रहना पड़ेगा। उसके बाद अपनी जीत हो जायगी और स्वराज्य क़ायम हो जायगा। कुछ लोगों ने कहा कि हमको मज़दूरी के नाम से रोज़ाना तनख़्वाह पर जत्थों में भेजा गया है।

—साइप्रस के दङ्गे के सम्बन्ध में सर फ़िलिप लिस्टर ने पार्लमेण्ट में १२ नवम्बर को कहा कि दङ्गे के फल-स्वरूप ६ नागरिक मारे गए और ३० घायल हुए। ३९ पुलिस वालों को चोट लगी। गवर्नमेण्ट हाउस का मकान, जहाँ तक सम्भव होगा, जल्दी फिर बनाया जायगा। जब तक साइप्रस के शासन-विधान पर पुनर्विचार न हो तब तक के लिए वहाँ की व्यवस्थापक सभा रद्द कर दी गई है और उसके अधिकार गवर्नर को दे दिए गए हैं। जिन लोगों ने दङ्गा किया है वे ही तमाम हर्जाने के ज़िम्मेदार होंगे।

❀ ❀ ❀

—कलकत्ता के एक वर्कशाप में काम करने वाले गुहरामदास नामक व्यक्ति ने एक खेलने की तोप बनाई थी। उसने उसमें छोटे-छोटे कङ्कड़ भर कर दोस्तों के सामने चलाकर दिखलाया। एक कङ्कड़ रमेशचन्द्र नामक व्यक्ति को ऐसे ज़ोर से लगा कि उसका सर फट गया और वह अस्पताल में आठ घण्टे बाद मर गया। गुहरामदास गिरफ़्तार किया गया है।

—कालीकट (मद्रास) से प्रकाशित होने वाले 'युग भारथम्' नामक पत्र के सम्पादक श्री० कृष्ण-अय्यर सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में एक कविता छापने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बिहार के नेता बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने इस घोषणा के सम्बन्ध में कि, प्रधान-मन्त्री की १६ जनवरी वाली घोषणा में निर्धारित नीति पर सरकार क़ायम रहेगी, कहा कि अगर अब भी सरकार उसी नीति का दम भरती है, तो गोलमेज़ परिषद में इतना रुपया और समय ख़र्च करना फ़ज़ूलख़र्ची ही नहीं, वरन् अपराध समझा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अगर स्वाधीनता-संग्राम शुरू हुआ, तो लोग उसमें भाग लेने को पूरी तरह से तैयार हैं।

—श्री० कालीमोहन सेन गुप्ता नामक नज़रबन्द ने, जिसे कलिमपोङ्ग (दार्जिलिङ्ग) के एस० डी० ओ० ने पुलिस के बतलाए हुए घर में न रहने के कारण छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी थी, सेशन जज की अदालत में अपील की है। अभियुक्त सन् १६२४ से तीन वर्ष तक ज़िला मुर्शिदाबाद में नज़रबन्द रह चुका है और अब डेढ़ वर्ष से बक्सर के क़िले में नज़रबन्द था। सेशन जज ने अपील मन्ज़ूर करके मुक़दमे को फिर से विचार करने को भेजा है।

—बाँकुड़ा (बङ्गाल) का ६ तारीख़ का समाचार है कि जून्वनी गाँव में अखिलचन्द्र कुमार नामक व्यक्ति के यहाँ डाकुओं के एक बड़े दल ने डाका डाला। घर के लोग डर कर ऊपर के खण्ड में भाग गए। डाकू जब ऊपर न जा सके तो उन्होंने मकान में आग लगा दी और थोड़ा-बहुत माल नीचे के खण्ड से लेकर चलते बने। आग के बढ़ जाने से छः बड़ी उमर के व्यक्ति और एक बच्चा घर के भीतर ही जल मरे।

—बम्बई के मज़दूर-दल के कार्यकर्ता श्री० लालजी पैण्डसे ने हाईकोर्ट में अर्ज़ी दी थी कि उनका मुक़दमा चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में न होकर सेशन जज के यहाँ हो, क्योंकि मैजिस्ट्रेट मराठी नहीं जानता और वह जिस भाषण के लिए मुक़दमा चलाया गया है, उसे न समझ सकेगा। अर्ज़ी ख़ारिज कर दी गई।

—ढाका का ११ ता० का समाचार है कि श्री० जे० सी० गुप्ता की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा ने मि० डुर्नो पर किए गए आक्रमण और अन्य क्रान्तिकारी दल के उपद्रवों की निन्दा का प्रस्ताव पास किया जनता से आग्रह किया गया कि वह अहिंसा के सिद्धान्त पर अटल रहे, क्योंकि उसीसे देश की स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है। दूसरे प्रस्ताव में पुलिस के उन ज़ुल्मों की निन्दा की गई, जो मि० डुर्नो के आक्रमण के बाद किए गए थे। सुभाष बाबू की गिरफ़्तारी के विरोध में भी एक प्रस्ताव पास किया गया।

—कुमिल्ला का समाचार है कि टिपरा ज़िला छात्र-सङ्घ के कार्यकर्ता श्री० हरेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य और अमूल्य-कञ्चन दत्त नए ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बर्मा की पुलिस ने यह ख़बर पाकर कि विद्रोहियों की 'व्याघ्र सेना' का मुखिया बहुत से साथियों के साथ एक मठ में ठहरा है, उस स्थान को घेर लिया। मठ का अधिकारी साधू गिरफ़्तार कर लिया गया और एक अन्य व्यक्ति भागने की चेष्टा करता हुआ गोली से मारा गया।

—भारत सरकार ने सूचना प्रकाशित की है कि जम्मू और उसके आस-पास के स्थानों में अब शान्ति है। ६ ता० को काश्मीर के सिपाहियों और उपद्रवियों में मुठभेड़ होने से जो तीन व्यक्ति घायल हुए थे, उनमें से एक अकस्मात ११ ता० को मर गया। श्रीनगर और अन्य स्थानों में जो दुर्घटनाएँ हुई हैं, उनकी जाँच के लिए रावलपिण्डी के सेशन जज मि० मिडलटन, आई० सी० एस० नियत किए गए हैं।

—अयोध्या के अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन ने कुछ साधुओं को ऋषीकेश भेजा है, जिन्होंने महाराज काश्मीर को आशीर्वाद दिया और परमात्मा से प्रार्थना की कि उनकी कठिनाइयाँ शीघ्र मिट जाएँ तथा वहाँ शान्ति की स्थापना हो। उन्होंने मुसलमानों के एक विशेष दल के नीचतापूर्ण प्रचार-कार्य की निन्दा की है, और महाराज को विश्वास दिलाया है कि वे जत्थों के रोकने में महाराज की सहायता करने को तैयार हैं।

विलियर्स गोली-काण्ड का फ़ैसला

यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़िडेण्ट पर गोली चलाने वाले श्री० विमल कुमारदास गुप्त का मुक़दमा ११ ता० को कलकत्ते में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सम्मुख पेश हुआ। अभियुक्त ने अपना दोष स्वीकार कर लिया और अदालत ने उसे दस वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा दी। अदालत में अभियुक्त के भाई श्री० विजयकुमार दास गुप्त ने उसकी शिनाख़्त की।

—इलाहाबाद ज़िले के किसानों में लगान-सम्बन्धी आन्दोलन जारी है। हाल में श्री० टण्डन जी श्री वेङ्कटेशनारायण तिवारी, श्री० मोहनलाल गौतम और अन्य कार्यकर्ताओं ने फूलपुर, जगतपुर और बरौत की सभाओं में भाषण किए। एक सभा में टण्डन जी ने कहा कि "यदि किसान अपनी शक्ति को समझ लें तो उनकी जीत निश्चित है। वर्तमान सरकार किसानों की और अधिक सहायता करती नहीं जान पड़ती। म० गाँधी और दूसरे नेता राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स से बिलकुल निराश हो चुके हैं। चाहे हम देश में राजनैतिक संग्राम शुरू करें या न करें, पर आर्थिक बातों के लिए हमको सदा लड़ने का अधिकार है।"

—ए० आई० और डी० ई० एसोसिएशन के यू० पी० ब्रान्च ने एक प्रस्ताव पास किया है कि इलाहाबाद के निवासियों की मकानों का भाड़ा घटाने की माँग उचित है। गवर्नमेण्ट को ऐसी चेष्टा करनी चाहिए जिससे मकानों के भाड़े में क़रीब एक तिहाई कमी हो सके।

—मालाबार की मुस्लिम जमायत के प्रेज़ीडेण्ट ने सन्देश भेजा है कि मि० जमाल मुहम्मद ने लन्दन में प्रधान-मन्त्री के पास भेजे गए पत्र पर दस्तख़त करके मुसलमानों के हित के विरुद्ध काम किया है और इसलिए उनको 'केरल प्रान्तीय मुस्लिम मजलिस' के प्रेज़िडेण्ट के पद से इस्तीफ़ा दे देना चाहिए।

—श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय १२ ता० को इलाहाबाद आई और १३ तारीख़ को उन्होंने मुन्शी रामप्रसाद की बग़िया में महिलाओं की एक सभा में भाषण किया।

—श्रीमती एनी बीसेण्ट का स्वास्थ्य आजकल बहुत चिन्ताजनक हालत में है। उन्होंने अपने एक मित्र से कहा है कि उनका इस जन्म का कार्य समाप्त हो चुका और अब वे हिन्दू के घर में नया जन्म लेकर भावी भारत के निर्माण का कार्य करेंगी।

—११ नवम्बर को बनारस के पास सारनाथ में बौद्ध-धर्म वालों के एक 'बिहार' की स्थापना की गई। उसके उद्घाटन के उत्सव में भाग लेने को लङ्का, स्याम, चीन, जापान, तिब्बत, कम्बोडिया और बर्मा आदि दूर-दूर के देशों के बौद्ध आए थे। यह बिहार उसी स्थान पर स्थापित किया गया है, जहाँ राजा अशोक का बनवाया प्राचीन बिहार स्थापित था, और जो ८ सौ वर्ष पहले नष्ट हो गया था।

—पञ्जाब कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़ीडेण्ट लाला दुनीचन्द ने तमाम कॉङ्ग्रेस कमिटियों और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं से अपील की है कि १७ नवम्बर को स्वर्गीय ला० लाजपतराय की मृत्यु-तिथि का उत्सव मनाया जाय।

—सहारनपुर स्टेशन पर मि० डोनाल्ड क्लार्क नामक युवक को मार देने के अभियोग में लेफ़्टिनेण्ट शीहन पर जो अभियोग चलाया गया था, उसमें उनको निर्दोष कह कर छोड़ दिया गया। मैजिस्ट्रेट ने फ़ैसले में लिखा है कि अभियुक्त ने वादी पक्ष के इलज़ाम को पूरी तरह स्वीकार कर लिया है। उसका कहना यही है कि मैं उस समय घबराया हुआ था। यह व्यवहार किसी दोषी व्यक्ति का नहीं हो सकता।

—कुम्भकोनम (मद्रास) के कुछ मुसलमान विदेशी कपड़े के व्यापारियों ने बम्बई की सेण्ट्रल ख़िलाफ़त कमिटी के पास एक अर्ज़ी भेजी है, जिसमें कहा गया है कि स्थानीय नौजवान सभा के वालण्टियरों और कुछ बाहरी वालण्टियरों ने दिवाली के अवसर पर उनकी दुकानों की पिकेटिङ्ग की। पर हिन्दुओं की दुकानों की पिकेटिङ्ग नहीं की गई।

—बम्बई में स्वदेशी कपड़े की थोक बिक्री बड़े ज़ोरों से बढ़ रही है। केवल ६ नवम्बर को ६५ हज़ार गाँठों का ऑर्डर दिया गया। इसके मुक़ाबले में जापानी और विलायती कपड़े की क्रमशः ५५०० और ६८० गाँठों की बिक्री हुई। स्वदेशी कपड़े के व्यापारियों को आशा है कि यदि माँग इसी तरह बनी रही तो थोड़े ही दिनों में उनका स्टाक ख़त्म हो जायगा। पर विदेशी कपड़े के व्यापारी बड़े चिन्तित हैं। राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेन्स की असफलता की ख़बरों से घबड़ा कर उन्होंने विदेशी कपड़े के लिए ऑर्डर भेजना बन्द कर रक्खा है।

—पेशावर की ख़बर है कि सीमा प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य मौलवी रहीमबख़्श ग़ज़नवी को राजद्रोही भाषण देने के अभियोग में तीन साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई।

—जबलपुर का समाचार है कि १० ता० को शाम के पौने छै बजे हिन्दी के प्राचीन सेवक और सुलेखक श्री० गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री का देहान्त हो गया। इधर कई वर्षों से आप अपनी लेखनी द्वारा केवल गो-सेवा कर रहे थे।

—ध्राङ्गध्रा से सत्याग्रहियों के भयङ्कर कष्टों की कहानी सुनने में आई है। व्रजपूर में जो सत्याग्रही क़ैद हैं, उनके साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया जा रहा है। स्त्रियों से अपमानजनक भाषा में बातें की जाती हैं और गाँव वालों को धमकाया जाता है। सत्याग्रहियों के सम्बन्धियों को उनसे भेंट नहीं करने दी जाती। शारदा बहिन नामक सत्याग्रही महिला की माँ और सास को उससे भेंट करने के लिए रियासत में नहीं घुसने दिया गया। ८ ता० को सत्याग्रही बिना भोजन के दिन भर जलती हुई धूप में स्टेशन के बाहर पड़े रहे।

—नासिक के मन्दिर-सत्याग्रह के सम्बन्ध में ८ ता० रविवार को ४० महार गिरफ़्तार किए गए। मन्दिर में घुसने की चेष्टा करते हुए सनातनी हिन्दुओं के साथ उनकी मुठभेड़ भी हो गई। शनिवार को भी अछूतों और सनातनियों का झगड़ा हुआ, जिसके सम्बन्ध में ५ अछूत और ६ सनातनी पकड़े गए हैं।

—१ अक्टूबर, १९२९ से ३१ मार्च, १९३१ तक डेढ़ वर्ष में बम्बई कॉङ्ग्रेस कमिटी ने ३ लाख २४ हज़ार ३४० रु० ख़र्च किया। इसमें ८६,८९९ वालण्टियरों के भोजन में, ५१,६२१ वालण्टियरों के अन्य कामों में, २१,०६३ सफ़र-ख़र्च में व्यय हुआ। प्रकाशन और प्रचार-कार्य में क़रीब ७१ हज़ार रु० ख़र्च किया गया। कुल आमदनी ख़र्च की अपेक्षा १०,०९२ रु० अधिक हुई।

—महाराजा बीकानेर ८ ता० को विलायत से लौट कर बम्बई पहुँच गए। आप विलायत गोलमेज़ परिषद् के लिए गए थे, पर स्वास्थ्य की ख़राबी से आपको समय के पहले ही चला आना पड़ा।

—कानपुर का ९ ता० का समाचार है कि एक नामी कोकीन-फ़रोश के घर की तलाशी लेते समय पुलीस पर लाठियों से हमला किया गया, जिससे सब-इन्स्पेक्टर अतहरअली और दो कॉन्स्टेबिलों को सख़्त चोट आई। इस सम्बन्ध में बाद में हुकुमअली और बुलाई नाम के दो मुसलमान गिरफ़्तार किए गए हैं।

—संयुक्त प्रान्तीय राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स का २६ वाँ अधिवेशन बड़े दिन की छुट्टियों में इटावा में होगा।

—मुज़फ़्फ़रनगर ज़िला राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस नेता श्री० सुन्दरलाल जी की अध्यक्षता में ता० १७ और १८ नवम्बर को होने वाला है।

—कानपुर के अछूतों की एक कॉन्फ़्रेन्स ने, जिसके सभापति लखनऊ के श्री० रामचरण मल्लाह, एम० एल० ए० थे, डॉ० अम्बेडकर में विश्वास का प्रस्ताव पास किया है।

—बम्बई के चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने मेहरबाई मेहरवानजी दिवेचा नामक बुड्ढी औरत को, जिस पर अपनी १७ साल की लड़की से वेश्या-कर्म कराके रुपया कमाने का अभियोग लगाया गया था, एक साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी। दूसरे अभियुक्त आर्देशर सोराबजी वकील को तीन महीने की सज़ा दी गई। दूसरा अभियुक्त लड़की को उसकी माँ की अनुमति से विभिन्न स्थानों में ले जाता था, जहाँ उसके साथ कुकर्म किया जाता था। अब लड़की बच्चों की संस्था में रक्खी गई है।

—लाहौर हाईकोर्ट ने श्री० चमूपति की लिखी 'चाँदनी का चाँद' नामक पुस्तक की ज़ब्ती के विरुद्ध अपील ख़ारिज कर दी।

—बनारस में १३ तारीख़ को एक खेत में पाँच वर्ष की एक मुसलमान लड़की की मृत-देह पाई गई। उसे गला घोंट कर मारा गया है और उसके ज़ेवर भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं।

संयुक्त प्रान्त में ख़र्च की कमी

इलाहाबाद पर नई चोट

संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेण्ट का ख़र्च घटाने के सम्बन्ध में जो रिट्रेञ्चमेण्ट कमिटी नियत की गई थी, उसने प्रस्ताव किया है कि सिविल सेक्रेटेरियट का ऑफ़िस इलाहाबाद से उठा कर लखनऊ ले जाया जाय। उसने कहा है कि एक प्रान्त की तीन राजधानियाँ—अर्थात् इलाहाबाद, लखनऊ और नैनीताल—होना बदइन्तज़ामी की एक ऐसी मिसाल है जिसका उदाहरण संसार में मिल सकना कठिन है। सेक्रेटेरियट के इलाहाबाद में रहने से सरकारी काग़ज़ात दो-तीन बार यहाँ से लखनऊ या नैनीताल आते-जाते हैं, जिसमें ख़र्च बहुत पड़ता है और देर भी बहुत लग जाती है। यद्यपि लखनऊ में अभी सेक्रेटेरियट के लिए कोई सरकारी मकान नहीं है और इसलिए किराए के मकान में ऑफ़िस रखना पड़ेगा, पर उसका ख़र्च उस रक़म से जो आजकल डाकव्यय और टेलीफ़ोन में ख़र्च होती है, कहीं कम होगा।

इसके सिवाय कमिटी ने प्रतापगढ़, बलिया, हमीरपुर, पीलीभीत, मैनपुरी, बाराबङ्की, देहरादून, उन्नाव, उरई और जौनपुर के ज़िलों को तोड़ देने की सम्मति दी है। कितनी ही तहसीलों को भी तोड़ देने का प्रस्ताव किया गया है। कमिटी ने कितने अफ़सर, आबकारी विभाग के असिस्टेण्ट कमिश्नरों, डिवीज़नल कमिश्नरों के पदों को कम करने की सिफ़ारिश की है। इनके द्वारा ख़र्च में एक करोड़ तीन लाख रु० की कमी होने का अनुमान किया गया है।

—कलकत्ते में कॉङ्ग्रेस की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्री० विमल प्रतिभा देवी और अन्य चार युवकों पर जो मोटर डकैती का अभियोग चल रहा था, उसका विचार करने वाली स्पेशल ट्रिब्यूनल ने अभियुक्तों पर डकैती का इलज़ाम लगा दिया है। पाँचों अभियुक्तों ने इससे इन्कार किया है और तीन की तरफ़ से सफ़ाई के गवाह पेश किए जायँगे।

—बनारस में क्राउन सिनेमा वालों ने एक खेल के १२ हिस्से दिखाने का इश्तहार दिया था, पर छः ही हिस्से दिखा कर तमाशा ख़त्म कर दिया। इस पर लोग सिनेमा के सामने इकट्ठे होकर बाक़ी छः हिस्सा दिखलाने पर ज़ोर देने लगे। सूचना पाकर पुलिस आई और लोगों को लाठी मार कर हटाने लगी। इससे कितने ही लोगों को चोट आई है।

—१२ ता० को मद्रास में विक्टर नाम के एँग्लो-इण्डियन ने रसल नाम के दूसरे एँग्लो इण्डियन को मार डाला और उसकी लड़की को सख़्त घायल किया। इसके बाद उसने कुएँ में कूद कर आत्म-हत्या कर ली। विक्टर लड़की से शादी करना चाहता था और इससे इनकार किए जाने पर यह काण्ड हुआ।

—भारत के प्रधान सेनापति हिज़ एक्सीलेन्सी चेस्टवुड नेपाल की यात्रा से वापस आ गए। उनको नेपाल सरकार की तरफ़ से 'स्टार ऑफ़ नेपाल' की सर्वोच्च उपाधि प्रदान की गई है। उनके स्वागतार्थ २ नवम्बर को २० हज़ार नेपाली सेना की परेड भी की गई थी।

—नेपाल के महाराज १३ दिसम्बर को कलकत्ता आकर वायसरॉय से भेंट करने वाले हैं।

—११ ता० की रात को अछल्दा स्टेशन (इटावा) के पास एक पैसेञ्जर गाड़ी और एक मालगाड़ी लड़ गई। दोनों गाड़ियों के ड्राइवरों और फ़ायरमैनों को चोट लगी, पर मुसाफ़िर बच गए।

—लन्दन का १० नवम्बर का समाचार है कि मुसलमान प्रतिनिधि इङ्गलैण्ड के बड़े व्यापारियों से व्यापार सम्बन्धी बातें कर रहे हैं और उसमें उन्हें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई है। अनुमान किया जाता है कि भारत में एक बड़ी कम्पनी स्थापित करने की योजना तैयार की गई है, जो मुसलमानों की सहायता से इङ्गलैण्ड के साथ बहुत बड़े पैमाने पर व्यापार करेगी। अङ्गरेज़ व्यापारी भी हिन्दू व्यापारियों के हाथ से विदेशी कपड़े का व्यापार निकाल लेने की फ़िक्र में हैं। एक कारण यह भी है कि इन्हीं व्यापारियों ने पिछले सत्याग्रह आन्दोलन में कॉङ्ग्रेस की सहायता की थी। कहा जाता है कि आग़ा ख़ाँ ने इस योजना का समर्थन किया है और वे इस कम्पनी में डायरेक्टर होने को राज़ी हैं।

—मन्चूरिया में चीन और जापान का झगड़ा बराबर जारी है। ११ तारीख़ को नौनी नदी के पुल के पास जापानी सेना ने लौटती हुई चीनी सेना पर गोलाबारी की। जापान के चार क्रूज़र जहाज़ झगड़े के बढ़ने के अन्देशे से पोर्ट आर्थर भेजे जा रहे हैं। टोकियो का १२ ता० का समाचार है कि नौनी नदी पर अवस्थित दो हज़ार जापानी सेना पर २० हज़ार चीनी सेना आक्रमण की तैयारी कर रही है। इन घटनाओं के साथ अन्य राष्ट्र इस झगड़े को समझौते द्वारा समाप्त करने की चेष्टा में लगे हुए हैं जिससे शीघ्र ही इसके अन्त हो जाने की सम्भावना प्रकट की जा रही है।

—टीएट्सीन (चीन) का समाचार है कि चीन के भूतपूर्व सम्राट को मारने के लिए किसी ने फूल की एक डाली उनको भेंट भेजी जिसमें एक भयङ्कर बम छुपा था। संयोगवश एक नौकर ने उसे देख लिया और सम्राट बाल-बाल बच गए।

—शङ्घाई का १२ ता० का समाचार है कि चीन के भूतपूर्व सम्राट मन्चूरिया की राजधानी मुकदन में फिर से अपना राज्य स्थापित करने जा रहे हैं। कहा जाता है कि यह षड्यन्त्र जापान ने रचा है और इसी को रोकने के लिए सम्राट की हत्या की चेष्टा की गई थी।

—१२ तारीख़ को नीस (फ़्रान्स) में निज़ाम हैदराबाद के युवराज और टर्की के भूतपूर्व सुलतान की लड़की का विवाह हो गया। विवाह के समय दुलहिन मौजूद न थी, उसकी तरफ़ से अन्य पुरुषों ने स्वीकृति दे दी।

राउण्ड-टेबिल कॉन्फ़्रेन्स

लन्दन का ७ तारीख़ का समाचार है कि महात्मा गाँधी, मालवीय जी, सर सप्रू, शास्त्री जी आदि २७ ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों ने प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड के नाम एक पत्र भेजा है, जिसमें कहा गया है कि वे लोग यह अफ़वाह सुन कर कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारत को केवल 'प्रान्तीय स्वराज्य' देना चाहती है, बड़े चिन्तित हुए हैं। विभिन्न हिस्सों को अधिकार देकर केन्द्रीय शक्ति को अधीनता में रखना ऐसी बात है, जिससे लोगों को स्वभावतः सरकार के इरादे पर सन्देह हो सकता है। यह सच है कि अभी तक अल्प-संख्यक सम्प्रदायों का प्रश्न हल हुआ है, पर इसके कारण भारत को पूर्ण उत्तरदायित्वयुक्त शासन मिलने में बाधा नहीं पड़नी चाहिए।

❀ ❀ ❀

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

गोलमेज़ सभा का स्वाँग तो समाप्त हो रहा है। खोदा पहाड़ और निकला चूहा ! लाखों रुपए इस सभा में स्वाहा हो गए, परन्तु काम धेले का भी न हुआ। हो भी कैसे ? कॉङ्ग्रेस की माँग पूर्ण-स्वाधीनता है और अङ्गरेज़ लोग भारत के सम्बन्ध में स्वाधीनता के शब्द से उतना ही चौंकते हैं, जितना कि बेवक़ूफ़ घोड़ा अपनी छाया से ! सच बात तो यह है कि 'स्वाधीनता' शब्द अङ्गरेज़ जाति के लिए जितना शोभा देता है, उतना किसी के लिए हो ही नहीं सकता। विशेषतः भारत के साथ तो स्वाधीनता कभी जुड़नी ही नहीं चाहिए। क्योंकि इससे अङ्गरेज़ों का बहादुर कलेजा दहलने लगता है। संसार में अपने चोले के अतिरिक्त और किसी की स्वाधीनता अच्छी नहीं होती, यह ब्रिटिश नीति का वाक्य है। भारत, जो इतने दिनों तक ग़ुलाम रहा है, यदि एकदम से स्वाधीन कर दिया जायगा, तो उसकी दशा उस कुत्ते की सी हो जायगी, जो दिन भर बँधे रहने के पश्चात् रात को खोला जाता है। ऐसा कुत्ता चोरों और उठाईगीरों के लिए कितना ख़ूँख़्वार होता है—यह आप जानते ही हैं ! इसका परिणाम यह होगा कि उसका जब मौक़ा लगेगा, अङ्गरेज़ों ही की टाँग धरेगा। अङ्गरेज़ लोग भारत छोड़ कर चले जायँ, यह सम्भव नहीं। ईश्वर ने उनका हृदय ही ऐसा बनाया है। वे तो परोपकार के लिए देश-विदेशों में मारे-मारे फिरते हैं—और कोई अभिप्राय थोड़ा ही है ! देखिए, अफ़्रीका के घनघोर जङ्गलों में आदमख़ोरों को सभ्यता का पाठ पढ़ाते घूमते हैं। जङ्गली लोग सभ्यता का पाठ पढ़ कर सब से पहली जो बात सीखते हैं, वह यह कि अङ्गरेज़ लोग संसार में सब से अधिक सभ्य, परोपकारी, बहादुर, ईमानदार, सच्चे, बलवान् तथा शक्तिशाली हैं। और शेष सब संसार स्वार्थी तथा धूर्त है। यह ज्ञान उदय होते ही सब से पहला काम जो जङ्गली करते हैं, वह यह है कि अपने जानो-माल की रक्षा का भार अङ्गरेज़ों को सौंप देते हैं। अङ्गरेज़ बेचारे केवल परोपकार के ख़याल से यह उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं। हालाँकि यह बहुत बड़ी भारी बुरी बात है कि जो राह बताए वही आगे चले। परन्तु लोग इस बात को नहीं समझते। परिश्रम से बचने के लिए अपना भार दूसरों पर लादने का मौक़ा ताका करते हैं। बेचारे अङ्गरेज़ यद्यपि इस बात से दुखी हैं कि जहाँ वे सभ्यता तथा शिक्षा का प्रचार करते हैं, वहाँ के लोग इन्हें ही अपनी जानो-माल का रक्षक नियुक्त कर देते हैं, परन्तु ईसामसीह की आज्ञा से विवश होकर उन्हें रक्षक बनना ही पड़ता है। ऐसी दशा में यदि वे ही जङ्गली लोग अङ्गरेज़ों से स्वाधीनता माँगने लगें तो अङ्गरेज़ कैसे दे सकते हैं ! जिनमें स्वाधीन बनने की योग्यता नहीं, जिनमें अपने घर का प्रबन्ध स्वयम् करने का माद्दा नहीं, उनको स्वाधीनता देना मानो उन्हें कुएँ में धकेलना है। इसीलिए बेचारे अङ्गरेज़ बहुत सोच समझ कर किसी को स्वाधीनता प्रदान करते हैं। भारत के साथ भी अङ्गरेज़ों ने थोड़ी नेकी नहीं की। अशिक्षित भारत को शिक्षित तथा सभ्य बनाया। हालाँकि कॉङ्ग्रेस का सङ्गठन देख कर अङ्गरेज़ों के साथ-साथ अपने राम को भी इसमें सन्देह उत्पन्न हो गया है कि भारत अभी पूर्णतया सभ्य और शिक्षित हो गया है। कॉङ्ग्रेस जो कार्य कर रही है, वह सभ्यता तथा शिक्षा का द्योतक ज़रा भी नहीं--ऐसा अक़्ल के ठेकेदारों का ख़याल है। शिक्षित और सभ्य केवल मुसलमान भाई कहे जा सकते हैं, जो यह भली-भाँति समझते हैं कि उनपर से अङ्गरेज़ों की छत्रछाया हटते ही अल्लाह मियाँ क़यामत नाज़िल कर देंगे। जब तक उन पर अङ्गरेज़ों का साया सलामत है, तब तक अल्लाह मियाँ के पितामह भी क़यामत नाज़िल करने का साहस नहीं कर सकते। इसे कहते हैं सभ्यता और शिक्षा का दिमाग़ ! क्यों न हो, आख़िर हुकूमती दिमाग़ ठहरा; जो सत्रहवीं शताब्दी तक शासक रहे हों उनके दिमाग़ से हुकूमत की बू कैसे जा सकती है ! यह बात दूसरी है, कि वह बू दिमाग़ की डिबिया में बन्द रहने के कारण बदबू में बदल गई हो, परन्तु है बू ! इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। ऐसी दशा में मुसलमान-भाई यह कभी स्वीकार नहीं कर सकते कि अङ्गरेज़ लोग उनको इतने बड़े मुल्क में अकेला और निस्सहाय छोड़ कर चल दें ! इसलिए मुसलमान भाई यह चाहते हैं कि या तो अङ्गरेज़ सब कुछ हमें सौंप दें या फिर अपने ही क़ब्ज़े में रक्खें। इन दो के अतिरिक्त हिन्दुस्तान जैसे लावारिस माल का और कौन वारिस हो सकता है ? हिन्दुओं के हाथ से तो हिन्दुस्तान को निकले हुए इतने दिन हो चुके कि तमादी हो गई। अब क़ानूनन् भी हिन्दुओं का कोई हक़ नहीं रहा। ऐसी दशा में हिन्दू लोग न जाने स्वराज्य और स्वाधीनता माँगने का दुस्साहस क्यों कर रहे हैं ? पागल हो गए हैं, घास खा गए हैं; क्योंकि पेट भर रोटियाँ नहीं मिलतीं ! इतना होते हुए भी अपने राम अङ्गरेज़ों की उदारता पर उसी प्रकार फ़िदा हैं जैसे कि दीपक पर पतङ्ग। अङ्गरेज़ बेचारे सब कुछ तो देने को तैयार हैं—ख़ाली सेना तथा कोष अपने हाथ में रखना चाहते हैं। सो ठीक भी है, जिसके पास कोष रहेगा उसे उसकी रक्षा के लिए सेना भी रखनी पड़ेगी और जिसे सेना रखनी पड़ेगी उसे सेना के भरण-पोषणार्थ कोष भी रखना पड़ेगा—सीधा सा हिसाब है, सीधी सी बात है। परन्तु इतनी मोटी बात भी हिन्दुओं की खोपड़ी-शरीफ़ा में नहीं समाती। अपने राम तो यह समझते हैं कि सेना को जहाँ तक दूर ही रक्खें, अच्छा है। सेना को पास रखना ख़तरनाक है। और आजकल जब कि चारों ओर डाके, चोरी इत्यादि होते रहते हैं। कोष भी अपने पास रखना जोखिम से ख़ाली नहीं। ये दोनों झगड़े की जड़ हैं और झगड़े से जहाँ तक दूर रहे, अच्छा है। हिन्दुस्तानी लोग फ़ौज रक्खेंगे तो नित्य लड़ाई होगी। फ़ौज कुछ बैठो तो खायगी नहीं, कुछ न कुछ काम तो उनसे लिया ही जायगा। और न कुछ होगा तो आपस ही में लड़ेगी। जिसकी लड़ने की आदत है, वह हर जगह और हर हालत में लड़ेगा। वह कभी चूक नहीं सकता। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तानियों को नई-नई फ़ौज मिलेगी तो ज़रा फ़ौज से काम लेने का शौक़ भी रहेगा। जिस प्रकार नया मुसलमान प्याज़ बहुत खाता है, उसी प्रकार फ़ौज के नए स्वामी आरम्भ में ख़ूब लड़ेंगे। बात-बात में पिस्तौल और बन्दूक़ें चलेंगी। ज़रा किसी नगर में कोई गड़बड़ हुई, बस गोली चल गई। जिनके अधिकार में ये फ़ौजें रहेंगी, उनके अफ़सरों का क्या कहना। यदि अफ़सर लोग आपस में कभी लड़े तो बस ग़ज़ब ही हो जायगा। वे लोग ज़बानी जमा-ख़र्च तो रक्खेंगे ही नहीं—झट अपनी-अपनी फ़ौज लेकर डट जायँगे कि "आओ निबट लो।" यह भी हो सकता है कि यही फ़ौज वाले लूट-पाट करने लगें, डाके डालने लगें—आख़िर फ़ौज ही ठहरी, उसे रोक कौन सकेगा ? इन्हीं सब खटकों के कारण अङ्गरेज़ फ़ौजें हिन्दुस्तानियों के अधिकार में नहीं देना चाहते। रहे अङ्गरेज़, सो एक तो वे फ़ौजों का प्रबन्ध करना जानते हैं। अङ्गरेज़ को चाहे जितनी बड़ी फ़ौज दे दीजिए, परन्तु वे आपस में कभी नहीं लड़ेंगे। जब मौक़ा होगा, दूसरों पर ही गोलियाँ बरसाएँगे। आपस में जब लड़ेंगे, तो घूसों से ! दूसरे फ़ौज का बेकार पड़े रह कर रोटियाँ तोड़ना उन्हें ज़रा भी न अखरेगा—क्योंकि अपनी जेब से उन्हें धेला भी न देना पड़ेगा। यदि कोई दूसरा ख़र्च उठाने को तैयार हो, तो अङ्गरेज़ लोग हिन्दुस्तान में प्रति मनुष्य के लिए एक सिपाही रखने को तैयार हो सकते हैं; परन्तु इतना ख़र्च उठाने वाला है कौन ? बेचारे थोड़ी सी फ़ौज रक्खे हुए हैं, उसी पर लोग हाय-तोबा मचा रहे हैं कि हिन्दुस्तान की फ़ौजें लूटे खा रही हैं। यह अन्धेर देखिए। लूटे खा रही हैं तो रक्षा भी तो वही करती हैं, वरना जनाब, अभी बोलशेविक आकर गर्दन नापने लगें। हालाँकि किसकी गर्दन नापें, हिन्दुस्तानियों की या अङ्गरेज़ों की ? इसका ठीक-ठीक निश्चय नहीं है, परन्तु फिर भी फ़ौजें रखना आवश्यक है। तीसरे कोई अङ्गरेज़ हिन्दुस्तानी की मातहती में नहीं रहना चाहता। रहे भी कैसे ? मालिक कहीं नौकर की मातहती में रह सकता है ? कोई भूला-भटका रह भी गया तो हिन्दुस्तानी अफ़सर उससे सारा बदला चुकाने का प्रयत्न करेगा। आख़िर अङ्गरेज़ बेवकूफ़ तो हैं नहीं, अपने भले-बुरे कार्य जानते हैं। उन्होंने अपने मातहत हिन्दुस्तानियों के साथ जो व्यवहार किए हैं, उससे अच्छे व्यवहार की प्रत्याशा वह कैसे रख सकते हैं ! मान लीजिए, अफ़सर ने किसी अङ्गरेज़ से अङ्गरेज़ों पर गोली चलाने के लिए कहा, तो वह ऐसा कभी न करेगा। यह फ़ौजी नियम तो केवल हिन्दुस्तानियों पर लागू है कि अङ्गरेज़ अफ़सर कहे तो हिन्दुस्तानियों को अपने बाप पर भी गोली चलानी पड़ेगी। यदि वह नहीं चलाता तो हुक्म-उदूली के अपराध में कोर्टमार्शल का शिकार बनता है। अङ्गरेज़ पर यह नियम लागू न हो सकेगा। इसलिए अङ्गरेज़ हिन्दुस्तानी अफ़सर की मातहती नहीं करना माँगता। अपने पापों से सब डरते हैं। इन सब बातों को सोच-समझ कर सम्पादक जी, अपने राम की भी यही राय है कि अङ्गरेज़ लोग फ़ौज तथा कोष अपने ही हाथ में रक्खें—इसी में उनका कल्याण है।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

भारतीय युवकों की पतित दशा का दिग्दर्शन

ग्राम-सुधार के बिना भारत के स्वराज्य की आशा नहीं

"उस जाति को धिक्कार है जो दासत्व में पड़ी माताओं के गर्भ से जन्म लेती है"

"अगर तुम बोलते हो तो उन करोड़ों व्यक्तियों के साथ बोलो, जिनकी कोई आवाज़ ही नहीं है ; उनके साथ जो अन्याय के तले दबे हुए हैं ; उनके साथ जो निरन्तर बीमारी और भूख के कारण समय से पहले ही बूढ़े हो गए हैं ; उन स्त्रियों के साथ, जो परिश्रम से क्लान्त हो चुकी हैं और अपने शिशुओं के सूखे ओठों के लिए दूधरहित स्तन देती हैं, क्योंकि सेवा से बढ़ कर दूसरा कोई धर्म नहीं है और मनुष्यत्व से बढ़ कर कोई पवित्र वस्तु नहीं है।"

उपरोक्त सन्देश श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने लाहौर में होने वाली पञ्जाब विद्यार्थी-परिषद् के अध्यक्ष-पद से सुनाया है। आगे चल कर उन्होंने कहा—

"आजकल भारत की विद्यार्थी-परिषदों की दशा बड़ी करुणाजनक है ! क्योंकि प्रायः उनमें जीवनी शक्ति और वास्तविकता का सर्वथा अभाव होता है।

"स्वाभाविक तौर पर विद्यार्थी-संसार साहसपूर्ण कृत्यों का स्थल है। पर भारत की दशा स्वाभाविक से बहुत विपरीत है। यहाँ पर विद्यार्थी की स्वाभाविक बुद्धि उसे एक रास्ता दिखलाती है और विदेशी भावपूर्ण शिक्षा दूसरा। इन दोनों की टक्कर में ग़रीब विद्यार्थी चूर-चूर हो जाता है। भारत में जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित है, वह इस देश की मिट्टी और हवा के अनुकूल नहीं है। यह एक ऐसा ढाँचा है, जो हमारी नाप का नहीं है, और चूँकि उसको हमने अपने गले में डाल लिया है, इसलिए वह धीरे-धीरे हमें दम घोट कर मार रहा है। इस प्रकार इस देश की शिक्षा आनन्द का ज़रिया होने की अपेक्षा घोर कष्टों का कारण बन रही है। यहाँ पर शिक्षक और विद्यार्थियों में मित्रता के बजाय दुश्मनी का भाव पाया जाता है। फल यह होता है कि शिक्षा-प्रचार द्वारा जहाँ शक्ति, साहस, चैतन्यता और बुद्धिमत्तायुक्त मनुष्य-समाज की उत्पत्ति होनी चाहिए थी वहाँ उसके बिल्कुल विपरीत देखने में आता है।

इङ्गलैण्ड की शिक्षा-प्रणाली

सच पूछा जाय तो इस समय संसार के कुछ भागों में शिक्षा शक्तिहीन दशा में है और कुछ भागों में उसने ऐसी बीमारी का रूप धारण कर रक्खा है, जिससे दुनिया को घोर हानि पहुँच रही है। उदाहरण के लिए इङ्गलैण्ड में सार्वजनिक स्कूलों का उद्देश्य ऐसे व्यक्ति तैयार करना है, जो देश और विदेशों में शासन कर सकें। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए इन चुने हुए लोगों के सद्भावों का पूर्णतः नाश कर दिया जाता है। उनकी स्वाभाविक बुद्धि का इसलिए बलिदान कर दिया जाता है कि वे अङ्गरेज़ जाति के संसार के रक्षक होने में सन्देह न करें। सहानुभूति का बलिदान इसलिए किया जाता है कि अन्य जातियों पर हुकूमत करने में किसी तरह का ख़लल न पड़े। दया का भाव इसलिए निकाल फेंका जाता है कि उनके रोब-दाब में किसी तरह की कमी न पड़ जाय। विवेक-बुद्धि इसलिए दबा दी जाती है, ताकि 'क़ानून और शान्ति' का मज़बूती के साथ पालन किया जाय।

मृत्यु का मुख

हमारे देश की वर्तमान शिक्षा-संस्थाएँ प्राचीन युग के उन अज़दहों की भाँति हैं, जो मुँह खोले पड़े रहते थे और जो कोई भी उस मुँह में जा पड़ता था उसे पेट में हज़म कर लेते थे। इन संस्थाओं में हमारे विद्यार्थी जीवन्मृत दशा में रहते हैं और भविष्य के लिए भी उनको किसी तरह की आशा नहीं होती। इन संस्थाओं से आज तक जो क्रियात्मक फल प्राप्त हुआ है वह नाममात्र का है। कहने के लिए हम टैगोर, बोस और रमन का नाम ले सकते हैं। पर भारत की विशालता और साधनों को देखते हुए यहाँ पर इस तरह के लाखों व्यक्ति पाए जाने चाहिए थे।

दुर्दशा का कारण

हमारे देश में बुद्धिमत्ता की कैसी कमी है, हमारे आदर्श कैसे छोटे हैं ? पर इसमें आश्चर्य ही क्या है ? आप ज़रा आँखें खोलें, चारों तरफ़ दरिद्रता और अन्याय-अत्याचार ही दिखलाई देंगे। सब जगह भूख की कराल ज्वाला जीभ लपलपाती नज़र आती है, और हमारे जीवन-स्रोत के बचे-खुचे रस को भी सोखती जाती है।

वर्तमान युग आत्म-निर्भरता, साहस और श्रद्धा का है। प्रत्येक देश में विद्यार्थी ही हर एक उन्नतिशील आन्दोलन के अगुआ बने हैं। भारतीय विद्यार्थियों का भी कर्तव्य है कि साधारण जनता में आन्दोलन, प्रचारक और सङ्गठनकर्ता हो जाँ। उनको चाहिए कि राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करें और जनता को इसकी शिक्षा दें। उनको चाहिए कि सर्वसाधारण को उनकी लज्जाजनक स्थिति का ज्ञान कराएँ और उनके भीतर शक्ति का भाव जागृत करें। उनको प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा बतलाना चाहिए कि उनके जीवन की कैसी दशा हो रही है, और यदि वे अपने चरित्र-बल से काम लें तो उसमें कहाँ तक परिवर्तन हो सकता है।

ग्राम-सङ्गठन

अगर भारत को सचमुच स्वाधीन बनना है, तो उसे अपने सात लाख गाँवों का उद्धार करना चाहिए, जोकि ऐसी नाशक प्रथा के फन्दे में फँसे हैं, जो उनका ख़ून चूसे जा रही है। प्रत्येक किसान के हिस्से में दो एकड़ ज़मीन आती है और इसी के द्वारा उसे चार-पाँच प्राणियों का पेट भरना होता है। इतना भी सबको नहीं मिलता, क़रीब छः करोड़ लोगों को प्रायः भूखों मरना पड़ता है। इसके सिवाय सात करोड़ आदमी ऐसे हैं, जिनको ज़मीन के न होने से बेकार रहना पड़ता है। उनके लिए शीघ्र ही कोई ऐसा कार्य ढूँढ़ना चाहिए जिसमें वे लग सकें। पर रुपए की कमी, विदेशों की प्रतियोगिता तथा अन्य कारणों से यहाँ के व्यवसाय स्थायी नहीं होने पाते।

आबादी का प्रश्न

आबादी के दिन पर दिन बेहद बढ़ते जाने पर भी हमको ध्यान देना चाहिए। हमारे देशवासियों को यह अन्धविश्वास त्याग देना चाहिए कि अधिक सन्तान होना परमात्मा का आशीर्वाद है। उनको समझना चाहिए कि कमज़ोर आदमी ही बहुत अधिक सन्तान पैदा करना चाहता है। ग़रीब आदमी अमीरों की अपेक्षा अधिक बच्चों की ख़्वाहिश करते हैं। जैसे-जैसे मनुष्य सभ्य होता जाता है, वह सन्तान-वृद्धि के परिमाण को कम करता जाता है। यही कारण है कि भारत में करोड़ों आदमी संक्रामक बीमारियों के शिकार बनते रहते हैं। इनफ़्लूएन्ज़ा ने केवल नौ महीनों में १ करोड़ ३० लाख प्राणियों का सफ़ाया कर दिया था और पिछले दस सालों में ३० लाख व्यक्ति हैज़े की भेंट हो चुके हैं। ये संख्याएँ हमको आँख खोल कर बतलाती हैं कि भूख, अस्वास्थ्यकर रहन-सहन और शिक्षा की कमी से हमारी जीवनी शक्ति बहुत अधिक घट गई है।

स्वदेशी

इससे हमारा ध्यान स्वदेशी के प्रश्न की तरफ़ जाता है, जोकि दरिद्रता मिटाने का सर्वप्रधान शक्तिशाली साधन है। आधुनिक इतिहास से हमको पता चलता है कि प्रायः सभी पश्चिमी देशों में मनुष्यों का जीवन-काल दुगुना हो गया है और संसार की सम्पत्ति पिछले १५० सालों में दस गुनी बढ़ गई है। पर भारत का क़िस्सा ही निराला है, और यहाँ की दरिद्रता दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है। इन बातों पर ध्यान देने के पश्चात् स्वदेशी की आवश्यकता पर अधिक समझाना निरर्थक जान पड़ता है। भारत ने विदेशी वस्त्रों का जो बॉयकाट किया था, उसकी बहुत निन्दा की गई थी कि यह आत्म-हत्या और संसार से पृथक हो जाने के तुल्य है। पर आज प्रत्येक देश विदेशी माल पर कर लगा कर अपने उद्योग धन्धों की रक्षा का प्रयत्न करता नज़र आता है। धनकुबेर अमेरिका तक ने अपने चारों तरफ़ 'टेरिफ़' की अभेद्य दीवाल खड़ी कर ली है। सत्रहवीं शताब्दी में, जब कि भारत का कपड़ा इङ्गलैण्ड में जाता था, और वहाँ वालों को जान पड़ा कि इससे उनके व्यवसाय को हानि पहुँचती है, तो वहाँ बड़ी हाय-तोबा मचाई गई और इस बात का साधन ढूँढ़ा जाने लगा कि बजाय भारत का माल इङ्गलैण्ड जाने के इङ्गलैण्ड का बना माल भारत में भेजा जाय। इस प्रकार भारत निरुपाय होकर केवल खेती-बाड़ी पर अवलम्बित हो गया।

विद्यार्थियों की कार्य-प्रणाली

आजकल भारत में केवल यूनीवर्सिटियों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या दस हज़ार के क़रीब है, जो अमेरिका को छोड़ कर अन्य सब देशों की अपेक्षा अधिक है। अगर यह महान शक्ति देश की खोज और उन्नति करने में लगा दी जाय, तो इससे अत्यन्त आश्चर्यजनक फल निकल सकता है। इसके लिए सङ्गठित रूप में छोटे-छोटे दल बना कर काम करने की आवश्यकता है। यह ख़याल करना ठीक नहीं कि विद्यार्थी होने से पाँच साल तक तुम्हारी सब ज़िम्मेदारी मिट जाती है। रूस के पञ्च-वर्षीय आयोजन में प्रत्येक बच्चे से देश का काम कराया जा रहा है। बच्चों के दल बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य करके दिखला रहे हैं। उन्होंने पानी और हवा की चक्कियाँ बनाई हैं, बिजली के यन्त्र लगा कर मज़दूरों की बस्तियों में रोशनी का प्रबन्ध किया है। वे लोग खोज करने के लिए अज्ञात स्थानों की यात्रा करते हैं और इससे करोड़ों रुपए की सामग्री का पता लग रहा है। उन्होंने बिना किसी से ज़रा भी सहायता लिए मास्को में एक सड़क तैयार की है और उसके दोनों तरफ़ सेब के पेड़ लगाए हैं। वे लोग बग़ीचे लगा रहे हैं। सबका उद्देश्य यही है कि अपनी मामूली ज़िम्मेदारी को पूरा कर दो, फिर बड़ा भारी काम ख़ुद हो जायगा।

पर्दे की भयङ्करता

मैं अपने भाषण को, सामाजिक बुराइयों की तरफ़ आपका ध्यान आकर्षित किए बिना ख़त्म नहीं कर सकती। इनमें सबसे कलङ्कपूर्ण प्रथा पर्दे का रिवाज है। आज चार करोड़ से अधिक स्त्रियाँ ऐसी हैं, जो

(शेष मैटर ६ठे पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

इंगलैण्ड के व्यवसाय की क्रमशः अधोगति

अङ्गरेज़ भारत की स्वराज्य की माँग का विरोध दरअसल क्यों करते हैं ?

वर्तमान समय में भारत की आर्थिक दशा ही नहीं, राजनीतिक दशा भी बहुत निराशापूर्ण है। पहले लोग राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स से बड़ी-बड़ी आशाएँ बाँध रहे थे, पर अब उनका बहुत कम अंश बाक़ी है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि अगर मज़दूर-सरकार अपने पद पर बनी रहती, तो भारत को स्वराज्य के कुछ अधिक अधिकार मिल सकते थे। पर यह विचार निस्सार है। उस दशा में अगर कोई लाभ होता तो इतना ही कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के भाषण कुछ नर्म होते। इङ्गलैण्ड की कोई भी सरकार—चाहे वह मज़दूर हो, चाहे मिली-जुली हो और चाहे कञ्ज़रवेटिव हो—भारत की स्वराज्य की माँग को सहज में स्वीकार नहीं कर सकती।

उपरोक्त अवस्था के सम्बन्ध में जो कारण प्रोफ़ेसर ब्रजनारायण ने अपने एक लेख में बतलाए हैं, वे यहाँ दिए जाते हैं :—

इङ्गलैण्ड ने भारत में बहुत सा रुपया व्यापार में लगा रक्खा है और भारत अङ्गरेज़ी माल का एक महत्वपूर्ण बाज़ार है। इङ्गलैण्ड न तो अपनी रक़म को खोना चाहता है, न अपने बाज़ार को। पिछले वर्षों में अङ्गरेज़ी माल की रफ़्तनी में गहरा घाटा पड़ने से इस समय भारतीय बाज़ार की आवश्यकता इङ्गलैण्ड के कारख़ाने वालों को पहले से कहीं अधिक है।

इङ्गलैण्ड की सम्पत्ति और वैभव का आधार कुछ ख़ास कारीगरियों पर है। चूँकि इङ्गलैण्ड में ख़रीदारों की संख्या बहुत कम है, इसलिए वहाँ के कारख़ाने वालों को लाचार होकर अपने माल के लिए दूसरे देशों में बाज़ार ढूँढ़ने पड़ते हैं। वहाँ पर जो चीज़ें तैयार होती हैं, उनमें कुछ का आधे से कुछ कम, कुछ का आधे से अधिक और कुछ का पौन भाग विदेशों को भेजना पड़ता है। उदाहरणार्थ रूई के कपड़ों का ७५ प्रति सैकड़ा, लोहे और स्टील के माल का ४० से ५० प्रति सैकड़ा, ऊनी माल का ४५ से ४८ प्रति सैकड़ा, जूट का ४० सैकड़ा भाग बाहर भेजा जाता है। इङ्गलैण्ड का कोयला भी बहुत बड़े परिमाण में बाहर भेजा जाता है।

सन् १९२९ में इङ्गलैण्ड से ७३ करोड़ पौण्ड का माल बाहर भेजा गया, जब कि सन् १९१३ में ५२ करोड़ ५० लाख का भेजा गया था। पर जब चीज़ों की बढ़ी हुई क़ीमत का हिसाब लगाया जाता है तो मालूम होता है कि सन् १९२९ में सन् १९१३ की अपेक्षा ८ प्रति सैकड़ा माल कम भेजा गया था। सन् १९१३ से सन् १९२७ तक इङ्गलैण्ड की रफ़्तनी में औसत से २१ प्रति सैकड़े की कमी पड़ी, जब कि संसार के अन्य देशों की रफ़्तनी १८ प्रति सैकड़ा अधिक बढ़ गई और अमेरिका की ५१ प्रति सैकड़ा बढ़ी।

रफ़्तनी की कमी के कारण

पहला कारण तो यह था कि सन् १९१८-१९ में जो 'गोल्ड स्टैण्डर्ड' की आर्थिक नीति ग्रहण की गई, वह ग़लत थी। इस नीति का सहारा इज़्ज़त और शान की रक्षा के ख़्याल से लिया गया था। पौण्ड का मुक़ाबला डालर से किया गया, पर इङ्गलैण्ड की ख़ुरदा बिक्री की क़ीमत और लागत तथा विनिमय की दर में मेल न रह सका। अनुभव से मालूम हुआ कि इस नीति के कारण विनिमय की ख़ातिर व्यवसाय का गला घोंट दिया गया। पौण्ड की रक्षा के लिए व्यवसाय को हानि उठानी पड़ी। अब इतने दिनों बाद इङ्गलैण्ड ने अपनी इस भूल का सुधार किया है।

रफ़्तनी के घटने का दूसरा कारण अङ्गरेज़ी माल बनाने वालों के ढङ्ग का पुराना पड़ जाना है। इस सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड के व्यवसाय की दशा वैसी ही है, जैसे किसी जङ्गल में पुराने जीर्ण दरख़्त नए पौधों के साथ खड़े हों। व्यवसाय की कुछ शाखाओं में युद्ध के बाद से बहुत-कुछ उन्नति की गई है, पर कितने ही व्यवसायों में अभी ऐसी मैशीनों से काम लिया जा रहा है, जिनका उचित स्थान प्राचीन वस्तुओं का कोई अजायबघर ही हो सकता है।

तीसरा कारण यह कि अन्य कितने ही देशों की अपेक्षा इङ्गलैण्ड में मज़दूरों का वेतन अधिक है। यह बात नीचे लिखे नक़्शे से साबित हो सकती है :—

इङ्गलैण्ड	...	...	१००
अमेरिका	...	...	१७५
कनाडा	...	...	१५०-१५५
डेनमार्क	...	...	१०५-११०
हॉलैण्ड	...	...	८५-९०
जर्मनी	...	...	६५-७०
फ़्रान्स	...	...	५५-६०
बेलजियम	...	...	५०-५५
इटली, ऑस्ट्रिया, पोलैण्ड			४५-५०

अमेरिका में मज़दूरी यद्यपि ७५ सैकड़ा अधिक है, पर वहाँ माल एक ही जगह इतने अधिक परिमाण में तैयार किया जाता है कि वह उसे इङ्गलैण्ड की अपेक्षा सस्ते दामों में बेच सकता है।

अन्तिम कारण यह है कि इङ्गलैण्ड ने संसार की माँग में परिवर्तन होने पर बहुत कम ध्यान रक्खा है। जब कि पुराने तरीक़े से पुराने ढङ्ग की चीज़ें बनाने में लगा हुआ अमेरिका मोटरें, सिनेमा की फ़िल्म, बिजली का सामान, रेडियो के यन्त्र, खिलौने और हिसाब की मैशीनें, खेती की मैशीनें आदि बनाने में बहुत अधिक बढ़ गया, और वे सब चीज़ें दुनिया के लिए अधिक आवश्यक सिद्ध हुईं।

एक समय ऐसा था, जब कि संसार में केवल इङ्गलैण्ड ही कारख़ानों में माल बनाने का स्थान था। उसके एकाधिपत्य को सबसे पहले जर्मनी ने तोड़ा। जर्मनी के व्यवसाय की उन्नति और बाद में संसार के अन्य देशों के व्यवसाय-क्षेत्र में बढ़ने से इङ्गलैण्ड की रफ़्तनी दिन पर दिन घटने लगी। इस सम्बन्ध में नीचे दिया हुआ नक़्शा बड़ा महत्वपूर्ण है। इससे मालूम होता है कि अब से तीस-चालीस साल पहले किस देश के कुल आयात में कितना प्रति सैकड़ा अङ्गरेज़ी माल जाता था और सन् १९१३ में कितना जाता था :—

			प्रति सै०	प्रति सैकड़ा सन् १९१३ में
रूस	...	१८८६-९०	२३·८	१२·८
फ़िनलैण्ड	...	१८८६-९०	१४·०	१२·२
डेनमार्क	...	१८७६-८०	२३·७	१५·३
स्वीडेन	...	१८७१-७५	३२·९	२४·४
नॉर्वे	...	१८७६-८०	२६·९	२४·८
हॉलैण्ड	...	१८८१-८५	२६·२	८·७
बेलजियम	...	१८७६-८०	१४·७	१०·५
स्पेन	...	१८९७	२१·५	१७·३
पोर्तुगाल	...	१८८६-९०	३२·०	२९·०
इटली	...	१८७८-८०	२१·२	१६·३
ऑस्ट्रिया-हङ्गरी		१८९१-९५	१०·३	६·४
बालकान	...	१८८६-९०	२४·५	१४·९
रूमेनियाँ		१८८६-९०	२६·८	९·५
बलगेरिया		१८८६-९०	२८·६	९·८
द० अमेरिका		१९०१-५	३१·०	२८·०
अमेरिका		१९०१-५	१५·०	१२·०
केनाडा		१८६८-७०	५६·१	२०·७
ऑस्ट्रेलिया		१८८७-९०	७१·४	५९·७

इससे भी अधिक ध्यान देने योग्य वह नक़्शा है, जिससे मालूम होता है कि भारत में आने वाले माल का परिमाण किस तरह घटता गया और उसके विरोधियों के माल का परिमाण बढ़ता गया :—

		१८७१-७६	१९१३-१४	१९३०-३१
इङ्गलैण्ड	...	७७·९	६४·२	३७·२
जर्मनी	...	०·१	६·९	७·५
अमेरिका	...	०·३	२·६	९·२
जापान	...	०·०	२·६	८·८

इन संख्याओं से पाठक समझ सकते हैं कि इङ्गलैण्ड भारत को ख़ुशी से स्वराज्य क्यों नहीं दे सकता। जब तक उसके हाथ में यहाँ के शासन की बागडोर है, तब तक तो उसे आशा है कि वह ज़ोर ज़बर्दस्ती या चालाकी से अपने माल को यहाँ खपाता रहेगा। पर यदि भारत को स्वराज्य दे दिया जाय और वह भी संसार के अन्य देशों की भाँति बाहर से आने वाले माल पर भारी कर लगा कर अपने उद्योग-धन्धों की तरक़्क़ी करने लगे तो इङ्गलैण्ड का कहीं ठिकाना न रहेगा। इसलिए या तो भारत को इम्पीरियल प्रीफ़रेन्स की नीति स्वीकार करनी पड़ेगी, या फिर 'ग़ैर रज़ामन्द' हाथों से स्वराज्य लेना पड़ेगा।

❀ ❀ ❀

(पाँचवें पृष्ठ का शेषांश)

सूर्य की धूप और ताज़ी हवा से वञ्चित हैं, ज्ञान के आनन्द का जिनको पता नहीं, और जिनको पिंजड़े में बन्द करके शारीरिक और मानसिक दृष्टि से हीन बनाया जा रहा है। यहाँ पर भय स्त्रियों का गुण समझा जाता है। इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता कि जिन स्त्रियों में से मनुष्यत्व के गुणों का इस तरह उच्छेद कर दिया जाता है, वे मनुष्यों के पाशविकता के भाव की वृद्धि करने वाली होती हैं और अपने बच्चों की स्वाभाविक ज्ञान-वृत्तियों को भी बर्बाद कर देती हैं। निर्भय बच्चों की एक पीढ़ी संसार की कायापलट कर सकती है। स्वाधीनता ही चरित्र की कसौटी है। यह मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, और स्त्रियों के लिए इससे इन्कार करके मनुष्य एक बड़ा पाप और स्त्रियों का घोर अपमान करते हैं।

विद्रोह की पुकार

इस भयङ्कर कुप्रथा से जो शोचनीय परिणाम निकलते हैं, उनका वर्णन कर सकना भी कठिन है। इसके कारण स्त्रियाँ प्रायः भयङ्कर रोगों में फँस जाती हैं जिससे उनका जीवन ही नष्ट हो जाता है। नवयुवक स्त्री और पुरुष, दोनों को ही इस घृणित रिवाज के विरुद्ध विद्रोह करना चाहिए। गुलामी का अन्त धीरे-धीरे सुधार होने से नहीं हो सकता, वरन् इसको एकदम जड़मूल से काटने से ही काम चल सकता है। तभी हम स्वाधीनता के दर्शन कर सकते हैं—उस सच्ची स्वाधीनता के, जो नवीन आशाओं और नवीन प्रकाश को जन्म देती है। उस जाति को धिक्कार है, जो दासत्व में पड़ी हुई माताओं के गर्भ से जन्म लेती है। तुम मर्द और औरत, कब तक इस अन्याय, इस ज़ुल्म, इस कुकृत्य को सहन करते रहोगे? जब कि करोड़ों महिलाएँ इन खेद और लज्जाजनक ज़ञ्जीरों में बँधी हुई हैं तो हम किस बल पर स्वाधीन भारत का स्वप्न देख सकते हैं ?

❀ ❀

बंगाल में भयंकर दमन-लीला की तैयारी

सरकार शीघ्र ही दमन का सब से अधिक शक्तिशाली उपाय काम में लाने वाली है

यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़िडेण्ट की कॉङ्ग्रेस को धमकी

शनिवार ता० ७ नवम्बर को कानकिनारा (बङ्गाल) की यूरोपियन एसोसिएशन की अध्यक्षता में मि० विलियर्स का भाषण वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर हुआ। आरम्भ में आपने उन बधाइयों का उत्तर दिया, जो आपको घातक की गोली से बचने के उपलक्ष में दी गई थीं। फिर अपने उस कार्य का संक्षेप में वर्णन किया, जो आपने इङ्गलैण्ड में किया है। इसके पश्चात् आपने कहा—

"मैं उन लोगों में से एक हूँ, जो अभी तक यह विश्वास करते हैं कि लॉर्ड इर्विन की नीति बिल्कुल ठीक थी। यह कहते हुए मैं उन भयङ्कर कठिनाइयों को नहीं भूला हूँ, जो उस नीति के फल-स्वरूप उत्पन्न हुई हैं, न उस बड़ी क़ीमत को मैंने अपने ख़्याल से हटाया है, जो उस नीति के बदले में देनी पड़ रही है। पर मैं आपको दो ऐसे कारण बतलाऊँगा, जिससे प्रकट होगा कि मैं लॉर्ड इर्विन की नीति में क्यों विश्वास रखता हूँ। पहला तो यह कि कितने ही मानने लायक़ कारणों से दुहरा शासन (डायर्की) भारत में असफल रहा और भारतवासियों ने उसमें बहुत कम सहयोग किया। इसलिए यह आवश्यक जान पड़ा कि मित्रता और विश्वास के भाव का अधिक से अधिक परिचय दिया जाय, जिससे भारत को उसी प्रकार उसका प्रत्युत्तर देने का अवसर मिले और वह अपने भले के लिए इङ्गलैण्ड के साथ पूर्ण रूप से सहयोग कर सके।

"दूसरा कारण, जो मुझे इङ्गलैण्ड की यात्रा के फल-स्वरूप मालूम हुआ है—यह है कि अगर हमने कोई अन्य नीति अख़्तियार की होती और अब से १८ महीने पहले सख़्त उपायों से काम लिया होता, जिनके लिए बार-बार पर्याप्त उचित कारण मौजूद थे, तो भारत की नीति के सम्बन्ध में इङ्गलैण्ड में मतभेद हो जाता। इस सम्बन्ध में मि० लॉयड जॉर्ज ने मुझसे खुले शब्दों में कहा कि हम अपने घर में मतभेद रखते हुए, भारत की समस्या का उसी प्रकार मुक़ाबला नहीं कर सकते, जिस प्रकार ऐसी परिस्थिति में महायुद्ध में शामिल हो सकना हमारे लिए असम्भव होता। पर अब इङ्गलैण्ड इस विषय में एकमत हो गया है।

बहुत बड़ी क़ीमत

"इस एकता को प्राप्त करने के लिए लॉर्ड इर्विन ने एक बहुत बड़ी क़ीमत दे डाली। यह साम्राज्य के लिए सौभाग्य का विषय था कि इस अवसर पर एक ऐसा महान व्यक्ति मिल सका, जिसने उस क़ीमत के देने का साहस किया। इस प्रकार एक बार फिर भारत का भाग्य उसके ही हाथों में आ गया। आजकल इङ्गलैण्ड में कन्ज़रवेटिव भाव का जैसा साम्राज्य है, उसे देखते हुए उसके सम्बन्ध की नीति बहुत ही सहज में बदली जा सकती है, क्योंकि भारत अब भी इस प्रकार के परिवर्तन के मौक़े बार-बार दे रहा है। पर मैं समझता हूँ कि इससे बढ़ कर हानिकारक बात दूसरी नहीं होगी। भारत के भावी शासन-विधान के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव किए गए हैं, वे सब शर्तों के साथ हैं और इसलिए मुझे उनसे हटने का कोई कारण नहीं जान पड़ता। अगर हम अपनी नीति पर क़ायम रहें, तो भारत फिर कभी हमारी सचाई के विषय में सन्देह नहीं कर सकेगा, क्योंकि मैं फिर यह कह सकता हूँ कि इस समय भारत बार-बार ऐसे कारण उत्पन्न कर रहा है, जिनसे राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स में पहले दिन घोषित की गई नीति को बहुत सहज में बदला जा सकता है।

"हम चाहे अपनी नीति पर कैसी भी मज़बूती से क़ायम रहें, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता कि गवर्नमेण्ट क़ानून और अमन की रक्षा करने के कर्तव्य से बरी हो सके। इस सम्बन्ध में मैं आपसे सावधानीपूर्वक आतङ्कवाद और सविनय क़ानून-भङ्ग के भेद पर ध्यान देने को कहता हूँ। इसमें से पहला, अर्थात् आतङ्कवाद को—यद्यपि इसका महत्व राजनीतिक दृष्टि से सविनय क़ानून-भङ्ग की अपेक्षा दशमांश भी नहीं है—अवश्य ही कुचल डालना आवश्यक है, और मैं यह जानकारी के साथ कह सकता हूँ कि बङ्गाल की सरकार इसे कुचलने के लिए सब से शक्तिशाली उपाय की घोषणा करने ही वाली है। पर जैसा कि हम सब जानते हैं, आतङ्कवादियों और कॉङ्ग्रेस के गर्म दल वालों में निश्चय रूप से सम्बन्ध है। इसलिए आतङ्कवाद सरकार का सच्चा विरोधी नहीं है। सच्चा विरोधी सविनय क़ानून-भङ्ग है, जो फिर से आरम्भ हो सकता है। इसलिए यदि इस देश में सविनय क़ानून-भङ्ग को फिर से जारी किया जाय, तो इसे बिना विलम्ब निर्दयतापूर्वक कुचल डालना आवश्यक है। पिछले वर्ष सरकार ने इस नीति पर अमल नहीं किया था, और जैसा मैं ऊपर बतला चुका हूँ, ऐसा कर सकना बड़ा कठिन था, पर लॉर्ड इर्विन की नीति का औचित्य इसी में है कि भविष्य में ऐसी ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाइयों का पूरी तरह मुक़ाबला किया जाय।

दमन की आवश्यकता

"अगर गवर्नमेण्ट मुस्तैद और मज़बूत है, और मुझे हर तरह से विश्वास है कि वह ऐसी ही है, तो उसे दिखला देना चाहिए कि पिछले ज़माने में उसने जो अपने हाथ को रोके रक्खा था, वह उसने दब कर नहीं, वरन् अपनी मर्ज़ी से किया था और उसका कारण उसकी कमज़ोरी नहीं; वरन् ताक़त थी। अगर सरकार ऐसा करेगी तो मुझे विश्वास है कि इस देश के करोड़ों व्यक्ति उसके झण्डे के नीचे इकट्ठे हो जाएँगे। ये लोग पिछले ज़माने में गुमराह बनाए गए थे और इससे अधिक कुछ नहीं चाहते कि उनको अपनी रोटी कमाने का मौक़ा मिले तथा वे बादशाह सलामत के वफ़ादार बने रहें। अगर सविनय क़ानून-भङ्ग सचमुच ही आरम्भ हो, तो स्वराज्य के सम्बन्ध में जितने शासन-सुधार किए गए हैं, वे सब तब तक के लिए वापस ले लेने चाहिए जब तक कि देश में क़ानून और अमन फिर से क़ायम न हो जाय। और इस उद्देश्य को सिद्ध करने का उपाय, बिना सङ्कोच के जल्दी से जल्दी अमल करना और निर्दय शक्ति से काम लेना ही है।"

डॉक्टर अन्सारी—नहीं यह रङ्ग अच्छा, मैं अभी बदरङ्ग करता हूँ, निडर होकर तुम्हारी पार्टी से जङ्ग करता हूँ !
बड़के भय्या (साथियों को लक्ष्य कर)—कभी डरेंगे न ऐसों की गर्म-जोशी से, हमें तो काम है बस एक वतन-फ़रोशी से !!

रेलवे नौकरों पर चारों तरफ़ से हमला

५० हज़ार बरख़ास्त और एक लाख से ज़्यादा के समय में कमी !

'अगर तनख़्वाह घटाई गई तो बच्चों को पूरा भोजन और शिक्षा भी न मिल सकेगी'

रेलवे रिट्रेञ्चमेण्ट सब-कमिटी की रिपोर्ट पर रेल-कर्मचारियों की फ़ेडरेशन ने रेलवे-बोर्ड के सम्मुख नीचे लिखा वक्तव्य पेश किया है :—

फ़ेडरेशन प्रकट करना चाहती है कि सरकारी नौकरों में रेलवे कर्मचारी ही ऐसे हैं, जिनके वेतनों में एक साथ कई तरफ़ से कमी की गई है। पेश्तर इसके कि विभिन्न रेलवे रिट्रेञ्चमेण्ट कमिटियों ने अपना काम शुरू किया, रेलवे अधिकारियों ने ४०,५०२ कर्मचारियों को बरख़ास्त कर दिया, ९,००० की तनख़्वाह घटा दी और १,२०,००० को थोड़े समय तक काम करने की आज्ञा दी। अब रेलवे-बोर्ड ने फिर ७,९०० कर्मचारियों को बरख़ास्त करने और थोड़े समय काम करने वालों के समय का परिमाण और भी घटाने की घोषणा की है। मानो इतनी कमी यथेष्ट नहीं थी, रेलवे रिट्रेञ्चमेण्ट कमिटी ने अपनी रिपोर्ट के १८४ वें पैरा में कर्मचारियों के वेतनों में २½ से लेकर २० प्रति सैकड़ा तक घटाने की सलाह दी है। जहाँ तक इस कमी का सम्बन्ध १००) या अधिक प्रतिमास पाने वालों से है, हम इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हैं। क्योंकि पिछले जून मास में फ़ेडरेशन ने स्वयं रेलवे-बोर्ड के सम्मुख यह प्रस्ताव किया था। हम अभी अपनी उस राय पर क़ायम हैं।

इनकम-टैक्स में वृद्धि

यह भूल नहीं जाना चाहिए कि कर्मचारियों की मामूली तनख़्वाह में इन कमियों के सिवाय सप्लीमेण्टरी फ़ायनेन्स-बिल के कारण और भी प्रभाव पड़ने की आशङ्का है। उसके अनुसार एक हज़ार से लेकर दो हज़ार तक की आमदनी वालों को इनकम-टैक्स लगाया गया है, बाहर से आने वाले माल पर आयात-कर और नमक का महसूल बढ़ाया गया है, और डाक के महसूल को भी बढ़ा दिया गया है। इस सब के ऊपर विनिमय की दर को बदल देने के कारण रुपए की क़ीमत १५ प्रति सैकड़ा घट गई है।

कमी १००) से ऊपर हो

१००) और उससे कम पाने वालों के वेतन में कमी किए जाने के प्रस्ताव के विरोध में हम पूर्ण शक्ति से अनुरोध करते हैं कि रेलवे-बोर्ड किसी हालत में उसे स्वीकार न करे। इसके कारण छोटे नौकरों की तनख़्वाह में, जिससे उनके कुटुम्बों का काम अब भी बड़ी मुश्किल से चलता है, और भी कमी हो जायगी। इसका अर्थ होगा कि उनके बच्चों को पूरा खाना भी न मिल सकेगा और अधिकांश हालतों में बच्चों की शिक्षा सर्वथा रुक जायगी। पिछली बात इस तमाम मामले में सब से अधिक खेदजनक है। फ़ेडरेशन की सम्मति में यह बात देश के बालकों के विरुद्ध, मनुष्य-जाति के विरुद्ध और सभ्यता की वृद्धि के विरुद्ध पाप-स्वरूप है।

फ़ेडरेशन को सब-कमिटी के नं० १८२ और १८३ पैराओं पर बहुत अधिक आपत्ति है, जिनमें दी गई दलीलों का सम्पूर्ण आशय यह है कि कम वेतन पाने वाले कर्मचारी केवल भोजन पाने के अधिकारी हैं, जब कि ऊँची तनख़्वाह वाले भोजन के साथ ही जीवन के अन्य समस्त सुखों के भी अधिकारी हैं। हमें कहना पड़ता है कि हमने आज तक कभी ऐसा खेदजनक और लज्जापूर्ण प्रस्ताव नहीं सुना कि ऊँचे पदों के कर्मचारी के जीवन-निर्वाह का स्टैण्डर्ड ज्यों का त्यों क़ायम रखना चाहिए। छोटे कर्मचारियों के बच्चों के नाम पर, और समस्त समाज की उन्नति के नाम फ़ेडरेशन इस कसौटी का विरोध करती है। उसकी सम्मति में इस प्रकार का सिद्धान्त मनुष्यत्व के विपरीत है।

रिट्रेञ्चमेण्ट की सीमा

फ़ेडरेशन अन्त में यह बतलाना चाहती है, सब-कमिटी के रिपोर्ट के नं० २० पैरा से बहुत ग़लतफ़हमी पैदा होने की सम्भावना है। उसके मतानुसार छः करोड़ रुपए की आवश्यकता तो रेलवे के ख़र्च पूरा पड़ने के लिए है और १३ या १४ करोड़ की आवश्यकता इसलिए है कि रेलवे में जितना मूलधन लगा है, उस पर ५½ सैकड़ा सूद मिल सके। हमारा कहना है कि रिट्रेञ्चमेण्ट केवल उतनी ही रक़म के लिए किया जाय, जो कि रेलवे का ख़र्च पूरा करने के लिए आवश्यक है, न कि ब्याज की रक़म के ख़याल से। इसमें भी यह ध्यान रखना चाहिए कि ऊँची तनख़्वाह वालों से ही त्याग कराया जाय और १००) कम पाने वालों को बरी रक्खा जाय।

"किसी विदेशी जाति को भारत पर शासन करने का अधिकार नहीं"

साम्प्रदायिक झगड़े मचाने वाले किराए के टट्टू हैं।

इङ्गलैण्ड की 'फ़्रेण्ड्स ऑफ़ इण्डिया' नामक संस्था ने अङ्गरेज़ी जनता को भारत की दशा का परिचय कराने के लिए विभिन्न स्थानों में सार्वजनिक सभाओं का प्रबन्ध किया है। ऐसी एक सभा में, जो ९ नवम्बर को विक्टरी हॉल में हुई थी, भाषण करते हुए श्रीमती सरोजिनी नायडू ने कहा :—

"इङ्गलैण्ड का यह सवाल करना मुनासिब नहीं कि भारत के सीमा प्रान्त और दूसरी हदों की कौन रक्षा करेगा ! उसे इस बात पर शर्मिन्दा होना चाहिए कि उसी ने हिन्दुस्तान को ऐसा नामर्द बनाया है। अब वह समय आ पहुँचा है जब कि भारत ने निश्चय कर लिया है कि वह अब से आगे इङ्गलैण्ड के आदेश के आगे सर न झुकाएगा। मैं स्वभावतः अन्तर्राष्ट्रीयता की मानने वाली हूँ, और यदि मेरे देश ने किसी दूसरे देश को इस तरह लूटा होता तो मैं उसके ख़िलाफ़ लड़ने से भी बाज़ न आती। मैं अपने देश की बर्बादी देख सकती हूँ, पर उसे ऐसी पाशविकता करते नहीं देख सकती कि वह दूसरे देशों को नपुंसक बना दे। पर जिन अङ्गरेज़ों ने भारत के ऊपर शासन किया है, उनका यही आदर्श रहा है—"मेरा देश जो ग़लत या सही करे, ठीक है।"

"भारत में जो साम्प्रदायिक झगड़े चल रहे हैं, वे हमारे घर में समझने की बातें हैं। मैं इङ्गलैण्ड को उनमें हस्तक्षेप करने की आज्ञा हर्गिज़ नहीं दे सकती। जो लोग उनमें हस्तक्षेप करते हैं, वे गुप्त सहायता के आधार पर ऐसा करते हैं। उनको मदद करने को कुछ किराए के टट्टू भी मिल जाते हैं, जो अपनी मूर्खता के कारण ऐसा नीच कृत्य करते हैं। मैं यह इलज़ाम जान-बूझ कर और ख़ूब सोच-समझ कर लगा रही हूँ, और इसकी सचाई साबित करने को पूरी तरह से तैयार हूँ।

"जब तक भारतवासी महात्मा गाँधी का अनुसरण करते हैं, तब तक वे शान्तिमय बने रहेंगे। पर इस शान्ति का अर्थ कायरता नहीं है। भारतवासी न साहसहीन हैं और न भयभीत हैं। वे लोग अपना ख़ून बहाने को तैयार हैं। उनके हृदयों में स्वाधीनता की जो आग जल रही है, वे उसे ठण्डा करने को तैयार थे। साथ ही क्रान्ति की मशाल भी वहाँ जल रही है। अब इङ्गलैण्ड को अधिकार है कि वह दोनों में से जिसको चाहे चुन ले।

"इङ्गलैण्ड भारत को अब पाशविक शक्ति द्वारा अपना बाज़ार बना कर नहीं रख सकता। भारत उसके साथ किसी तरह का व्यापारिक सम्बन्ध नहीं रक्खेगा। महात्मा गाँधी भारत को उपद्रवों और ख़ून-ख़राबी से अलग रख कर एक बार और इङ्गलैण्ड को अवसर दे रहे हैं।"

एक प्रश्नकर्ता ने पूछा कि क्या हमने भारत को बड़ा नहीं बनाया है? श्रीमती सरोजिनी ने कहा—"हाँ, भारत की समस्त सम्पत्ति हरण करके, उनके गाँवों को लूट कर और भारतीय सिपाहियों की सहायता से युद्धों में विजय पाकर। भारत के बिना इङ्गलैण्ड तीसरे दर्जे की ताक़त होता और संसार की निगाहों में वह किसी गिनती में न होता।"

अन्त में आपने कहा—"मैं विद्रोही हूँ, मेरे हृदय का एक-एक बूँद विद्रोही है और मैं भारत पर किसी विदेशी जाति का शासन सहन नहीं कर सकती।"

—डॉ० अम्बेडकर ने नासिक के मन्दिर-सत्याग्रहियों के पास सहानुभूति का तार भेजा है, जिसमें कहा गया है कि हमको अपना अधिकार न सरकार से माँगना है न पुरानी चाल के हिन्दुओं से, वरन् स्वयम् अपनी ताक़त से ही लेना है।

—अफ़ग़ानिस्तान में डाक और तार-विभाग की तेज़ी के साथ वृद्धि की जा रही है। बादशाह नादिरशाह ने क़ाबुल में इन विभागों की शिक्षा के लिए एक स्कूल खोलने की योजना तैयार की है, जिसकी पढ़ाई एक वर्ष में समाप्त होगी।

—बहुत वर्ष पहले 'ईजिप्ट' नाम का जहाज़, जिस पर बहुत सा सोना था, समुद्र में डूब गया था। कई वर्षों से उसका सोना निकालने को चेष्टा हो रही थी। अब पेरिस से ख़बर आई है कि गोताख़ोर उस जहाज़ के ख़ज़ाने के कमरे को तोड़ने में सफल हुए हैं और अब सोने का बाहर लाना आरम्भ हो गया है।

साइप्रस के स्वाधीनता-संग्राम की कहानी

राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों की स्वाधीनता की माँग के प्रति इङ्गलैण्ड का सूखा उत्तर !

साइप्रस टापू में क्रान्ति की आग जिस प्रकार अचानक लग गई और उसने दो-चार दिन में ही जैसा भयङ्कर रूप धारण कर लिया, उससे संसार भर का ध्यान उसकी तरफ़ आकृष्ट हो गया है। एक छोटे से टापू का ऐसा साहस लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। हम नीचे एक गुजराती पत्र 'प्रजामित्र' और 'केसरी' से इस घटना का कुछ पूर्व वृत्तान्त नीचे देते हैं, जिससे पाठकों को विदित होगा कि इङ्गलैण्ड के साम्राज्य-वादी अपने हित की रक्षा में कैसे कट्टर हैं और किस प्रकार वे एक छोटे से टापू को भी, उसके न्यायोचित अधिकार देने के लिए राज़ी नहीं होते।

"एशिया, यूरोप और अफ़्रीका से घिरे हुए भूमध्य-सागर में कितने ही ऐसे स्थान हैं जो सैकड़ों वर्षों से ग़ुलामी की ज़ञ्जीरों में बँधे हैं। साइप्रस भी इन्हीं में से एक है और क़रीब पचास वर्ष से उसके ऊपर अङ्गरेज़ों का यूनियन जैक फहराता है। इस साइप्रस ने क़रीब तीन सप्ताह से ग़ुलामी के इक़रारनामे को फाड़ कर समुद्र में फेंक दिया है और अङ्गरेज़ों की असीम शक्ति की परवाह न करके 'स्वाधीन साइप्रस' की घोषणा कर दी है। यद्यपि इस समय उसे अङ्गरेज़ी लड़ाई के जहाज़ों, बम बरसाने वाले हवाई जहाज़ों और स्थल-सेना की तोपों ने घेर रक्खा है, पर उसने अपने स्वाधीनता के झण्डे को नीचे नहीं झुकाया है।

"साइप्रस टापू भूमध्यसागर के अन्य टापुओं की अपेक्षा बड़ा है। उसका क्षेत्रफल ३,५८४ वर्गमील है और उसमें २ लाख ७५ हज़ार मनुष्य निवास करते हैं। सन् १८७८ के रूस-टर्की संग्राम के पश्चात् से इस टापू पर अङ्गरेज़ों का अधिकार है। यह टापू एशिया माइनर से साठ मील और सीरिया से चालीस मील दक्षिण दिशा में है और इससे अङ्गरेज़ी साम्राज्य को कितनी ही तरह के लाभ पहुँचते हैं। टापू की कुल आबादी का अस्सी प्रति सैकड़ा भाग ग्रीक लोगों का है और ये ही अपनी मातृभूमि ग्रीस (यूनान) से मिलने के लिए अङ्गरेज़ों के प्रति विद्रोही हुए हैं। इस समय यद्यपि साइप्रस को अन्य उपनिवेशों के बराबर स्वतन्त्रता है, पर वहाँ के ग्रीक लोग अङ्गरेज़ी शासन से बिल्कुल अलग होकर यूनान के साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं।

सदियों की ग़ुलामी

"साइप्रस सैकड़ों वर्षों से सत्ता के भूखे साम्राज्यों की तृष्णा का शिकार बना हुआ है। छठी शताब्दी में मिश्र (ईजिप्ट) ने उस पर अधिकार किया। उसके बाद ईरान, रोम और टर्की के शासकों ने क्रमशः उसे अपनी अधीनता में रक्खा। टर्की का उस पर अधिकार १६वीं सदी में क़ायम हुआ और तीन सौ वर्ष तक वह उसका स्वामी बना रहा, और उसके पश्चात् सन् १८७८ में स्टीफ़ेन की सन्धि के अनुसार उसने शासन-प्रबन्ध के लिए उसे इङ्गलैण्ड के सुपुर्द कर दिया। टर्की ने रूस से आर्मीनिया का प्रदेश लेकर, एशियाई टर्की की रक्षा के सम्बन्ध में अङ्गरेज़ों की सहायता चाही। अङ्गरेज़ों ने ज़रूरत पड़ने पर सेना द्वारा टर्की के एशियाई प्रदेशों की रक्षा का वचन दिया और इसके बदले में टर्की ने भूमध्यसागर का साइप्रस टापू अङ्गरेज़ों के हवाले कर दिया। यही उन्नीसवीं शताब्दी तक का साइप्रस का इतिहास है। बीसवीं सदी के आरम्भ में ग्रीस के शासकों ने साइप्रस को अपने अधिकार में लेने की चेष्टा की। पर अङ्गरेज़ों की कूटनीति के सामने उसका वश न चल सका। पर वहाँ के ग्रीक निवासियों ने आन्दोलन जारी रक्खा और सन् १९२५ में इङ्गलैण्ड को उसे औपनिवेशिक अधिकार देने पड़े। उसी समय से उपनिवेश के गवर्नर की सहायता के लिए तीन सरकारी और तीन ग़ैर-सरकारी मेम्बरों की एक कार्यकारिणी कौन्सिल क़ायम की गई और उसके बाद इस कौन्सिल ने व्यवस्थापक सभा का निर्माण किया। साइप्रस में थोड़े से मुसलमान भी रहते हैं और व्यवस्थापक सभा में इनके प्रतिनिधियों को भी स्थान दिया गया। पर इस व्यवस्थापक सभा के नियम और अधिकार इतने सङ्कुचित और पराधीनतापूर्ण थे कि उससे साइप्रस की किसी तरह की उन्नति होने की आशा न थी। इसलिए सन् १९२८ में ग्रीस के शासकों की सहायता से साइप्रस के ग्रीक युवकों ने इङ्गलैण्ड की ग़ुलामी को नष्ट करने का बीड़ा उठा लिया।

व्यवस्थापक सभा का तमाशा

ग्रीक युवकों के नेता ज़ीनोनरो ने बहुत प्रयत्न करके व्यवस्थापक सभा में एक ऐसा प्रतिनिधि भेजा, जो साइप्रस की पूर्ण स्वाधीनता का समर्थन करे। सन् १९२६ के व्यवस्थापक सभा के चुनाव में ज़ीनोनरो और उसके साथियों ने खुल्लमखुल्ला साइप्रस की स्वाधीनता का दावा पेश किया और एक ही वर्ष के भीतर साइप्रस के हज़ारों व्यक्तियों ने दस्तख़त करके एक आवेदन-पत्र इङ्गलैण्ड के औपनिवेशिक मन्त्री के सम्मुख पेश किया। इस आवेदन-पत्र में साइप्रस के लिए पूर्ण स्वाधीनता का अधिकार माँगा गया था। इस आवेदन-पत्र की माँग की ओर भी पुष्टि करने के लिए ज़ीनोनरो की अध्यक्षता में एक डेपुटेशन जुलाई सन् १९२६ में लन्दन गया। इस डेपुटेशन ने भी इङ्गलैण्ड के शासकों के सम्मुख यही स्वाधीनता का दावा पेश किया। जब इङ्गलैण्ड के अधिकारियों को इस बात का विश्वास हो गया कि साइप्रस के नवयुवक सचमुच स्वाधीनता के लिए प्रयत्न कर रहे हैं और ग्रीस की सरकार उनकी भीतरी सहायक बनी है, तो इस आन्दोलन को कुचलने के लिए तैयार हो गए।

रोटी के बदले पत्थर

साइप्रस की जनता की माँग के उत्तर में ब्रिटेन के मन्त्रिमण्डल ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"साइप्रस को ब्रिटेन से अलग नहीं किया जा सकता। इतना ही नहीं, वरन् यह भी मालूम होता है कि साइप्रस अभी उत्तरदायी शासन के योग्य भी नहीं हुआ है।" इङ्गलैण्ड के इस कटु उत्तर को सुन कर साइप्रस के प्रतिनिधि ज़ीनोनरो ने उसी समय जवाब दिया—"इङ्गलैण्ड के इस निर्णय को सुन कर साइप्रस की जनता हताश नहीं हो सकती, वरन् वह अन्तिम स्वाधीनता-संग्राम के लिए आतुर हो जायगी।" इन शब्दों के अनुसार सन् १९३० से ही साइप्रस वालों ने स्वाधीनता के लिए प्राणपण से निश्चय करके आन्दोलन शुरू किया।

ग्रीक युवकों की जागृति

ग्रीक जाति की एक विशेषता है, जो इस कहावत से प्रकट होती है कि "ग्रीक जो माँगते हैं, उसे प्राप्त करके ही मानते हैं।" इस कारण साइप्रस की जनता की, जिसमें अधिकांश भाग ग्रीक लोगों का है, स्वाधीनता की भावना को कुचल सकना बड़ा कठिन काम है। साइप्रस की स्वाधीनता की भावना को नष्ट करने के साथ ही इङ्गलैण्ड ने साइप्रस की आर्थिक लूट भी जारी रक्खी है। प्रतिवर्ष साइप्रस के ख़ज़ाने में से ९२,००० पौण्ड की रक़म इङ्गलैण्ड को भेंट की जाती है। इसके सिवाय सन् १९१४ में ब्रिटेन ने एकदम बीस लाख पौण्ड की रक़म साइप्रस के ख़ज़ाने से ले ली थी। इस प्रकार जिस देश की कुल आय ७१ लाख पौण्ड है, उसमें से इतनी रक़म प्रतिवर्ष इङ्गलैण्ड के ख़ज़ाने में चली जाने के बाद, उसकी औद्योगिक उन्नति की क्या आशा की जा सकती है।

ब्रिटेन की अभिलाषा

ब्रिटिश सत्ता का पञ्जा साइप्रस पर सदा क़ायम रहे, यही इस समय ब्रिटेन की अभिलाषा है। ब्रिटेन की जल-सेना के सुभीते के लिए, ब्रिटेन के व्यापार और उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए, ब्रिटेन के निवासियों को बड़ी तनख़्वाह की नौकरियाँ मिलने के लिए और आवश्यकता पड़ने पर सेना की सहायता प्राप्त करने के लिए ब्रिटेन के साम्राज्यवादियों ने साइप्रस को ग़ुलामी की ज़ञ्जीरों में बाँध रखने का निश्चय कर रक्खा है। साइप्रस के निवासी अब ब्रिटेन की इस शोषण-नीति को घड़ी भर के लिए सहन करने को तैयार नहीं हैं, और जब तक ब्रिटेन उस टापू पर से अपना अधिकार सदा के लिए न हटा ले, तब तक उन्होंने क्रान्ति का झण्डा ऊँचा रखने का निश्चय किया है। ग्रीक युवकों का नेतृत्व ग्रीक पादरियों ने ग्रहण किया है और वे ब्रिटेन के विरुद्ध साइप्रस-वासियों में विद्रोह की आग फैला रहे हैं।

यही साइप्रस के विद्रोह का संक्षिप्त इतिहास है। इसके पश्चात २० अक्टूबर से, जब से साइप्रस में सशस्त्र ग़दर आरम्भ हुआ है और वहाँ के गवर्नर का महल आग लगा कर फूँक दिया गया है, जो घटनाएँ हुई हैं, वे दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में यथासमय प्रकट होती ही रही हैं। अब यद्यपि ब्रिटिश सेना ने अपनी ताक़त के ज़ोर से वहाँ के क्रान्तिकारियों को ज़बर्दस्ती दबा दिया है, और अनुमानतः वे जल्दी सर न उठा सकेंगे। इतना ही नहीं, इङ्गलैण्ड की सरकार ने घोषणा की है कि साइप्रस वालों की इस नालायक़ी के बदले वहाँ के शासन-विधान पर फिर से विचार किया जायगा। सम्भव है कि उसे जो औपनिवेशिक स्वराज्य के अधिकार मिले हैं, वे छीन लिए जायँ। पर प्रश्न यह है कि क्या इन उपायों से साइप्रस की ग्रीक जनता के हृदयों में लगी हुई स्वाधीनता की अग्नि बुझ सकेगी अथवा वह भीतर ही भीतर सुलगती रह कर फिर किसी समय दूने वेग से भड़केगी? हमारा अनुमान है कि यह देखते हुए कि इङ्गलैण्ड जैसे सामरिक शक्ति में प्रधान देश से शस्त्र-प्रतियोगिता में पार पा सकना छोटे से साइप्रस के लिए ही नहीं, वरन् उसके सहायक ग्रीस के लिए भी सर्वथा असम्भव है, साइप्रस के आन्दोलनकारी अब निष्क्रिय प्रतिरोध और बॉयकाट का सहारा लेंगे। भारत का उदाहरण उनके सामने मौजूद ही है, और महात्मा गाँधी की लन्दन-यात्रा के फल से इस सिद्धान्त का सन्देश इस समय संसार के कोने-कोने में स्पष्ट रूप में पहुँच रहा है। इसलिए आश्चर्य नहीं, यदि अब साइप्रस वाले भी इसी मार्ग का अनुसरण करें।

❀ ❀ ❀

खद्दर और चर्खे का एक नया उपासक

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता समस्त पूर्वीय देशों के लिए उदाहरण-स्वरूप होगी।

ईजिप्ट (मिश्र) से प्रकाशित होनेवाले 'अलबलग़' नामक पत्र ने भारत और ईजिप्ट के राष्ट्रीय आन्दोलन तथा इन दोनों आन्दोलनों के नेता महात्मा गाँधी और ज़ग़लुल पाशा की तुलना करते हुए एक लेख प्रकाशित किया है, जिसका आशय इस प्रकार है :—

"महात्मा गाँधी एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका किसी देश में होकर एक बार निकल जाना ही वहाँ के निवासियों को हिला देने के लिए काफ़ी है, क्योंकि उन्होंने भारत के ३५ करोड़ निवासियों को, जिनके जाग्रत होने की कुछ भी सम्भावना न थी, उठा कर राष्ट्रीय झण्डे के नीचे खड़ा किया है। यदि विचार किया जाय तो एक आदमी कुछ गिनती के आदमियों का ही नेतृत्व कर सकता है। पर पैंतीस करोड़ व्यक्तियों को अग्रसर कर सकना कोई मज़ाक़ की बात नहीं है। यह ऐसा काम है, जिसे कोई असाधारण योग्यता वाला व्यक्ति ही करके दिखला सकता है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि महात्मा गाँधी ने जो काम किया है वह वर्तमान युग का एक चमत्कार समझा जाता है और किसी भी पूर्वीय अथवा पश्चिमी देश में उनका नाम उच्चारण करने से ही आदर और सम्मान का भाव उत्पन्न हो जाता है।

"म० गाँधी और भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का ज़िक्र बिना स्वर्गीय सम्राट ज़ग़लुल पाशा और ईजिप्ट के राष्ट्रीय आन्दोलन का ज़िक्र किए नहीं हो सकता। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ईजिप्ट का आन्दोलन भारत के आन्दोलन से कुछ वर्ष पहले आरम्भ हुआ था और जो कुछ ईजिप्ट ने सन् १९१९ और उसके बाद के वर्षों में किया, उससे भारतीय राष्ट्रवादियों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध और स्वाधीनता का दावा पेश करने का उत्साह मिला। केवल कुछ वर्ष पहले ही जब भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हुआ, वहाँ के नवयुवक ईजिप्ट और उसके आन्दोलन को उदाहरण-स्वरूप समझ कर उसका ज़िक्र किया करते थे। इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि अभी हाल में जब सायमन कमीशन भारत गया, तो वहाँ के नवयुवक कहते थे कि उसका उसी तरह बॉयकाट किया जाना चाहिए, जैसा ईजिप्ट में मिलनर कमीशन का किया गया था। भारत में ईजिप्ट का आन्दोलन उदाहरण-स्वरूप समझा जाता था। यह एक ऐसी बात है, जिसे स्वयं भारतवासी स्वीकार करते हैं।

ईजिप्ट ने क्या किया ?

"अङ्गरेज़ लोग ईजिप्ट के आन्दोलन से इतना नहीं डरते थे, जितना इससे कि उसका असर भारत पर भी पड़ेगा। पाठकों को यह बात अच्छी तरह याद होगा कि उस ज़माने में विलायती अख़बार इस विषय में बड़ी चिन्ता प्रकट किया करते थे कि ईजिप्ट का उदाहरण भारत में मज़बूती के साथ जड़ पकड़ लेगा और दूसरे पूर्वीय देश भी उसकी नक़ल करने लगेंगे। ईजिप्ट वालों ने अपने आन्दोलन में कितने ही विरोध-प्रदर्शक उपायों से काम लिया था। तमाम सरकारी नौकरों ने तीन दिन तक हड़ताल रक्खी थी। मज़दूरों और मेहतरों तक ने हड़ताल की थी। यह हथियार बड़ा तीक्ष्ण था। यह ऐसा तीक्ष्ण था कि ईजिप्ट के शासक लॉर्ड एलेनबी को विलायत के वैदेशिक विभाग के सामने इस सम्बन्ध में अपना दुखड़ा रोना पड़ा था, ईजिप्ट वालों की तरह भारतवासियों ने भी इस उपाय का अवलम्बन किया। वे लोग सरकारी कर्मचारियों के सामने इस्तीफ़ा देने के लिए चिल्लाए और इसके फल से सैकड़ों कर्मचारियों ने इस्तीफ़ा दे दिया। इन इस्तीफ़ों से भारत के अङ्गरेज़ी राज्य की जड़ हिल गई या नहीं, यह हम नहीं कह सकते। पर इतना हम जानते हैं कि इस चोट को अङ्गरेज़ी शासन ने सह लिया और वह सही-सलामत बच गया।

ज़ग़लुल पाशा की मृत्यु के पश्चात् अङ्गरेज़ों की चालों का ईजिप्ट पर प्रभाव पड़ने लगा और उन्हें कुछ ऐसे ईजिप्ट-निवासी मिल गए, जो अपने देश के विरुद्ध उनकी सहायता करने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि आज सन् १९३१ में हम देख रहे हैं कि ईजिप्ट के आन्दोलन की गर्मी बहुत-कुछ जाती रही है और सन् १९२१ में बहुत-कुछ जद्दोजहद के बाद हमें जो हक़ मिले थे वे भी जाते रहे हैं। इस प्रकार जब हम पीछे की तरफ़ हट रहे हैं और जब कि अङ्गरेज़ों की चालें हमको मार रही हैं, तब भारतीय आन्दोलन आगे क़दम बढ़ाता जाता है। महात्मा गाँधी के प्रताप से उसे एक शक्तिशाली विरोध-प्रदर्शक उपाय मिल गया है। इस उपाय पर हमारा भी ध्यान है; पर हम उसे काम में नहीं ला सके। इस उपाय के अनुसार अङ्गरेज़ी माल के बजाय अपने घर का बना माल इस्तेमाल करना चाहिए। गाँधी जी अपना चर्ख़ा लेकर सामने आए और जनता से अपना अनुकरण करने को कहा। जनता ने उनके कथन को स्वीकार किया और इसके फल से इङ्गलैण्ड के व्यापार-व्यवसाय को बड़ी हानि पहुँची और वहाँ के कारख़ाने वाले गाँधी जी और उनके अनुयायियों से समझौता करने की पुकार मचाने लगे। हम लोग भी सन् १९२२ में कुछ इसी तरह का काम करना चाहते थे। पर जैसे ही इस सम्बन्ध में एक योजना निश्चित की गई, कैरो के ब्रिटिश शासक डर गए और उन्होंने उस योजना पर दस्तख़त करने वाले तमाम लोगों को गिरफ़्तार कर लिया। जब कुछ दिन बीत गए तो ब्रिटिश शासकों को विश्वास हो गया कि उनका भय उचित न था और अङ्गरेज़ी माल के बॉयकाट का ईजिप्ट पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ सकता।

"पिछले वर्ष भी ईजिप्ट के उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देने के नाम पर हमने फिर एक बार अङ्गरेज़ी माल के बॉयकाट की चेष्टा की। पर हम लोगों ने बातें ज़्यादा की तथा काम कम किया। अङ्गरेज़ लोग भी जानते थे कि हम इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकते और इसलिए उन्होंने इस विषय में किसी तरह की चिन्ता न की।

भारत का उदाहरण

"यह एक ऐसी बात है, जिसमें भारत का आन्दोलन ईजिप्ट के आन्दोलन से बाज़ी मार ले गया है। अब भारत ईजिप्ट के उदाहरण का अनुकरण नहीं कर रहा है, वरन् वह ख़ुद ही एक ऐसा उदाहरण बन गया है, जिसका अनुकरण ईजिप्ट को करना चाहिए। वह हाथ का बना कपड़ा, जिसे म० गाँधी पहिनते हैं और चर्ख़ा जिसे वे सदा हाथ में लेकर चलते हैं, एक ऐसा उपाय है जिससे भारत ईजिप्ट से आगे निकल गया है। ईजिप्ट को चाहिए कि वह इस उपाय की नक़ल करे, जिससे अपने दोस्त भारत के मुक़ाबले में पहुँच सके और इसके बाद वह शायद इससे आगे भी क़दम बढ़ा सकेगा।

"इस समय भारत जिस परिस्थिति में होकर गुज़र रहा है, वह ठीक वही है जिसमें होकर ईजिप्ट वाले उस समय गुज़रे थे, जब कि उनकी राष्ट्रीय कॉङ्ग्रेस (वफ़्द) और मिलनर कमीशन में लन्दन में समझौता हुआ था। अगर भारतवासी आरम्भ में ही हमारे उदाहरण पर ध्यान देते और उपरोक्त मिलनर कमीशन वाले समझौते के पश्चात् हमको जो फल भोगना पड़ा है, उससे शिक्षा ग्रहण करते, तो वे उस ग़लती से बच जाते, जिसके कारण हमको गिरना पड़ा। उनको चाहिए था कि वे उन घटनाओं पर मनन करते और उससे प्राप्त अनुभव की सहायता से आगे बढ़ते।

"हम अपने भाई भारतवासियों की पूर्ण सफलता की कामना करते हैं और सर्वशक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह म० गाँधी को दीर्घजीवन प्रदान करे, जिससे वे उस भवन को पूर्ण कर सकें, जिसकी नींव उन्होंने रक्खी है। क्योंकि अगर भारतवर्ष अङ्गरेज़ों की उस देश को अपनाने की नीति का सफलतापूर्वक विरोध कर सका, तो यह सफलता केवल भारतवासियों की ही न होगी, वरन् इसका अर्थ यह होगा कि तमाम पूर्वीय देश अङ्गरेज़ों और अन्य विदेशियों की औपनिवेशिक नीति का विरोध कर सकेंगे।"

❀ ❀ ❀

बङ्गाल में गिरफ़्तारियाँ

पबना का ८ ता० का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्ता बाबू प्रभासचन्द्र लाहिड़ी आज कॉङ्ग्रेस-ऑफ़िस में नए ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। आप डि० कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी थे। शहर में आपके घर की तलाशी ली गई, पर कोई चीज़ आपत्तिजनक न मिली। श्री० सुधीन्द्रनाथ सरकार नामक विद्यार्थी भी गिरफ़्तार करके जेल में रक्खे गए हैं।

टङ्गाइल का ६ ता० का समाचार है कि एक प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता बाबू चारुचन्द्र राय, कलिहारी कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी बाबू भूदेवप्रसाद सूर और बाबू क्षितीशचन्द्र बोस ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार कर लिए गए। इनमें से पिछले दो व्यक्ति मि० कैसल्स पर गोली चलाने के अभियोग में पकड़े गए थे और ज़मानत पर छूटे थे।

मुन्शीगञ्ज (ढाका) का ६ ता० का समाचार है कि बालीगाँव के श्री० हीरालाल चक्रवर्ती और श्री० श्यामविनोद पाल चौधरी गिरफ़्तार किए गए हैं। वे हवालात में रक्खे गए हैं। श्री० श्यामविनोद गत वर्ष इच्छापुरा की डाकख़ाने की डकैती के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, पर गवाही की कमी के कारण छोड़ दिए गए थे।

मुन्शीगञ्ज की कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० सुनीलकुमार मुकर्जी भी ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार किए गए हैं। उनके घर की तलाशी भी ली गई, पर कुछ मिला नहीं।

नेत्रकोना की ख़बर है कि ६ ता० को बड़े सवेरे पुलिस ने बाबू रमेशचन्द्र चौधरी नामक व्यापारी और बाबू उपेन्द्रचन्द्र मजूमदार नामक सरकारी नौकर के घरों पर धावा किया। उपरोक्त दोनों व्यक्ति और एक तीसरे व्यक्ति श्री० सुधीरचन्द्र मजूमदार ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार कर लिए गए।

बारीसाल में ८ ता० की शाम को श्री० सुरेन्द्रनाथ घोष और श्री० सत्यव्रत घोष गिरफ़्तार कर लिए गए। उनके मकानों की तलाशी ली गई और पुलिस कितनी ही किताबें उठा ले गई।

१६ नवम्बर, सन् १९३१

स्वराज्य का सच्चा मार्ग

देश की दुर्दशा

हिन्दुस्तान की हालत इस समय शोचनीय हो रही है। एक हज़ार वर्षों से यह विदेशियों के पैरों तले कुचला जा रहा है। दुनिया में शायद ही कोई देश इतने दिनों तक ऐसी निपट पराधीनता की दशा में रहा होगा। ख़ासकर इन दिनों, जब कि छोटे-छोटे देश स्वाधीन-राष्ट्र बनते जाते हैं, हिन्दुस्तान जैसा बड़ा मनुष्य जाति के पाँचवें हिस्से का निवास-स्थान देश सब तरह से बेबस और गिरी हुई दशा में पड़ा है। इससे बढ़ कर खेद और लज्जा की बात दूसरी क्या हो सकती है? इस समय दुनिया के तमाम हिस्सों में प्रजातन्त्र या प्रतिनिधि-सभाओं द्वारा शासन होता है और तमाम सभ्य देशों में हर एक व्यक्ति को शासन में भाग ले सकने का हक़ है। पर हमारे देश के एक तिहाई हिस्से अर्थात् देशी रियासतों में तो बिल्कुल ही निरङ्कुश शासन होता है, और ब्रिटिश भारत में जनता को जो थोड़े से अधिकार दिए गए हैं, वे भी ज़्यादातर दिखावटी हैं। इस देश के शासन की असली कुञ्जी वायसरॉय और भारत-मन्त्री के हाथ में रहती है और वे जनता की राय पर ध्यान देने की शायद ही तकलीफ़ करते हैं। इस देश में आर्म्स एक्ट, प्रेस एक्ट, रेगुलेशन नं० ३, बङ्गाल ऑर्डिनेन्स जैसे मनुष्यत्व को कुचलने वाले क़ानून अमल में लाए जाते हैं। इस देश के सबसे अधिक विद्वान और सब तरह से योग्य व्यक्तियों को भी साधारण दर्जे के विदेशी के आगे सर झुकाना पड़ता है और उनकी ख़ुशामद करने को लाचार होना पड़ता है।

इस देश के समान कङ्गाली किसी दूसरे देश में नहीं है। यहाँ के निवासियों की औसत आमदनी यूरोप और अमेरिका वालों के मुक़ाबले में नाम-मात्र को है। यहाँ हर साल जो भयङ्कर अकाल पड़ते रहते हैं और उनमें जितने आदमी मरते हैं, उनकी तादाद तमाम संसार में होने वाले युद्धों की मृत्यु-संख्या से अधिक होती है। ग़रीबों की तो क्या बात, मध्यम श्रेणी वालों को भी काफ़ी खाने-पीने की चीज़ें नहीं मिलतीं और हर शहर में हज़ारों पढ़े-लिखे आदमी नौकरी के लिए मारे-मारे फिरते हैं। किसान और मज़दूरों की दुर्दशा का तो वर्णन नहीं किया जा सकता। ये बेचारे दिन-रात पसीना बहा कर काम करते हैं, तो भी भरपेट सूखा अनाज और मोटा कपड़ा नहीं पाते।

सुधार की चेष्टा

इस दुर्दशा को दूर करके हिन्दुस्तान को उन्नति के पथ पर चलाने के लिए देशहितैषी व्यक्ति वर्षों से परिश्रम कर रहे हैं। सब से पहले कॉङ्ग्रेस ने राजनीतिक सुधार की तरफ़ क़दम उठाया, और धीरे-धीरे उसने इस क्षेत्र में बहुत-कुछ काम करके दिखलाया। उसकी चेष्टा से राजनीतिक कार्यकर्ताओं का एक बड़ा दल तैयार हो गया है और सर्व-साधारण को अपनी बुरी हालत का बहुत-कुछ पता लग चुका है। समाज-सुधार के लिए भी बहुत सी संस्थाएँ क़ायम हो गई हैं और अब दो-चार वर्षों से लोगों की मनोवृत्ति में इस सम्बन्ध में एक विशेष परिवर्तन दिखलाई दे रहा है। पुराने कठिन बन्धन ढीले पड़ते जाते हैं और लोग सामाजिक और धार्मिक मामलों में कुछ-कुछ आज़ादी से काम लेने लगे हैं। आर्थिक और औद्योगिक उन्नति के लिए भी चेष्टा जारी है, पर इस सम्बन्ध में तमाम सूत्र सरकार के अधिकार में रहते हैं, और जनता की चेष्टा का फल बहुत कम निकलता है।

पर हिन्दुस्तान की उन्नति के लिए ये साधन काफ़ी नहीं हो सकते। यद्यपि कॉङ्ग्रेस अब पहले ज़माने की अपेक्षा बहुत अधिक आगे बढ़ गई है और उसने देश की आज़ादी के संग्राम को बहुत-कुछ आगे बढ़ाया है, तो भी भारतीय नवयुवकों का आदर्श उससे बहुत सी बातों में भिन्न है। भारत के नवयुवक जहाँ पूर्ण स्वाधीनता से कम अधिकार को सब तरह से निरर्थक समझते हैं, वहाँ कॉङ्ग्रेस के प्रमुख नेता कितनी ही बार औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए ही तैयार हो जाते हैं। साधारण जनता का सङ्गठन और जाग्रति ही राजनीतिक उद्धार का एकमात्र मार्ग है। इस बात को स्वीकार करते हुए भी कॉङ्ग्रेस ने अब तक इस पर अमल बहुत कम किया है। यद्यपि आज राजनीतिक संग्राम की सफलता को दृष्टिगोचर रखते हुए किसान-सङ्गठन पर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है, पर यह कह सकना कठिन है कि राजनीतिक अधिकार प्राप्त हो जाने के बाद भी यह सिद्धान्त क़ायम रहेगा। क्या आश्चर्य है कि सन् १९२३ की भाँति कॉङ्ग्रेस का रुख़ फिर कौन्सिलों की तरफ़ हो जाय और किसान बेचारे इसी दलदल में पड़े रह जायँ।

मज़दूर-सङ्गठन का प्रश्न इससे भी ज़्यादा सन्देहपूर्ण है। कॉङ्ग्रेस में इस समय पूँजीपतियों की संख्या काफ़ी है और कॉङ्ग्रेस का ख़र्च तो ख़ासकर उन्हीं की सहायता से चलता है। दूर जाने की क्या ज़रूरत, अभी महीने भर पहले गाँधी-जयन्ती में जब सरदार पटेल को १९ लाख की खादी का स्टॉक बेच डालने की आवश्यकता पड़ी तो उसे बम्बई और अन्य स्थानों के बड़े-बड़े मालदारों ने ही विशेष रूप से ख़रीदा। इस दशा में यह समझ सकना कठिन है कि कॉङ्ग्रेस मज़दूरों की दुर्दशा का इलाज कैसे कर सकेगी। क्योंकि मज़दूरों की लड़ाई सरकार से नहीं है, वरन् पूँजीपतियों से है। जब तक पूँजीपति अपने लाभ का परिमाण कम न करेंगे, तब तक मज़दूरों को कुछ हासिल नहीं हो सकता। जिन देशों को पूर्ण स्वाधीनता के अधिकार प्राप्त हैं, जैसे इङ्गलैण्ड और अमेरिका आदि, उनमें भी मज़दूरों की यही दशा है। इसलिए स्वराज्य मिलने से ही मज़दूरों की समस्या हल नहीं हो सकती। उसके लिए पूँजीपतियों का विरोध करना अनिवार्य है और अब तक कॉङ्ग्रेस इससे सोलहों आने बच कर रही है।

सुधार का मार्ग

हिन्दुस्तान के राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक सुधार का एकमात्र रास्ता हमारी सम्मति में किसान, मज़दूर और दूसरे नौकरी पेशा वालों का सङ्गठन करना है। यह ज़माना पूँजीवाद (कैपिटैलिज़्म) का है और इस समय अगर कोई सङ्गठन दरअसल मज़बूत हो सकता है, तो वह पेशे के आधार पर ही हो सकता है। क्योंकि एक तरह के काम करने वालों का हित हमेशा एक सा रहता है और जात-पाँत और मज़हब का अन्तर उसे नहीं बदल सकता। सन् १९२१ में असहयोग के समय हिन्दू-मुसलमानों का जो सङ्गठन ख़िलाफ़त के नाम पर किया गया था, वह दो वर्षों में ही ख़त्म हो गया और उसके बाद आज तक हिन्दू-मुसलमान सैकड़ों क्या हज़ारों स्थानों में एक दूसरे का सर फोड़ चुके हैं। पर किसी कारख़ाने की हड़ताल में ऐसा दृश्य शायद ही कभी देखने में आवे। कोई कारख़ाने वाला हिन्दू या मुसलमान मज़दूरों को मज़हब या ज़ात के नाम पर हड़ताल से अलग नहीं कर सकता। कारण यह कि तमाम मज़दूरों को एक ही बात की तकलीफ़ होती है और उसका असर सब मज़हब वालों पर एक सा पड़ता है। यही दशा किसानों की है। अगर कोई ज़मींदार अनुचित टैक्स या बेगार लेता है या किसानों पर कुछ अन्याय करता है, तो उससे सभी जाति और मज़हब वालों को एक सी तकलीफ़ होती है और वे सब बिना किसी भेद-भाव के उसका विरोध करते हैं। सरकारी या प्राइवेट ऑफ़िसों के नौकर भी जब तनख़्वाह बढ़ाने के लिए आन्दोलन करते हैं, तो यह नहीं कहा जाता कि एक ज़ात वाले नौकरों की तनख़्वाह बढ़ाई जाय और दूसरी ज़ात वालों की नहीं।

हम दावे के साथ कह सकते हैं कि अगर हिन्दुस्तान को जब कभी सच्चा स्वराज्य मिलेगा, तो इसी प्रकार श्रमजीवी सङ्गठन के द्वारा मिलेगा। क्योंकि जब तक ये ९६ या ९७ प्रति सैकड़ा लोग निर्बल तथा अज्ञान दशा में पड़े रहेंगे, तब तक थोड़े से धनवान और पढ़े-लिखे व्यक्ति ब्रिटिश गवर्नमेण्ट पर बहुत कम दबाव डाल सकते हैं। हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि स्वराज्य और देशोद्धार के नाम पर जिन किसानों का दशमांश भी आन्दोलन में भाग लेने को तैयार नहीं होता था, लगान के सवाल पर वे प्रायः सब अधिकारियों का मुक़ाबला करने और कष्ट-सहन के लिए तैयार हो जाते हैं।

पर इन श्रमजीवियों का सङ्गठन कैसे हो, यह बड़ा टेढ़ा सवाल है। जैसा हम कह चुके हैं, यद्यपि कॉङ्ग्रेस इस समय किसान-सङ्गठन का कार्य कर रही है, पर यह कह सकना कठिन है कि कहाँ तक वह स्थायी होगा। मज़दूर-सङ्गठन के विषय में तो ज़बानी जमा-ख़र्च के सिवाय बहुत कम असली काम देखने में आता है। ऐसी हालत में सफलता का एक यही मार्ग है कि या तो नवयुवक दल कॉङ्ग्रेस की बागडोर को अपने हाथ में ले, या यह कार्य नौजवान-भारत-सभा, किसान-मज़दूर-पार्टी आदि जैसी संस्थाओं द्वारा किया जाय। इन संस्थाओं का कर्तव्य है कि साधारण जनता को इस बात का विश्वास

दिखा दें कि हम जो स्वराज्य चाहते हैं, वह ग़रीबों का स्वराज्य होगा, उसमें किसी को भूखों, नङ्गे न भटकना होगा, देश के शासन और सम्पत्ति में सबका समान अधिकार होगा, और वर्तमान समय की असमानता, अन्याय, अत्याचार मिट कर सब लोग स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे। जब तक ऐसा न किया जायगा, इस बात की सम्भावना बहुत कम है कि श्रमजीवी दिल से स्वराज्य आन्दोलन में भाग लें। हम तो स्वराज्य का अर्थ यही समझते हैं कि किसान अपनी ज़मीन और पैदावार के पूरे मालिक हों और कोई ज़मींदार या तालुक़ेदार उनको बेदख़ल न कर सकें और न सैकड़ों तरह के टैक्स ले सकें। मज़दूरों को इतनी मज़दूरी दी जाय, जिससे वे एक भले आदमी की तरह आराम से रह सकें और उनके बच्चे ऊँची से ऊँची तालीम हासिल कर सकें। पढ़े-लिखे नौजवानों को आजकल की तरह नौकरी के लिए जूतियाँ चटकाते न फिरना पड़े, और न ऐसा दृश्य देखने में आवे कि सिर्फ़ दस्तख़त करने वाला अफ़सर तो एक-दो हज़ार रु० माहवारी पावे तथा नौ बजे से छः बजे तक जानवर की तरह काम करने वाले क्लर्क को पच्चीस-तीस रुपए में ही टरका दिया जाय। कोई व्यक्ति अछूत न समझा जाय और इन नीची जाति के समझे जाने वाले लोगों को केवल पास बैठने या मन्दिरों में जाने का ही अधिकार न दिया जाय, वरन् उनकी आर्थिक दशा की उन्नति की जाय, जिससे सब आवश्यक सुधारों को वे ख़ुद ही कर सकें। स्त्रियों को सामाजिक दासता के बन्धन से छुड़ाना भी आवश्यक है। उनको स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने का वैसा ही अधिकार होना चाहिए, जैसा कि एक पुरुष को होता है।

इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि इस आदर्श के अनुसार स्वराज्य केवल उद्योगी, साहसी और स्वार्थ-त्यागी नवयुवक ही स्थापित कर सकते हैं, चाहे वे कॉङ्ग्रेस के नाम से काम करें और चाहे किसी नवीन संस्था के रूप में। क्योंकि उन्हीं में इतनी शक्ति है कि घर-बार को त्याग कर निकल पड़ें और प्रत्येक गाँव तथा प्रत्येक कारख़ाने में घुस कर वहीं के अङ्ग बन जायँ और किसानों तथा मज़दूरों की काया-पलट कर दें। दुनिया आज रूस को दस साल के भीतर मध्यकालीन अर्द्ध-सभ्य देश से पूर्ण रूप से आधुनिक, सुसंस्कृत और नवीन आदर्शों में यूरोप और अमेरिका के सब देशों से बढ़ा देख कर दाँतों तले अँगुली दबा रही है। पर इस सम्बन्ध में अधिकांश लोग इस तथ्य पर ध्यान नहीं देते कि इस उन्नति का श्रेय उन अनगिनत नवयुवकों और युवतियों को है, जिन्होंने अब से पचास-साठ वर्ष पहले अपने जीवन की समस्त अभिलाषाएँ और विद्या-बुद्धि जनसमूह की उन्नति के लिए अर्पण कर दी थी। ये युवक और युवतियाँ बड़े-बड़े विद्वान और उपाधिधारी होने पर भी भेष बदल कर गाँवों में किसानों की तरह और कारख़ानों में मज़दूरों की तरह रहते थे और धीरे-धीरे उन सीधे-सादे लोगों के विचारों को बदलते रहते थे। इस उपाय से काम करने में समय तो अवश्य अधिक लगा और परिश्रम भी बहुत करना पड़ा, पर देशोन्नति के कार्य बिल्कुल ठोस और स्थायी हुए और उसने रूस की काया-पलट कर दी। इसके प्रभाव से उस देश की जनता में ऐसा जागृति उत्पन्न हो गई कि वह हृदय से निरङ्कुश शासन का विरोधी बन गई और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए प्राणपण से कटिबद्ध हो गई। इसी तरह के ठोस कार्य की आवश्यकता हमारे देश को है और वही स्वराज्य का सच्चा रास्ता है।

❀ ❀ ❀

काश्मीर की समस्या

काश्मीर रियासत की दशा बड़ी शोचनीय हो रही है। पञ्जाब के कुछ कट्टर और स्वार्थी मुसलमान नेताओं तथा उनका साथ देने वाले अख़बारों ने, उस रियासत के सम्बन्ध में तरह-तरह की झूठी-झूठी और अतिशयोक्तिपूर्ण ख़बरें फैला कर एक ऐसी विकट समस्या पैदा कर दी है, जिसके फल से काश्मीर का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ गया है। इस नीचतापूर्ण प्रचार-कार्य में कुछ एङ्ग्लो इण्डियन पत्रों ने भी भाग लिया है, और वे बराबर अपने सम्वाददाताओं की भेजी ऐसी ख़बरें छापते रहे हैं, जिनसे प्रकट होता है कि काश्मीर की मुसलमान प्रजा और आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए मुसलमान क़ैदियों पर सचमुच ही बड़ा ज़ुल्म हो रहा है। काश्मीर के महाराज और अन्य अधिकारियों ने इस परिस्थिति का मुक़ाबला बड़ी सावधानी और राजनीतिज्ञता से किया और वे जहाँ तक सम्भव था, इन अफ़वाहों का खण्डन लिख कर और कार्य-रूप में बराबर करते रहे। उन्होंने मुसलमानों के साथ ज़्यादा से ज़्यादा रियायतें कीं, उनकी प्रायः सभी माँगों को स्वीकार कर लिया और जैसे ही शान्ति के लक्षण दिखलाई पड़े, उपद्रव के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए तमाम क़ैदियों को छोड़ दिया।

इन बातों से आशा होने लगी थी कि अब यह निराधार आन्दोलन बन्द हो जायगा और रियासत को शान्तिपूर्वक साँस लेने का अवसर मिलेगा। पर मालूम होता है कि बाहरी आन्दोलनकारियों का मतलब केवल रियासत के मुसलमानों को विशेष अधिकार दिलाने का ही नहीं है, वरन् इसके सिवाय उनका और भी कोई गुप्त उद्देश्य है। इसीलिए काश्मीर के शासकों के इतनी उदारता दिखलाने पर भी ये 'कट्टर' आन्दोलनकारी शान्त नहीं होते और बार-बार रियासत के भीतर अशान्ति फैलाने की चेष्टा करते हैं। इनका यह काम कितना अनुचित और न्याय-विरुद्ध है, इसका पता जालन्धर के एक मुसलमान मौलवी अहमद हुसेन के उस पत्र से लगता है, जो उन्होंने इस आन्दोलन के नायक 'मजलिसे अहरार' को लिखा है। इस पत्र में मौलवी साहब यह वर्णन करके कि काश्मीर सम्बन्धी पहला आन्दोलन काश्मीरी मुसलमानों के अभाव अभियोगों को दूर कराने के लिए किया गया था और उससे वास्तव में उनका हित हुआ, कहते हैं :—

"मैं काश्मीर रियासत की शासन-पद्धति का प्रशंसक नहीं हूँ, और पिछले महीनों में बराबर ज़ोरदार आन्दोलन करने का समर्थन करता रहा हूँ। पर इस मौक़े पर, जब कि रिफ़ार्म कमीशन के सदस्यों के नामों की घोषणा की जा चुकी है, सक्रिय आन्दोलन का मैं विरोधी हूँ। इन विषयों में साहस की अपेक्षा बुद्धिमानी से काम लेना आवश्यकीय है। अब तक भी हमने बिना सोचे-विचारे जिस ढङ्ग से काम किया है उसके कारण ग़ैर-मुस्लिम हमारे विरोधी बन गए हैं और काश्मीर की तमाम जातियाँ तरह-तरह की माँगें पेश कर रही हैं। इस मौक़े पर अहरार जत्थों का भेजा जाना और उनकी गिरफ़्तारी बड़ी खेदजनक है और मेरी सम्मति में मजलिसे अहरार को कुछ समय तक परिस्थिति का निरीक्षण करना चाहिए था। हमारी लड़ाई साम्प्रदायिक लड़ाई नहीं कही जा सकती। हम सिर्फ़ काश्मीर के मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करना चाहते थे, पर हमने अपनी कार्रवाइयों से कितने ही हिन्दू नेताओं को भड़का दिया है और वे मुसलमानी रियासतों में हिन्दू जनता द्वारा ऐसा ही आन्दोलन खड़ा करने को कह रहे हैं। यह बात बड़ी शोचनीय है। इसके सिवाय यह भी इलज़ाम लगाया जा रहा है कि कुछ मुसलमान नेता इन जत्थों को इसलिए भेज रहे हैं कि काश्मीर के महाराज से रुपया वसूल करें। इस प्रकार का कथन निश्चय ही गर्हित है, पर इस मौक़े पर जत्थों को भेज कर, जब कि उनकी ज़रूरत नहीं है, हम ख़ुद ही ऐसे द्वेषपूर्ण प्रचार के लिए मौक़ा दे रहे हैं। मैं अपने इन विचारों को अपने उन सहधर्मियों के सामने पेश करना चाहता हूँ, जो मेरी तरह काश्मीर के पीड़ित मुसलमानों की सेवा करना चाहते हैं, न कि उनके द्वारा अपना मतलब सिद्ध करना।"

भारत-सरकार ने भी काश्मीर के सम्बन्ध में जो उपाय अवलम्बित किया है, वह विचारणीय है। इतने दिनों तक समाचार-पत्रों ने और सार्वजनिक नेताओं ने उससे काश्मीर-विरोधी आन्दोलन के रोकने का आग्रह किया, पर उसने ज़रा भी ध्यान न दिया। अब उसने एकाएक उसकी रक्षा के लिए ऑर्डिनेन्स बना दिया और साथ ही अङ्गरेज़ी सेना भी वहाँ भेज दी, इसका अर्थ जल्दी समझ में नहीं आता। यह झगड़ा तो ऑर्डिनेन्स द्वारा पञ्जाब के मुस्लिम जत्थों को रोक देने से ही ख़त्म हो सकता था। अगर काश्मीर के भीतर थोड़ा-बहुत उपद्रव होता, तो उसके लायक़ सेना काश्मीर में मौजूद ही है। तब अङ्गरेज़ी सेना को वहाँ भेजने से क्या लाभ? इसके विपरीत काश्मीर पर जिस तरह सदा अङ्गरेज़ों की आँख लगी रहा है और पिछले ज़माने में भारत-सरकार ने उसके साथ जैसा व्यवहार किया है, उससे यह बात बहुत सन्देहजनक जान पड़ती है। इन बातों से यही कहना पड़ता है कि काश्मीर का भविष्य अब भी अनिश्चित है।

❀ ❀ ❀

सरकार की फ़िज़ूलख़र्ची

आजकल जब कि हम एक तरफ़ अपनी आँखों से नित्यप्रति देश की बढ़ती हुई आर्थिक दुर्दशा को देख रहे हैं, जब कि हम सुनते हैं कि सरकार ख़र्च घटाने के लिए एक-एक विभाग से हज़ारों नौकरों को निकालने की तजवीज़ कर रही है; जब कि पचास और साठ रुपया पाने वाले सरकारी नौकरों की, जिनके बाल-बच्चों को इस समय भी काफ़ी अन्न-वस्त्र नहीं मिलता, तनख़्वाह में भी दस प्रति सैकड़ा कमी की जा रही है, और दूसरी तरफ़ हम देखते हैं कि सरकारी अधिकारियों के ऐश-आराम के लिए लाखों रुपया ऐसे कामों में ख़र्च किया जा रहा है, जिनके बिना सहज में काम चल सकता था, तो मन में आश्चर्य और खेद का भाव आए बिना नहीं रहता। अभी हाल में बहुत सा रुपया लगा कर वायसरॉय की स्पेशल ट्रेन की शोभा और सुख-सामग्री बढ़ाई गई थी। अब ख़बर मिली है, १ लाख १६ हज़ार रुपया लगा कर वायसरॉय के आकाश-विहार के लिए एक हवाई जहाज़ ख़रीदा जा रहा है। हम नहीं समझते कि जब सरकारी अधिकारियों का जनता की कष्ट की कमाई के प्रति यह भाव है, तो इस बात की क्या आशा की जा सकती है कि वे गर्मी में सरकारी ऑफ़िसों का पहाड़ों पर ले जाना और उन अन्य फ़िज़ूलख़र्चियों को कम कर सकेंगे, जो पहले से चली आ रही हैं। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि जब तक भारत के ख़ज़ाने की कुञ्जी भारतवासियों के हाथ नहीं आती, तब तक ऐसी घटनाएँ होती ही रहेंगी।

❀ ❀ ❀

(शेषांश)

[पिछले परिच्छेदों का सार—विमल एक देशभक्त माता-पिता का पुत्र था। शारदा उसकी बहिन थी। असहयोग में कॉलेज छोड़ कर, विमल ने ग्रामों में प्रचार-कार्य किया और पीछे ज़िला कॉङ्ग्रेस-कमिटी का मन्त्री बन गया। राजद्रोह के अपराध में विमल को कारागार में जाना पड़ा। शारदा जेल में उससे मिलने आई और उसे माता की निराशापूर्ण बीमारी का समाचार सुनाया। विमल अपनी माता को बहुत मानता था। वह उसके दर्शनों के लिए छटपटा उठा। माँ के दर्शनों का एक साधन था—माफ़ी। विमल ने अन्त में उसी साधन का आश्रय लिया और जेल से मुक्ति पाई।

१२

एक छोटे से कमरे में विमल की माँ रुग्ण-शय्या पर पड़ी थी। पास ही शारदा बैठी हुई थी। माँ की दशा चिन्ताजनक थी। शरीर जर्जर हो गया था, नेत्रों की ज्योति मन्द पड़ गई थी। कमरे में शान्ति थी, केवल शारदा ही कभी-कभी दबी हुई सिसकियाँ भर लेती थी।

अचानक द्वार खुला और ज्योंही शारदा उसकी ओर मुड़ी, उसने विमल को कमरे में आते हुए देखा।

'भैया!' कह कर वह आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी।

माँ की आँखें धीरे-धीरे खुलीं। उसने द्वार की ओर देखा। विमल तेज़ी से माँ की ओर आया। माँ जैसे सतर्क हो गई हो।

'विमल!' माँ ने शक्ति सञ्चय कर कहा।

'हाँ, माँ!'

'तुम यहाँ?'

'हाँ!'

'क्या छूट गए?'

'हाँ।'

'यह क्योंकर?'

विमल ने शिर नीचा कर लिया। उसके पास कोई उत्तर नहीं था।

माँ समझ गई।

'माफ़ी माँग ली?'

विमल ने 'हाँ' में शिर हिला दिया।

'मेरा पुत्र होकर, अपने पिता का पुत्र होकर माफ़ी माँग ली! मेरे जन्म में कलङ्क का टीका लगा दिया! जिसके पिता ने देश के लिए हँसते-हँसते प्राण अर्पण कर दिए, जिसके देशवासी भाँति-भाँति के बलिदान मातृ-भूमि के वेदी पर चढ़ा रहे हैं, वह कायर निकला, वह देश-द्रोही निकला। उसने मातृ-भूमि को और अपनी माँ को धोखा दिया। मेरा एक पुत्र और वह ऐसा! लोग चारों ओर से उँगली उठाएँगे, मैं देशद्रोही की, एक कायर की माँ कही जाऊँगी! जिस पुत्र से वीरता की आशा थी, उसने ही बुढ़ापे में मुझे ऐसा दिन दिखाया। हे भगवान! ऐसा पुत्र पैदा होते ही क्यों न मर गया? यदि निपुत्री ही होती तो यह दिन तो देखने को न मिलता! हाय, मैं पुत्र के होते भी निपुत्री से भी बुरी हूँ।'

माँ बिलख-बिलख कर रोने लगी, उसकी हिचकियाँ बँध गईं। विमल के नेत्रों से भी आँसू बह रहे थे।

'माँ!' वह करुणा-जनक स्वर में बोला।

'माँ? मैं नहीं हूँ, तेरी माँ। मुझे 'माँ' पुकार कर मेरा अपमान न कर!' माँ के शब्दों में ज़ोर आ गया था।

'माँ, तुम समझी नहीं हो।'

'समझी नहीं हूँ? अब समझने को शेष क्या रहा है? तुम माफ़ी माँग कर जेल से छूटे हो, इससे अधिक और क्या समझा सकते हो? तुमसे एक वर्ष भी जेल में न रहा गया, ग्रामों में इतने दिन तपस्या का जीवन बिताने के बाद भी जेल की यातनाएँ सहन न हो सकीं, और मुझे समझाने आए हो।'

'परन्तु मैं यातनाओं के डर से छुटकारा पाकर नहीं आया हूँ।'

'फिर?'

'तुम्हारे लिए।'

'मेरे लिए?'

'हाँ, 'माँ' के लिए।'

माँ ने विमल की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा।

'मैं सच कहता हूँ, माँ! जेल की यातनाओं ने मुझसे माफ़ी नहीं मँगवाई है। जेल की यातनाएँ दुःसह अवश्य थीं, परन्तु उनसे मैं नहीं घबराया। जेल के कष्ट दृढ़ हृदय को भी विचलित करने वाले थे अवश्य, परन्तु उन्होंने मुझ पर अधिक प्रभाव नहीं किया था। कुछ दिन बीतने पर मैं उनका आदी हो जाता, परन्तु मैं तुम्हारी दशा का समाचार सुन कर एकदम अधीर हो उठा था। किसी प्रकार तुम्हारे पास आने के लिए, तुम्हारे दर्शन और तुम्हारी सेवा करने के लिए मैं आतुर हो उठा था। माँ के विचार ने मेरे अन्य सब विचारों पर पर्दा डाल दिया था। उसी विचार ने......मुझसे माफ़ी तक मँगवाई थी!'

'माँ के लिए कायरता, देशद्रोह?'

'मैं कायर नहीं हूँ, माँ, मैं कायर नहीं हूँ। मैं देश के लिए मर सकता हूँ। परन्तु साथ ही माँ का मुझ पर पहिला अधिकार है।'

'क्यों किया तुमने यह, विमल? क्या माँ का विचार मातृ-भूमि से भी बढ़ कर है? माँ और मातृ-भूमि, इनमें से क्या तुम नहीं समझते कि मातृ-भूमि का तुम पर पहिला अधिकार है। एक माँ क्या, असंख्य माँएँ मातृ-भूमि के सामने तुच्छ हैं। यदि तुम माँ को भूल जाओ तो वह क्षम्य है, परन्तु मातृ भूमि को भूलना—यह कभी क्षम्य नहीं हो सकता। यदि मातृ-भूमि की रक्षा न हो सकेगी तो माँ की रक्षा तुम कैसे कर सकते हो? ग़ुलामों की माताओं का मान क्या, उनकी प्रतिष्ठा क्या? मातृ-भूमि की रक्षा करके तुम उन लाखों माताओं की रक्षा कर सकते हो, जो परतन्त्रता के कारण स्वयं अपने शरीर की, अपनी आत्मा की, और अपने मान की रक्षा नहीं कर सकतीं। भूल जाओ माँ को, विमल! छोड़ दो इस ममता को!'

'माँ की ममता छोड़ सकूँगा?' विमल रोने लगा।

'न छोड़ सको तो अपना मन्त्र बना लो—माँ और मातृ-भूमि!'

विमल माँ के चरणों पर शिर रख कर रोने लगा। माँ की इच्छा हुई कि विमल के शिर पर हाथ फेरे, परन्तु वह दृढ़ रही आई।

'क्षमा करो माँ! मैंने बड़ा अपराध किया है।'

'क्षमा मैं नहीं कर सकती?'

'फिर?'

'मातृ-भूमि से क्षमा माँगो?'

'किस प्रकार?'

'फिर रण में जाकर और एक वीर सिपाही की भाँति लड़ कर।'

'असहयोग के रण में?'

'हाँ!'

इतने ही में नीचे से स्वयंसेवकों का गाना सुनाई पड़ा। वे दल बनाए हुए असहयोग के युद्ध में जा रहे थे। माँ, शारदा और विमल सब एकचित्त होकर गाने को सुनने लगे। स्वयंसेवक गा रहे थे:—

(१)

सुना दिया है सेनापति ने रुचिरा रणभेरी का नाद,
रण प्राङ्गण को चले सुभट सब भरे हृदय में अति आह्लाद।
छेड़ दिया है असहयोग का अनुपम शान्त सुभग संग्राम,
लड़ने को हैं खड़े निहत्थे वीर असहयोगी निष्काम।
सुनो, सुनो, प्यारी भारत-जननी का करुणामय आह्वान,
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान॥

(२)

माना तुम हो निरे निहत्थे, अति बलशाली है सरकार,
माना तुम पर नित्य नए होते अमानुषिक अत्याचार।
पर यदि तुम्हें मातृ-भू का दासत्व-पाश है कटवाना,
सुभग सुखद स्वातन्त्र्य-सूर्य से पारतन्त्र्य-तम हटवाना,
आलिङ्गन आपत्ति-पुञ्ज का तो कर लो निज बन्धु समान,
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान॥

(३)

पिनल-कोड के नागपाश में फँसा रहे फँस जाने दो,
भेज-भेज कर सैनिक कारागारों को भरवाने दो।
तोपों से गोले बरसाते हैं, सुख से बरसाने दो,
अथवा वायुयान द्वारा ऊपर से बम्ब गिराने दो।
कर लेने दो ज़ुल्म न रह जाए उनके जी में अरमान,
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान॥

(४)

ज़ुल्मों की बिजली गिरती है, तुम न मगर परवाह करो,
पहले आह किया करते थे पर अब केवल वाह करो।
ज़ुल्मों का ग़म करो न हरगिज़ न अब कहीं फ़रियाद करो,
करो प्रार्थना यही, दयामय, जल्लादों को शाद करो।
गाते रहो सदा प्रमुदित हो शान्ति, अहिंसा के कल गान,
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान॥

(५)

दास, लाल, आज़ाद, नेहरू चढ़ा गए हैं बलि-प्रदान,
हुए वीरवर गाँधी जी भी भारतमाता पर क़ुरबान।
आओ, भारत-वीर देश पर करो निछावर तुम भी जान,
दूर करो नौकरशाही का शान्ति-अस्त्र से ही अभिमान।
'प्रेम' मुकुट माँ के सिर रख दो, फहरा दो आज़ाद निशान,
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान॥

सब ने निस्तब्ध होकर गाना सुना। विमल ने भी वह गाना सुना। वह कुछ देर तक कुछ सोचता रहा। फिर उसने अच्छी तरह माँ की ओर देखा और कुछ न कह कर वह द्वार की ओर चल दिया। माँ अभी तक दृढ़ थी, परन्तु अब दृढ़ता का बाँध टूटने लगा, मातृ-प्रेम की धारा का प्रवाह इतना प्रबल हो उठा था। उसके नेत्रों से आँसू बहने लगे। जिस पुत्र के लिए वह रुग्ण-शय्या पर पड़ी हुई छटपटाया करती थी, जिसे देखने के लिए वह तरसती थी, वह पास आकर भी जा रहा था, न जाने किधर, न जाने कितने समय के लिए। शायद वह फिर उसे न मिले, शायद यही दोनों का अन्तिम मिलन हो। इन विचारों से वह व्याकुल हो उठी। उसने अपने हाथ द्वार की ओर फैलाए और वह चिल्लाना चाहती थी—'विमल न जाओ!' इतने ही में उसके कानों में स्वयंसेवकों के गीत का यह अंश सुन पड़ा—

"सुनो, सुनो, प्यारी भारत-जननी का करुणामय आह्वान!
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान!"

उसने दृष्टि द्वार से हटा ली। फैले हुए हाथ पीछे कर लिए। आँखों में दो आँसू लाकर उसने तकिए में अपना मुख छिपा लिया।

* * *

शारदा विमल के पीछे-पीछे द्वार तक आई थी। जब विमल ज़ीने के पास पहुँच गया और नीचे उतरना चाहता था, तब शारदा ने उसे पुकारा—

'भैया!'

विमल पीछे मुड़ा।

'बहिन से बिना मिले ही चले जाओगे?'

'मैं इस योग्य नहीं रहा, शारदा!'

'क्यों नहीं?'

'मैं देशद्रोही हूँ, कायर हूँ।'

'थे, तब थे, अब नहीं हो। अब तो वीरता से तुम शत्रु के अत्याचारों का लोहा लेने जा रहे हो। उस क्षणिक दुर्बलता को भूल जाओ!'

'तो तुम समझती हो?'

'समझती हूँ, भैया! मानव-हृदय इसी का नाम है!'

'मुझे हर्ष है, शारदा, कि तुम मुझे कायर नहीं समझती हो, अपराधी नहीं समझती हो, अब मुझे चिन्ता नहीं कि संसार मुझे क्या कहेगा। तुम जानती हो, शारदा, कम से कम एक ऐसे व्यक्ति को पाना भी, जो मुझे अपराधी नहीं समझता, सान्त्वना से हृदय को भर देता है। मैं अब जहाँ भी जाऊँगा, जहाँ भी रहूँगा, जो कुछ भी करूँगा, इस बात का मुझे सन्तोष रहेगा कि मेरी बहिन मेरे साथ है।'

'ईश्वर तुम्हें इस परीक्षा में सफल करें।'

भाई-बहिन, दोनों, एक-दूसरे के गले से लिपट गए।

१३

विमल घर से बाहर निकला तो उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो सारा नगर उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देख रहा हो। सारे नगर में तब तक यह समाचार फैल गया था कि विमल माफ़ी माँग कर छूट आया था। जिसे देखिए वही विमल की बातचीत कर रहा था। जहाँ देखिए, वहीं उसकी चर्चा हो रही थी।

एक रायसाहब की शराब की दूकान पर बड़े ज़ोरों से धरना दिया जाने वाला था। स्वयंसेवकों का पहला जत्था राष्ट्रीय गीत गाता हुआ उधर ही गया था। वह एक मार्के की लड़ाई थी। रायसाहब ने कलक्टर से पुलिस की सहायता माँगी थी और कलक्टर ने उसे सहर्ष प्रदान कर दिया था। शराब की दूकान के चारों ओर लाल साफ़े वाले सिपाहियों का समूह ही दिखलाई देता था। दर्शकों की भी बड़ी भारी भीड़ वहाँ लगी हुई थी। लोग यह देखना चाहते थे कि पुलिस कैसे-कैसे अत्याचार निहत्थे, शान्त स्वयंसेवकों पर करती है और स्वयंसेवक किस प्रकार चुपचाप उन अत्याचारों को सहन करते हैं। अभी तक उस नगर में पुलिस और स्वयंसेवकों की ऐसी मुठभेड़ का अवसर नहीं आया था।

स्वयंसेवक बढ़े हुए चले जा रहे थे, अपने Marching Song को गाते हुए, बीच-बीच में भारतमाता की जय-जयकार बोलते हुए। जिधर-जिधर होकर वे जा रहे थे, वहीं-वहीं भीड़ उनका हर्षनाद से स्वागत कर रही थी। देवियाँ अपने-अपने मकानों की छतों से पुष्प-वर्षा कर रही थीं। सारे नगर में एक विद्युत-सी दौड़ गई थी। बुड्ढे, बच्चे, स्त्रियाँ, पुरुष—सभी इस जत्थे के लिए विजय-कामना कर रहे थे।

उसी समय विमल वहाँ पहुँचा। वह सड़क पर जत्थे को देखने के लिए खड़ा हो गया। जत्थे में वे स्वयंसेवक थे, जिनका नेतृत्व कभी स्वयं उसी ने किया था। यदि वह सम्मान-सहित जेल से छूट कर आता तो आज वह उस जत्थे का अधिनायक होता। स्वयंसेवकों ने विमल को देखा। उनके देखने में घृणा और दया का अपूर्व भाव भरा हुआ था। विमल उस दृष्टि को सहन न कर सका। यदि पृथ्वी फट जाती तो वह उसमें समा जाता। उसे आत्म-ग्लानि हो रही थी। वह कुछ देर तक सोचता रहा और फिर जत्थे के साथ ही सड़क के एक ओर चल दिया। जत्था कुछ दूर आगे पहुँचा तो लोगों ने 'भारतमाता की जय' बोली। स्वयंसेवकों ने भी 'भारतमाता की जय' के नाद से आकाश हिला दिया। विमल के मुख से भी अनायास 'भारतमाता की जय' निकल पड़ी। लोगों ने इसे देखा, लोगों ने इसे सुना। स्वयंसेवकों ने इसे देखा, स्वयंसेवकों ने इसे सुना। विमल के ऊपर आवाज़ें कसी जाने लगीं।

'कायर!'—एक ने कहा।

'देशद्रोही!'—दूसरे ने कहा।

'माफ़ी माँग कर आ गया!'—तीसरा बोला।

'लँहगा और चूड़ियाँ पहन कर घर बैठ जा!'—चौथा चिल्लाया।

'मुख दिखाने में शर्म भी नहीं आती!'—कुछ और लोगों ने पुकार कर कहा।

विमल का रक्त खौलने लगा। उसका मुख तमतमा गया। वह ज़ोर से चिल्ला कर बोला—ठहर जाओ!

स्वयंसेवक मन्त्र-मुग्ध की भाँति वहीं खड़े हो गए। उनका गाना बन्द हो गया। वे और भीड़ सब विमल की ओर आश्चर्य से देखने लगे।

'मैं कायर नहीं हूँ, मैं देशद्रोही नहीं हूँ।'—विमल चिल्ला कर बोला।

'फिर माफ़ी माँग कर क्यों आए?'—एक स्वयंसेवक ने पूछा।

'माफ़ी मैंने जेल के कष्टों से घबरा कर नहीं माँगी। मैं मातृभूमि के लिए उसी प्रकार मर सकता हूँ, जिस प्रकार आप सब!'

'फिर किसलिए?'—प्रश्न हुआ।

'माँ के लिए। मेरी माँ मृत्यु-शय्या पर है। यदि तुममें से कोई अपनी माँ को उतना ही मानता है, जितना मैं मानता हूँ, तो वह मेरी स्थिति को समझ सकेगा।'

भीड़ में सब हँसने लगे।

'आप लोगों को विश्वास नहीं है तो देखिए, मैं अभी जेल में जाने के लिए तैयार हूँ।'—इतना कह कर विमल तेज़ी से स्वयंसेवकों के सामने पहुँचा और अधिनायक से उसने झण्डा छीन कर अपने हाथ में ले लिया। सब लोग विस्मय से यह देख रहे थे।

'भारतमाता की जय!'—विमल ने पुकारा!

'भारतमाता की जय!'—भीड़ ने पुकारा।

जत्था विमल की अधिनायकता में धरना देने के लिए चल दिया। उस समय विमल भी सब के साथ गा रहा था—

सुनो, सुनो, प्यारी भारतमाता का करुणामय आह्वान।
आओ, वीरो, राष्ट्र-यज्ञ में देने को अपना बलिदान!

१४

पहला जत्था शीघ्र ही गिरफ़्तार हो गया। विमल से पुलिस बहुत बिगड़ी हुई थी, क्योंकि वह एक दिन पहले तो माफ़ी माँग कर आया था और दूसरे ही दिन फिर राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेने लगा था। यही नहीं जैसे ही वह जेल में पहुँचा, जेलर की वक्र-दृष्टि उसके ऊपर गई।

'तुम अपने लिखे को भूल गए?'

'वह मेरी भूल थी।'

'उस दिन वह भूल नहीं थी?'

'उस दिन भी वह भूल थी, परन्तु उस दिन मुझे ऐसा बताने वाला कोई नहीं था। आज भी वह भूल है, परन्तु आज मुझे उसका ज्ञान हो गया है।'

'किसने कराया?'

'माँ ने!'

'बीमार माँ ने?'

'हाँ। यदि मैं दृढ़तापूर्वक इस बार पार हो जाऊँगा तो उसका श्रेय मेरी माँ को होगा।'

'परन्तु इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।'

'जो कुछ भी हो।'

परिणाम वास्तव में बहुत बुरा हुआ। विमल को एक तङ्ग कोठरी में बन्द कर दिया। पहले विमल जिस कोठरी में बन्द किया गया था, वह कोठरी उससे बहुत छोटी तथा अँधेरी थी। इसमें कोई खिड़की नहीं थी। द्वार छोटा सा था, लोहे का। उसी में ऊपर की ओर कुछ सींकचे थे, जिसमें होकर कुछ हवा आ-जा सकती थी। मच्छरों का तो वहाँ निवास ही था। वह कोठरी केवल दो बार खोली जाती थी, प्रातःकाल और तीसरे पहर। उसी समय मैले की प्यालियाँ हटा ली जाती थीं और भोजन दे दिया जाता था। बीच में तो मैला वहीं पड़ा दुर्गन्ध करता रहता था।

काम करने के लिए रामबाँस का कूटना विमल को मिला था। रामबाँस की कुटाई कितनी कठिन थी, यह विमल जानता था। उसने पहले कई बार अपनी कोठरी से क़ैदियों को गाते हुए सुना था—

"रामबाँस की कड़ी मशक़्क़त चक्की से इन्कार नहीं,
जेलख़ाने का बुरा रवैया, कोई किसी का यार नहीं।"

और वास्तव में रामबाँस की कड़ी मशक़्क़त थी, उसे कूटने वाले को अपने हाथों को तो आहत ही कर लेना पड़ता था। परन्तु विमल सहर्ष उस काम को करता था। उसके हृदय में अब एक अपूर्व बल आ गया था। उसे अब वे कष्ट, कष्ट नहीं प्रतीत होते थे। अब जब उसे माँ की याद आती थी, तो वह मातृभूमि की भी याद कर लिया करता था और सदा इसी बात का विचार किया करता था कि उसके लिए संसार में दो शब्द पूज्य थे, "माँ और मातृभूमि"। अपनी उस दृढ़ता को और भी दृढ़ करने के लिए उसने इसी बात का निश्चय कर लिया था कि वह बाह्य संसार से कोई भी सम्पर्क न रक्खेगा। न वह किसी को पत्र लिखता था, न किसी से मिलता था। एक बार शारदा उससे मिलने

आई थी, परन्तु उसने कहलवा भेजा कि वह अब उनसे जेल के बाहर ही मिलेगा।

इस प्रकार कुछ दिन बीते थे कि राजनैतिक क़ैदियों को पता लगा कि रोटियाँ बनाने का आटा क़ैदी लोग पैरों से गूँधते हैं। इस बात की शिकायत विमल ने उस दिन सुपरिण्टेण्डेण्ट से की। उत्तर में कहा गया—यदि अच्छा खाना खाना हो तो माफ़ी माँग लो।

यही नहीं, उस दिन जो दाल आई, उसमें विमल ने देखा कि काले-काले असंख्य कीड़े ऊपर तैर रहे थे। वे भी दाल के साथ ही दल दिए थे और उसी के साथ पका भी दिए थे। इस प्रकार के भोजन को अन्य क़ैदी तो खा सकते थे, परन्तु राजनैतिक क़ैदियों ने ऐसा करना उचित न समझा। अनशन-व्रत शुरू हो गया। विमल ने प्रयत्न करके सभी जत्थे वालों के पास समाचार भिजवा दिया था, ज्योंही जेलर ने सुना, वह जल-भुन कर ख़ाक हो गया, उसने विमल को ही इस रोग की जड़ समझा। पहले ही वह उससे जला हुआ था, अब तो उसका क्रोध सीमा को पार कर गया था। शीघ्र ही तार द्वारा स्वीकृति मँगा कर अन्य सब राजनैतिक क़ैदी दूसरी जेलों में भेज दिए गए। विमल को वहीं रख लिया गया। जेलर अपने प्रतिहिंसा के भाव का प्रदर्शन करना चाहता था।

❈ ❈ ❈

जेलर की प्रतिहिंसा शुरू हुई और विमल का साहसपूर्वक कष्ट सहन। उसको बेड़ियाँ पहना दी गईं, परन्तु उसने चूँ नहीं किया। वह किसी प्रकार भोजन करने को तैयार नहीं था, जब तक कि उसके साथ मनुष्यता का व्यवहार नहीं किया जाय। यह अत्याचार की पहली श्रेणी थी। जब विमल इससे विचलित न हुआ, तो उसे उन क़ैदियों के साथ बन्द कर दिया गया, जो हत्या या डकैती करके आए थे। जेलर ने सोचा था कि वह उनके बीच में रह कर घबरा जायगा। परन्तु हुआ इसके विरुद्ध। रात भर क़ैदी विमल का राजनैतिक विषयों पर व्याख्यान सुनते रहे। और फल यह हुआ कि विमल एक ऐसी अकेली कोठरी में बन्द किया गया, जिसका नाम जेल भर में बहुत बदनाम था। उसमें किसी क़ैदी ने फाँसी लगा कर आत्म-हत्या कर ली थी और सबका यह विश्वास था कि उस कोठरी में उसी व्यक्ति का भूत निवास करता था। यह विश्वास इतना गहरा था कि जो क़ैदी भी उसमें रक्खा जाता था, वही बीमार हो जाता था।

एक दीवार में हथकड़ी टँगी हुई थी और उन्हीं में विमल के हाथों को कस कर रात भर के लिए उसको खड़ा कर दिया। विमल कई दिनों का भूखा था। शरीर शिथिल हो रहा था। गर्मी सख़्त पड़ रही थी। कोठरी में वायु का प्रवेश भी नहीं हो रहा था। ऐसी दशा में रात भर उसको हथकड़ी लगा कर खड़ा रक्खा गया। उसका शरीर इतना आघात सहन न कर सका। प्रातःकाल जब उसके हाथ खोले गए तो वह बेहोश पाया गया। उसे कुछ ज्वर भी हो रहा था।

विमल को इसी दशा में अस्पताल ले जाया गया। उसकी अधिक चिन्ता नहीं की गई। किसे उसकी या उसके जीवन की चिन्ता होती? डॉक्टर अवश्य कुछ सहृदय था, परन्तु वह कुछ अधिक नहीं कर सकता था।

कई दिनों तक विमल इसी प्रकार पड़ा रहा। उसकी दशा चिन्ताजनक हो गई थी। उस समय शारदा विमल से मिलने आई। उस दिन विमल ने आँखें खोली थीं और दो-एक शब्द अपने मुख से निकाले थे।

डॉक्टर ने शारदा को देख कर कहा—विमल सदा बेहोशी में 'माँ' पुकारा करता है। क्या तुम्हारी माता यहाँ नहीं आ सकती थीं?

शारदा के नेत्रों में आँसू भर आए।

'नहीं।'—उसने रोते हुए उत्तर दिया।

'क्यों?'

'उसकी...... मृत्यु हो गई!'

'मृत्यु! कैसा दुर्भाग्य है!'

'उसको यह समाचार न देना, उसका हृदय टूट जायगा।'

'नहीं दूँगा, विश्वास रक्खो।'

विमल अपनी अन्तिम श्वासें ले रहा था, शारदा ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए पुकारा—'भैया!' विमल ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं और क्षीण स्वर में कहा—'शारदा'!

'हाँ भैया, मैं हूँ, शारदा!'

'माँ नहीं आईं?'

'नहीं आ सकीं।'

'अच्छी हैं वह?'

'हाँ।'—शारदा ने बड़ी कठिनता से आँसुओं को रोकते हुए कहा।

'मैं तो जा रहा हूँ, शारदा!'

'ऐसा न कहो, भैया!'—शारदा रोती हुई बोली।

'अब मैं कायर नहीं हूँ, बहिन! अब मुझे मृत्यु से डर नहीं है।'

'तुम वीर हो, भैया!'

विमल का टिमटिमाता हुआ दीपक बुझने लगा, परन्तु बुझने के पहले उसने शारदा से कह दिया—माँ से जाकर कह देना कि मरते समय मेरे होठों पर दो शब्द थे।

'माँ और मातृभूमि'

❈ ❈ ❈

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर]

इटली का शासन-विधान

इटली यूरोप का प्राचीनतम देश है। यूरोप के किसी भी राष्ट्र का राजनैतिक इतिहास इतना प्राचीन तथा मनोरञ्जक नहीं है, जितना इटली का। इटली दो भागों में बँटा हुआ है—उत्तरीय तथा दक्षिणीय। उत्तरीय भाग में लॉम्बॉर्डी, पीडमाण्ट, टसकनी तथा वनेशिया हैं। दक्षिणीय भाग में रोम, नेपल्स का प्राचीन राज्य तथा सारडिनिया और सिसिली के द्वीप-पुञ्ज हैं। सारा देश ६०,००० वर्ग मील में फैला हुआ है और इसकी आबादी ३ करोड़ ८० लाख से भी अधिक है।

रोम की स्थापना ईसा से सात सौ वर्ष पूर्व की गई थी। क्रमशः इस नगर ने आशातीत उन्नति की। इसका अधिकार चारों तरफ़ फैलने लगा। यहाँ तक कि एक समय रोम का आधिपत्य तत्कालीन तमाम संसार में फैल गया था। संसार की तमाम सड़कें रोम को जाती थीं। कई सौ वर्ष तक इटली सार्वभौम साम्राज्य रहा और संसार की सभ्यता का केन्द्र माना जाता था। परन्तु 'हर कमाले रा ज़वाल' के अनुसार धीरे-धीरे रोम साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। पाँचवीं शताब्दी में तो इसका पूरा पतन हो गया। उत्तर से इटली पर आक्रमण होने लगे। आक्रमणकारियों की सेनाओं ने देश को अच्छी तरह रौंद डाला, नगरों को नष्ट कर दिया, शासन-व्यवस्था को तहस-नहस कर डाला और सारे देश में अशान्ति मचा दी। दसवीं सदी तक इटली में कई राज्य स्थापित हुए। परन्तु देश में अशान्ति मची ही रही।

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इटली में पुनः जीवन-सञ्चार हुआ। उत्तरीय भाग के नगरों ने पुनः उन्नति करना प्रारम्भ किया। राजकुमारों और सामन्तों (ड्यूकों) ने अपने अधिकारों को स्थायी बनाया। कम्यूनिस्टों और प्रजातन्त्रवादियों ने नगरों में शान्ति स्थापित की। इटली में इस समय सैकड़ों राज्य थे, जो बहुधा आपस में लड़ा करते थे। इन राज्यों को मिला कर इटली को एक करना—यह राजनीतिज्ञों के सामने एक महान समस्या थी। पर इटली के भाग्य में अभी सुख नहीं बदा था, वहाँ तो स्थानीय देशभक्ति का बोलबाला था। लोगों की मनोवृत्ति स्थानीय थी। राष्ट्रीय भाव को कोई स्थान ही न था।

सन् १७६६ में इटली के भाग्य कुछ पलटे। उस वर्ष नेपोलियन ने इटली पर धावा किया। उसकी विजयिनी सेना ने देश को अपने अधिकार में कर लिया। नेपोलियन ने अनेक छोटे-छोटे राज्यों को मिला कर एक प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना की और तत्पश्चात् तमाम देश को एक करके फ्रान्स के अधीन कर दिया। कुछ समय तक इटली एक बना रहा। परन्तु नेपोलियन के साम्राज्य के पतन होते ही इटली में वही पुराने नज़्ज़ारे दिखाई देने लगे।

सन् १८१४-१५ में वीयना नामक स्थान में एक कॉङ्ग्रेस हुई। उसके सामने सबसे कठिन प्रश्न इटली का ही था। कॉङ्ग्रेस का कोई भी सदस्य इटली से सहानुभूति नहीं रखता था। ऑस्ट्रिया अपना उल्लू सीधा करना चाहता था और चाहता था कि इटली एक न होने पावे तथा दुर्बल बना रहे। इटली के राज्यों पर ऑस्ट्रिया अपना आधिपत्य जमाना चाहता था। वीनिशिया और मिलान ऑस्ट्रिया को सौंप दिए गए। पार्मा, माडना, टसकनी, नेपल्स आदि विदेशी राष्ट्रों को सौंप दिए गए। रोम पोप को दे दिया गया। इस भाँति वीयना की कॉङ्ग्रेस ने इटली की एकता को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

पर कॉङ्ग्रेस एकता के भाव को नष्ट नहीं कर सकती थी। स्वतन्त्रता और एकता का महत्व इटली के लोग समझ चुके थे। जब नेपोलियन हेलना में क़ैद था तो उसने कहा था कि संसार की कोई भी कॉङ्ग्रेस इटली को एक होने से रोक नहीं सकती। उसने लिखा था कि इटली की भाषा, रीति और साहित्य की एकता अवश्यमेव इटली में राजनीतिक एकता स्थापित करेगी; भले ही इसमें कुछ देर लग जावे।

एकता के भाव का श्रीगणेश सारडिनिया के राज्य में हुआ, जिसमें पीडमाण्ट और सेवाय भी शामिल थे।

सन् १८४८ में सारडिनिया के राजा चार्ल्स एल्बर्ट ने जनता को राजनीतिक स्वतन्त्रताएँ प्रदान कीं। चार्ल्स एल्बर्ट के उपर्युक्त कार्य ने ऑस्ट्रिया को क्रोधित कर दिया। फल-स्वरूप एल्बर्ट को सिंहासन छोड़ना पड़ा। उसके पुत्र ने सिंहासन पाने पर सन् १८४८ के विधान को वापस लेने से इन्कार कर दिया, यद्यपि उस पर बहुत दबाव डाले गए ? अन्य राज्यों में भी जनता को विधान दिए गए थे। पर वे सब दूसरे वर्ष वापस ले लिए गए थे। अस्तु, अगले बीस वर्षों में सारडिनिया ने इटली में एकता स्थापित करने का भगीरथ प्रयत्न किया।

प्रारम्भ में इस आन्दोलन का नेता था, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ कवूर (Cavour) जो सन् १८५२ में सारडिनिया का प्रधान मन्त्री था। कवूर को इटली का बिसमार्क समझना चाहिए। उसकी धारणा थी कि ऑस्ट्रिया ही इटली की एकता के मार्ग में सबसे बड़ा काँटा है। जब तक यह काँटा दूर न किया जावेगा, तब तक इटली में एकता की स्थापना नहीं की जा सकती। पर ऑस्ट्रिया को युद्ध में पराजित करना सारडिनिया की ताक़त के बाहर की बात थी। अतः कवूर ने निश्चय किया कि यूरोपियन राष्ट्रों से मिल कर ऑस्ट्रिया को हराया जावे। सन् १८५५ में फ्रान्स और ऑस्ट्रिया में युद्ध हो रहा था। सारडिनिया ने फ्रान्स की इस युद्ध में सहायता की और इस भाँति फ्रान्स से मित्रता स्थापित की। सन् १८५९ में फ्रान्स और इटली ने मिल कर ऑस्ट्रिया को हराया। लॉम्बॉर्डी ऑस्ट्रिया से लेकर सारडिनिया को दे दिया गया। पर वनेशिया ऑस्ट्रिया के पास बना रहा।

इटली में आन्दोलन बढ़ता ही गया। अनेक छोटे राज्यों ने अपने विदेशी राजाओं को सिंहासन से उतार दिया और सारडिनिया में शामिल होने की इच्छा प्रकट की। गेरीबाल्डी के नेतृत्व में सन् १८६० में नेपल्स और सिसली ने अपने विदेशी शासकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और सारडिनिया के अधीन होने की इच्छा की। इस भाँति वनेशिया जो अब भी ऑस्ट्रिया के अधीन था तथा रोम को छोड़ कर शेष तमाम इटली सारडिनिया के अधीन हो गया।

सन् १८६६ में प्रशा और ऑस्ट्रिया में युद्ध छिड़ गया। इधर प्रशा के मारे ऑस्ट्रिया का नाक में दम हो रहा था, उधर इटली की सेना ने वनेशिया पर अधिकार कर लिया और ऑस्ट्रिया को इटली से खदेड़ दिया। इटली की सेनाएँ रोम पर भी अधिकार कर लेना चाहती थीं पर फ़्रान्स की सेनाएँ रोम की रक्षा करने आ गईं। पाँच वर्ष तक लगातार फ्रान्स की सेना रोम की रक्षा करती रही। पर सन् १८७० में प्रशा से युद्ध छिड़ने पर फ़्रान्स को अपनी सेना इटली से बुला लेनी पड़ी। अवसर पाकर इटली की सेना ने रोम पर अधिकार कर लिया और अब तमाम इटली एक हो गया।

सारडिनिया का इटली का राज्य बनने के पश्चात्, सारडिनिया का सन् १८४८ का विधान ही इटली का विधान बन गया और वही विधान इटली का वर्तमान विधान है। इसके संशोधन के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया है। इस ख़ामोशी का मतलब इटली में यह लगाया गया है कि क़ानून द्वारा मामूली ढङ्ग से संशोधन किया जा सकता है। यदि इटली की पार्लामेण्ट कोई क़ानून बनाती है, जो विधान की किसी बात के विपरीत होता है तो विधान की वह बात रद्द हो जाती है और क़ानून लागू माना जाता है और उसी हद तक इटली के विधान में संशोधन हो जाता है। इस भाँति इटली का लिखित-विधान में इङ्गलैण्ड के अलिखित-विधान की भाँति संशोधन किया जा सकता है—और उसी ढङ्ग से पार्लामेण्ट के किसी भी निश्चय को इटली की कोई भी अदालत रद्द नहीं कर सकती।

यूरोपीय देशों के विधानों में इटली का विधान सबसे छोटा है। इटली में राजतन्त्र है। इटली के राजा के वैसे अधिकार नहीं होते हैं जैसे इङ्गलैण्ड के राजा के होते हैं। राजा के अधिकारों का प्रयोग उत्तरदायी मन्त्रियों की निगरानी में होता है। विधान में स्पष्ट कहा गया है कि तमाम क़ानून और डिग्रियों में मन्त्रियों के हस्ताक्षर होने चाहिए। मन्त्री पार्लामेण्ट की छोटी सभा, जिसे 'चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़' कहते हैं—के प्रति उत्तरदायी होते हैं। जब तक उस सभा का बहुमत उनके पक्ष में होता है, तब तक वे अपने पद पर बने रहते हैं। सन् १९२३ के पूर्व चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ में अनेक पार्टियाँ थीं। अतः प्रत्येक मन्त्रि-मण्डल को कई दलों की सहायता लेनी पड़ती थी। फलतः एक मन्त्रि-मण्डल बहुत समय तक नहीं टिकता था। अब तक बहुत कम मन्त्रि मण्डल एक या दो वर्ष से अधिक टिक सके थे। सन् १९२३ में इटली में एक सुधार जारी किया गया था कि जो राजनीतिक पार्टी चुनाव में सबसे अधिक मज़बूत दिखाई दे, उसी को चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ में सबसे अधिक स्थान मिलना चाहिए।

प्रधान मन्त्री का चुनाव इङ्गलैण्ड के ढङ्ग पर होता है। चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ के बहुमत से पार्टी के नेता को राजा बुला कर मन्त्रि-मण्डल बनाने को कहता है। प्रत्येक मन्त्री पार्लामेण्ट का सदस्य होता है। मन्त्री को दोनों सभाओं में बोलने का अधिकार है। प्रत्येक मन्त्री के नीचे एक सेक्रेटरी होता है, जिसे प्रधान मन्त्री ही नियुक्त करता है। भिन्न-भिन्न विभागों का सङ्गठन फ़्रान्स के ढङ्ग पर किया गया है। पर इटली के प्रधान मन्त्री के अधिकार फ़्रान्स के प्रधान मन्त्री के अधिकारों से कहीं अधिक हैं।

इटली के प्रधान मन्त्री का अपने मन्त्रि-मण्डल पर वास्तविक अधिकार होता है। इस मन्त्रि-मण्डल पर फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड—दोनों स्थानों के मन्त्रि-मण्डलों की छाया पड़ी है। पार्लामेण्ट के प्रति उत्तरदायित्व के प्रश्न में इङ्गलैण्ड की नक़ल की गई है। सङ्गठन में, कार्यों में, तथा कार्य करने के ढङ्ग में फ़्रान्स का अनुकरण किया गया है। इटली में भी क़ानूनों को मोटा रूप दे दिया जाता है। बाक़ी कार्य ऑर्डिनेन्स तथा डिग्रियों द्वारा किया जाता है। इटली में मन्त्रियों के ऑर्डिनेन्स-अधिकार फ़्रान्स की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। डिग्रियों की इटली में भरमार रहती है।

यूरोप की अन्यान्य पार्लामेण्टों की तरह इटली की पार्लामेण्ट में भी दो सभाएँ होती हैं—छोटी और बड़ी। बड़ी सभा को सिनेट कहते हैं और छोटी सभा का नाम जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं, चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ है। परन्तु बड़ी सभा का सङ्गठन संसार की अन्य ऐसी सभाओं से भिन्न है। अगर आप इङ्गलैण्ड तथा कनाडा की बड़ी सभाओं को एक में मिला दीजिए तो इटली की बड़ी सभा बन जावेगी। इसके कुछ सदस्य तो ख़ानदानी होते हैं और अधिकतर सदस्य ज़िन्दगी भर के लिए नियुक्त किए जाते हैं। इटली के बादशाही वंश के शाहज़ादे ख़ानदानी अधिकार के कारण निश्चय ही सिनेट के सदस्य होते हैं। प्रधान मन्त्री की सलाह से राजा सिनेट के सदस्यों के नियुक्त करता है। चालीस वर्ष से कम का कोई भी पुरुष सिनेट का सदस्य नहीं बनाया जा सकता। ये सदस्य निम्न-लिखित चार प्रकार के होते हैं :—(१) बिशप आदि गिर्जाघर के ऊँचे अधिकारी ; (२) जो लोग सरकारी ऊँचे, सैनिक या नाविक पदों पर हैं या रह चुके हैं ; (३) वे लोग जिन्होंने विज्ञान या साहित्य में कुछ कमाल कर दिखाया है, और (४) वे लोग जो निश्चित वार्षिक टैक्स देते हैं।

सिनेट के सदस्यों की संख्या निश्चित नहीं है। इसे न विधान ने ही निश्चित किया है और न क़ानून ने ही कोई निश्चित संख्या बतलाई है। सन् १८७० से कोई बिशप या गिर्जाघर का ऊँचा अधिकारी सिनेट का सदस्य नहीं बनाया गया है, क्योंकि पोप और सरकार में बड़ी तनातनी रहती है।

यों तो जहाँ तक लिखित-विधान का सम्बन्ध है बिलों को छोड़ कर, जो सर्वदा छोटी सभा में ही जन्मते हैं, सिनेट के अधिकार चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ के समान ही हैं, पर वास्तव में सिनेट के अधिकार चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ से बहुत कम हैं। क्योंकि अधिकतर बिल आदि छोटी सभा से ही प्रारम्भ होते हैं। छोटी सभा द्वारा पास किए हुए किसी प्रस्ताव को रद्द करने की हिम्मत सिनेट को बहुत कम होती है। सिनेट बहुधा संशोधन पेश करती है पर जब चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ संशोधन को स्वीकार नहीं करता तो वह चुप हो जाती है, अन्यथा मन्त्रि-मण्डल नवीन सदस्यों को नियुक्त करा कर अपनी बात सिनेट से स्वीकार करा सकता है। मन्त्रि-मण्डल ने ऐसा दो बार किया भी है। सन् १८६० में विरोधियों को हराने के लिए ७५ सदस्य एकदम सिनेट में नियुक्त किए गए थे। सन् १८९२ में ४२ नवीन सदस्य नियुक्त किए गए थे। तब से चैम्बर की बात को मानने का सिनेट ने सबक़ सीख लिया है।

सिनेट का मन्त्रि-मण्डल पर कोई अधिकार नहीं रहता। मन्त्री केवल चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ के प्रति ही उत्तरदायी होते हैं। फलतः छोटी सभा का ही शासन-नीति पर पूरा अधिकार होता है।

चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ में ५३५ सदस्य होते हैं। इटली के प्रत्येक नागरिक को जिसकी उम्र २१ वर्ष से कम नहीं है, मताधिकार प्राप्त है। 'गुप्त गोलक' द्वारा चुनाव होता है। पहिले प्रत्येक स्थान से एक सदस्य चुना जाता था, पर आगे चल कर चुनाव-क्षेत्र बड़े कर दिए गए और प्रत्येक स्थान से दो से लेकर पाँच सदस्य तक चुने जाने लगे। पर इससे भी लोग सन्तुष्ट नहीं हुए और पुनः पुराने ढङ्ग से चुनाव होने लगा। सन् १९१९ में बड़े-बड़े चुनाव-क्षेत्रों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार हुआ था। अन्त में सन् १९२३ में मुसोलिनी के शासन ने इस प्रश्न को अपने हाथ में लिया और चुनाव का एक नया ढङ्ग निकाला। जब चुनाव का समय आता है तब प्रत्येक राजनीतिक पार्टी तमाम देश भर के लिए अपने उम्मेदवारों की सूची प्रकाशित करती है। लोग किसी एक उम्मेदवार को अपना वोट न देकर एक सूची को देते हैं। जिस सूची को सब से अधिक वोट मिलते हैं, वे वोट कुल का बहुमत चाहे न भी हो—उसे तमाम चैम्बर के दो-तिहाई स्थान दे दिए जाते हैं। सन् १९२४ के चुनाव में 'फ़ेसिस्ट' सूची को कुल ४० प्रति सैकड़ा वोट मिले थे। परन्तु फ़ेसिस्ट-पार्टी को ३५६ जगहें दे दी गई थीं। बाक़ी जगहें शेष पार्टियों में उनकी शक्ति के अनुसार बाँट दी गई थीं। उपर्युक्त योजना द्वारा मुसोलिनी चाहता था कि किसी एक पार्टी का सभा में विशेष बहुमत हो और वह पार्टी पूरी तरह उत्तरदायी हो। अगर किसी एक पार्टी का सभा में विशेष बहुमत न होगा तो किसी भी पार्टी का सभा पर अधिकार नहीं होगा और फलतः कोई भी पार्टी पूर्णतया उत्तरदायी नहीं होगी। पर मुसोलिनी की उपर्युक्त योजना लोगों को पसन्द नहीं आई। लोग नहीं चाहते थे कि ४० प्रति सैकड़ा वोट पाने वाली पार्टी को सभा में दो-तिहाई जगहें मिल जावें। अतः लोगों ने इस योजना का घोर विरोध किया। विरोध से सहम कर सन् १९२५ में मुसोलिनी ने घोषणा की कि चुनाव के क़ानूनों

को सुधारने के लिए तथा राष्ट्रीय विधान में संशोधन करने के लिए एक विशेष कमीशन नियुक्त किया जावेगा। शीघ्र ही वह कमीशन नियुक्त किया गया और उसने एक योजना तैयार की। कमीशन का कहना था कि चैम्बर के सदस्यों की संख्या बढ़ा कर ६०० कर दी जावे। ३०० सदस्य भौगोलिक ढङ्ग (Geographical Basis) पर चुने जावें और शेष तीन सौ सदस्य (Vocational Basis) पर। मन्त्रि-मण्डल केवल चैम्बर के प्रति ही उत्तरदायी न रहा करे। अगर मन्त्रि-मण्डल चैम्बर में हार जावे तो उसे अधिकार रहे कि वह चैम्बर तथा सिनेट की संयुक्त सभा में अपील कर सके। पर अभी तक उपर्युक्त योजना को कार्यान्वित नहीं किया गया है।

चैम्बर का चुनाव पाँच वर्ष के लिए होता है। पर प्रधान मन्त्री की सलाह पर राजा कभी भी चैम्बर को तोड़ सकता है। चैम्बर की बैठक प्रत्येक वर्ष होती है। बहुधा लगातार बारह महीने बैठक हुआ करती है। चैम्बर स्वयम् अपना सभापति चुनती है, चैम्बर का काम कमिटियों द्वारा होता है। सभा के तमाम सदस्य ६ विभागों में बाँट दिए जाते हैं। जब किसी कमिटी की आवश्यकता पड़ती है तो प्रत्येक विभाग से एक-एक सदस्य ले लिया जाता है और इस भाँति ६ सदस्यों की एक कमिटी बन जाती है। कुछ महत्वपूर्ण कमिटियों का निर्माण तमाम सभा द्वारा होता है। 'नियम-कमिटी' (Committee on Rules) को सभापति नियुक्त करता है।

चैम्बर में मन्त्रियों से प्रश्न किए जा सकते हैं। प्रश्नों से सम्बन्ध रखने के नियम अधिकतर वही हैं जो फ़्रान्स में हैं। केवल एक बात में भेद है। फ़्रान्स में नियम यह है कि मन्त्री के उत्तर दे देने के पश्चात् ही वाद-विवाद होता है और वोट लिए जाते हैं, परन्तु इटली में ऐसा एक सप्ताह के बाद होता है, ताकि इसी बीच में सदस्यगण मन्त्रियों के उत्तर को ठीक तरह मनन कर लें और उस पर जनता की राय भी जान लें। सन् १६२३ से प्रश्नों का महत्व बहुत घट गया है। क्योंकि सभा में मुसोलिनी का इतना बहुमत रहता है कि वह प्रश्नों की परवाह ही नहीं करता। उपर्युक्त बातों को छोड़ कर चैम्बर का काम करने का शेष ढङ्ग वही है, जो अन्य देशों की ऐसी धाराओं का होता है। तमाम आर्थिक बिलों का श्रीगणेश चैम्बर में ही होता है। सरकारी बिल आदि मन्त्रियों द्वारा उपस्थित किए जाते हैं। अन्य बिलों को सभा का कोई भी सदस्य पेश कर सकता है। प्रत्येक बिल दोनों सभाओं में तीन-तीन दफ़े पेश होता है। तत्पश्चात् उसे राजा की स्वीकृति मिलती है। राजा सर्वदा अपनी स्वीकृति दे देता है।

इटली में क़ानून दो प्रकार के होते हैं जैसा कि फ़्रान्स में भी है—(१) मामूली क़ानून और (२) शासकीय क़ानून। पर दोनों में इतना अधिक भेद नहीं है। पाठकों को स्मरण होगा कि फ़्रान्स में किसी सरकारी अफ़सर पर अपना सरकारी काम करने के सिलसिले में मामूली क़ानून द्वारा, मामूली अदालत में मुक़दमा नहीं चलाया जा सकता। पर इटली में विशेष अवसर पर सरकारी नौकर पर मामूली अदालत में मुक़दमा चलाया जा सकता है।

(अगले अङ्क में समाप्त)

❋ ❋ ❋

राष्ट्रीय महायज्ञ में स्त्रियों की आहुतियाँ

[श्री० प्रेमनारायण जी अग्रवाल]

"किसी जाति या राष्ट्र के निर्माण-कार्य में जितनी सहायता पुरुष कर सकते हैं, स्त्रियाँ उनकी अपेक्षा किसी तरह कम सहायता नहीं कर सकतीं।"—वर्नरलैयड

भारत के वर्तमान स्वातन्त्र्य महासंग्राम के प्रधान सेनापति, शान्ति के अनन्य पुजारी, महात्मा गाँधी ने आज से लगभग सवा साल पूर्व जब अहिंसात्मक युद्ध की घोषणा की थी, उस समय प्रत्येक भारतीय के चेहरे दासता-जनित दैन्यता सूचक आशा की सुनहली किरणों से खिल उठे थे। देशी-विदेशी विद्वानों तथा समाचार-पत्रों ने जो भारत के सच्चे हितू और शुभचिन्तक होने का दम भरते हैं, एक महान् आपत्ति की कल्पना की ! महासेनानी गाँधी को उन्होंने इसके अवश्यम्भावी भयङ्कर दुष्परिणामों की सूचना देकर अपने निर्णय पर पुनः विचार करने का ज़ोरदार प्रयत्न किया। परन्तु दरिद्रनारायण के सच्चे प्रतिनिधि गाँधी को ऐसा करने की ध्वनि अन्तरात्मा से मिली थी, उनको इनकी चेतावनियों में कुछ सार नहीं दिखाई दिया। उन सहृदय व्यक्तियों और पत्रों को धन्यवाद देते हुए उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि :—

It was in Lahore I had told a journalist that I saw nothing on the Horizon to warrant civil resistance. But suddenly, as in a flash, I saw the light in the Asharam. Self-confidence returned. Englishmen and some Indian critics have been warning me against the hazard. *But the voice within is clear.* I must put forth all my efforts or retire all together and for all time from public life. I feel that now is the time or it will be never. (Young India Vol. XII No. 14. 3rd April, 1930).

आज संसार के समस्त राष्ट्र उस "ख़तरनाक अर्द्ध-नग्न फ़क़ीर" के सेना-सञ्चालन के अनोखे ढङ्ग पर मुग्ध हैं। वे अत्यन्त आश्चर्यान्वित होकर इस स्वातन्त्र्य महासमर को, जो पराधीन देशों के स्वाधीनता प्राप्त करने के इतिहास में एकदम नवीन है, श्रेष्ठता और शस्त्रीकरण की निस्सारता पर अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं। उनको स्वप्न में भी आशा न थी कि इस अल्पकाल के संग्राम के प्रभाव से संसार की सर्वश्रेष्ठ और बलशाली शक्ति का मज़बूत आसन भी डाँवाडोल हो जायगा और उसी गाँधी के, जिसने संग्राम छेड़ने से पहिले घुटने टेक कर भारत-सम्राट के प्रतिनिधि वायसरॉय से प्रार्थना की थी, सम्मुख घुटने टेक देने पड़ेंगे। नमक-क़ानून की धज्जियाँ उड़ाई गईं। विदेशी-वस्त्र-बहिष्कार के साथ शराब तथा ताड़ी आदि पर ज़ोरदार धरना बैठा दिया गया। करबन्दी का कार्य भी प्रारम्भ किया ही जाने वाला था कि सरकार की मेशीनरी ढीली पड़ गई—समझौता हो गया। जहाँ सेनापति गाँधी ने पुरुषों को क़ानून तोड़ने की आज्ञा दी थी, वहाँ स्त्रियों को धरना देने की भी !

धरना देने के कठिनतर कार्य में और तत्पश्चात् आन्दोलन के दूसरे क्षेत्रों में सैकड़ों वर्षों से भीषण सामाजिक कुरीतियों के बन्धनों में बुरी तरह जकड़े हुए महिला-समाज ने क्या-क्या कष्ट सहन किए और संग्राम में क्या सहायता दी, हम नीचे की पंक्तियों में उन्हीं को रखने का प्रयत्न करेंगे।

नारी-हृदय कोमलता, दया, सहानुभूति और स्नेह की सजीव प्रतिमा है। जब महात्मा जी ने यह घोषणा की कि यह मेरे जीवन का अन्तिम संग्राम है और इसमें या तो मैं जो चाहता हूँ, उसे करके लौटूँगा, या मेरी लाश समुद्र पर उतराएगी, तो भारतीय वीराङ्गनाओं के दल के दल सामाजिक रूढ़ियों को त्याग की प्रबल अग्नि में भस्मीभूत करके, कौटुम्बिक बन्धनों से छुटकारा पाकर, अपने बन्धु-बान्धवों, पतियों और पुत्रों सहित पर्दों को फाड़ कर (जो वर्षों के निरन्तर परिश्रम करने पर ही हटाया जा सका था) अपनी-अपनी आहुति लेकर इस राष्ट्रीय महायज्ञ में कूद पड़े।

अन्य देशों की भाँति भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति तीन दलों पर अवलम्बित है, जो भिन्न-भिन्न मार्गों को ग्रहण कर अपने अन्तिम लक्ष्य पूर्ण-स्वाधीनता को प्राप्त करना चाहते हैं। पहिला दल है क्रान्तिकारियों (Revolutionaries) का, जो सन् १८५७ ई० से ही अपने विश्वासानुसार पूर्ण स्वाधीनता को अपना ध्येय निर्धारित किए हुए प्रयत्नशील है तथा जो बम और पिस्तौल के बल पर ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त करने के लिए अपने बलिदानों में सबसे आगे है। दूसरा दल उन लोगों का है, जो लिबरल या मॉडरेट (उदार) हैं, और जिनका ध्येय है भारत के लिए वैध (Constitutional) ढङ्ग से स्वराज्य प्राप्त करना। अब रहा तीसरा दल, जो काँग्रेसवादियों का है, जिसके प्रवर्तक और सर्वे-सर्वा गाँधी जी हैं, और जो बिना ख़ून-ख़राबी के पूर्ण अहिंसात्मक रह कर, पूर्ण-स्वाधीनता प्राप्त करने का ज़बरदस्त हामी है। आधुनिक भारत में एक कोने से दूसरे कोने तक अर्थात् कैलाश से कन्याकुमारी तक तथा अटक से कटक तक इसी दल की तूती बोल रही है। करोड़ों की विशाल संख्या में इसके अनुयायी, समर्थक तथा उपासक हैं। वास्तव में यही आधुनिक भारत की सच्ची प्रतिनिधि-संस्था है !

हिंसात्मक क्रान्ति में—

मनुष्य-मात्र का स्वभाव है कि वह एक ही ध्येय को प्राप्त करने के लिए भी भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों के अनुसार विभिन्न मार्गों का अनुसरण करता है। अतएव जब महिला-समाज राष्ट्रीय कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ, तो उसने भी अपनी-अपनी रुचि, स्वभाव और विश्वास के अनुकूल विभिन्न मार्ग पकड़े। तीनों अर्थात् क्रान्तिकारी, लिबरल और काँग्रेस दलों में वह बड़ी लगन से कार्य कर रही हैं। क्रान्तिकारी दल में महिलाएँ जो भाग ले रही हैं, उसका पता अभी हाल ही में पुलिस द्वारा चलाए हुए मुक़दमे से मिला है। क्रान्तिकारी दल के प्रत्येक कार्य, छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा तक गुप्त रीति से किए जाते हैं और उसे भरसक छिपाए रखने का प्रयत्न बराबर जारी रहता है। कभी-कभी जब इनकी कार्यवाहियों का भण्डाफोड़ हो जाता है तो उनके आश्चर्यजनक करतूतों को जनता जान पाती है, परन्तु ठीक-ठीक नहीं। अतएव जब तक क्रान्तिकारिणी रमणियों के साहसी प्रयत्न खुल्लमखुल्ला जनता की दृष्टि में न आवें, तब तक कोई ठीक राय क़ायम नहीं की जा सकती। परन्तु पुलिस की कार्रवाइयों से मालूम होता है कि स्त्रियों का भी इस दल

में भाग है। अभी जो देश के विभिन्न नगरों में षड्यन्त्र के मामले चल रहे हैं; उनसे मेरे कथन की पुष्टि होती हैं, क्योंकि लाहौर के नए षड्यन्त्र केस, देहली तथा कलकत्ता के षड्यन्त्रों में स्त्रियों के नाम आए हैं। उनमें अधिकतर फ़रार हैं। बनारस के एक षड्यन्त्र केस में तो कई सुकुमार बालिकाएँ भी सम्मिलित कर ली गई हैं।

लिबरल दल में—

पुरुष-लिबरलों की भाँति कुछ महिलाओं का भी विश्वास है कि भारत को यदि स्वराज्य दिलाने का कोई सर्वोत्तम उपाय है, तो वह यही वैध (Constitutional) ढङ्ग है। अतः वे इस दल में बड़ी तत्परतापूर्वक कार्य कर रही हैं। प्रथम गोलमेज़ सभा में, जिसमें अधिकतर लिबरल और साम्प्रदायिक प्रतिनिधि ही सम्मिलित हुए थे, दो महिलाएँ, श्रीमती सुब्बारायन और बेगम शाहनवाज़, भारत की प्रतिनिधि बन कर लन्दन गई थीं। वहाँ उन्होंने अपना पार्ट अत्यन्त सुन्दरता तथा विद्वत्तापूर्वक अदा किया था।

अहिंसात्मक संग्राम में—

इस अहिंसात्मक स्वातन्त्र्य-संग्राम में महिला-समाज ने बड़ी विशाल संख्या में भाग लिया। पहिले तो उसका कार्य केवल धरना देना ही था; परन्तु बाद में ज्यों-ज्यों

श्रीमती कमला नेहरू

संग्राम का क्षेत्र बढ़ता गया, उसका भी कार्यक्षेत्र विस्तृत होता गया और उसने अपना कर्तव्य सच्ची लगन से पूरा किया। स्त्रियाँ कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी सभा (Working Committee) की मेम्बर से लेकर प्रान्तों, ज़िलों और बड़े-बड़े शहरों की डिक्टेटर तक हुईं। युवक-हृदय सम्राट पण्डित जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू वर्किङ्ग कमिटी की सदस्य थीं। युक्तप्रान्त की डिक्टेटर श्रीमती उमा नेहरू थीं। इसके अतिरिक्त बम्बई, कलकत्ता और देहली आदि विशाल शहरों की भी डिक्टेटर महिलाएँ रह चुकी हैं। श्रीमती हंसा मेहता बम्बई युद्ध-समिति (War Council) की प्रधाना थीं, जिनके पिता बीकानेर स्टेट के दीवान सर मनुभाई मेहता गोलमेज़ परिषद में भाग लेने लन्दन गए थे, परन्तु आप स्वयम् ब्रिटेन के लन्दन के स्थान पर भारत के लन्दन (जेल) गई थीं। महासेनानी की गिरफ़्तारी के बाद उनके गुरुतर कार्य-भार को सँभालने वाली भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ही थीं। स्वातन्त्र्य-महासंग्राम के प्रारम्भ होने के पहिले वे विदेशों को भारत की वास्तविक परिस्थिति, उत्कृष्टता, स्वराज्य प्राप्त करने के लिए उत्कट अभिलाषा और गाँधी का दिव्य सन्देश सुनाने के लिए जा चुकी थीं। उन देशों ने आपका बड़ा स्वागत किया। लौटने पर संग्राम छिड़ गया और उनको फिर जेल-यात्रा करनी पड़ी।

समस्त संसार के देश दाँतों तले उँगली दबा रहे हैं कि भारतीय स्त्रियों ने इस महासंग्राम में आशातीत भाग लिया, जब कि उनका सामाजिक जीवन अत्यन्त विषम होकर उन्नति-मार्ग में हिमालय पहाड़ की भाँति अड़ा था। उनको इस बात पर कि वे सारे झञ्झटों से छुटकारा पाकर कार्य-क्षेत्र में उतर आईं, देख कर महात्मा का व्यापक प्रभाव समझ में अनायास ही आ जाता है। संसार के पराधीन तथा स्वाधीन देश इस भीषण सामाजिक क्रान्ति से अत्यन्त प्रभावित हुए हैं। वे भली-भाँति समझने लग गए कि समय आने पर भारत अपनी प्राचीनतम रूढ़ियों को, जो शायद वर्षों के अथक परिश्रम से भी न टूट सकती हों, कितनी निर्भयता और निर्दयता से तोड़ कर फेंक सकता है। मि० जॉर्ज स्लोकोम्ब ने, जिन्होंने पं० मोतीलाल नेहरू आदि नेताओं से मिल कर सन्धि का सर्व-प्रथम प्रस्ताव किया था, अमेरिका के सुप्रसिद्ध पत्र 'नेशन' में लिखा था कि "मैंने ऐसी हज़ारों उच्च श्रेणी की हिन्दू-महिलाओं को देखा, जो पर्दे को लात मार कर शराब और विदेशी कपड़ों की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने को घर से बाहर निकल आई थीं और जो सुकुमार ललनाएँ पुलिस द्वारा जुलूस रोके जाने पर रात-भर रास्तों में खड़ी रहती थीं।' एक दूसरे अङ्गरेज़ सज्जन मि० एच० एन० ब्रेल्सफ़ोर्ड ने, जो 'Independent Labour Party' के पार्लामेण्ट में मेम्बर थे तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं, लिखा था कि "हज़ारों करोड़पति तथा मिल-मालिकों की स्त्रियाँ तथा लड़कियाँ केसरिया साड़ी पहिन कर दूकानों पर धरना देती हैं। इनमें सैकड़ों, हिन्दू, पारसी महिलाएँ ख़ुशी से कारागार में निवास कर रही हैं।"

संसार का महिला-समाज भारत के महिला-समाज को सङ्कीर्णता और रूढ़िवाद आदि के व्यर्थ के झञ्झटों में फँसा होने के कारण हीन दृष्टि से देखता था। अब आदर और श्रद्धा-भरी दृष्टि से देखने लगा है। वास्तव में इनके भाग लेने से लड़ाई को जो महत्व प्राप्त हुआ था, उसने तो सरकार के भी छक्के छुड़ा दिए थे। भारत-सरकार तो एक बारगी अत्यन्त घबरा गई थी, उसकी स्थिति डाँवाडोल सी दृष्टिगोचर होने लगी थी। इनकी कार्य-प्रणाली, कर्तव्य-परायणता और कार्य-पटुता को देख कर अपने को उन्नतिशील समझा हुआ अन्तर्राष्ट्रीय महिला-समाज आशा-भरी दृष्टि से भारत की ओर ताकने लगा।

कष्ट-सहन

जब ललनाओं ने महासंग्राम में भाग लेने को पैर बढ़ाया, तो भारत-सरकार के सम्मुख एक भीषण समस्या आ उपस्थित हो गई। इनके साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, यह प्रश्न उसको परेशान करने लगा। कारण यह था कि अभी तक स्त्रियों ने इतना भाग नहीं लिया था तथा सरकार के पास पिछला कोई अनुभव भी नहीं था। नवीन समस्या को सुलझाने में किन्हीं बातों पर विशेष सोच-विचार करने की आवश्यकता थी, क्योंकि दमन एकदम करने से यह लड़ाई महा विकराल रूप धारण कर लेगी। भारतीयों की प्रकृति है कि वे अपने सामने महिला-समाज पर किए गए अत्याचारों को नहीं देख सकते, उनका ख़ून तुरन्त खौलने लग जाता है। भारत के प्राचीन इतिहास में ऐसे सैकड़ों प्रमाण आसानी से ही मिल जाएँगे। दूसरी बात यह थी कि इङ्गलैण्ड आदि पाश्चात्य देश महिलाओं को अत्यन्त आदर और सम्मान की वस्तु समझते हैं। सम्भव था कि भीषण पाशविक और अमानुषिक अत्याचारों से उनके हृदयों में भी उथल-पुथल मच जाती तथा उनकी सहानुभूति भारत के स्वातन्त्र्य-संग्राम के साथ हो जाती। लोकमत की उपेक्षा करना इङ्गलैण्ड की शक्ति के बाहर था। परन्तु चिरञ्जीव रहें भारतमाता की वह प्यारी वीर-सन्तान, जिनके उर्वर मस्तिष्क (Fertile brain) की अपूर्व प्रतिभा ने इस विकट समस्या को आसानी से सुलझा दिया!

कहा जा चुका है कि संग्राम की प्रगति के साथ-साथ महिलाओं का कार्य-क्षेत्र भी विस्तृत होता गया और जहाँ पहिले धरना देने तक ही परिमित था, बढ़ कर संग्राम की प्रत्येक शाखा-उपशाखा में व्याप्त हो गया।

सरकार ने चिरवाञ्छित दमन-चक्र छोड़ा, पर प्रभाव उल्टा ही हुआ। महिला-समाज पर भी इसका प्रभाव पड़ा। प्रथम तो स्त्रियों से कुछ नहीं बोला गया, परन्तु

श्रीमती हंसा मेहता

धीरे-धीरे दमन-चक्र की तीव्रता उग्र होती गई। उनको पकड़ कर शहर के बाहर मीलों दूर छोड़ आना प्रारम्भ हुआ, साधारण क़ैद की सज़ा भी दी जाने लगी, फिर सख़्त सज़ा ने तो अनिवार्य रूप धारण किया। पहिले 'ए' क्लास दिया गया, थोड़े दिनों बाद 'बी' फिर 'सी' ही हर एक को दिया जाने लगा !! कहीं-कहीं पुरुषों पर ही लाठियाँ बरसती थीं, पर जब उनका बरसना वर्षा-ऋतु की भाँति रेगिस्तानों में भी कभी-कभी हो जाया करता तो फिर महिलाओं का नम्बर आया!!! अभी तक जो लाठियाँ पुरुषों पर भी एकदम न चलाई जातीं, स्त्रियों पर निःसङ्कोच भाव से चलाई जाने लगीं। सैकड़ों स्त्रियाँ उसकी शिकार हुईं और बुरी तरह घायल भी हुईं। बम्बई प्रान्त का संग्राम, जो भारत के अन्य प्रान्तों से भीषणतर और घनघोर था, वहाँ नौकरशाही की दमन-नीति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। भाँति-भाँति के भीषण अत्याचार हुए, मगर वे सभापति विल्सन के कथनानुसार Repression is the seed of Revolution अर्थात् दमन-नीति ही

क्रान्ति का बीज वपन करती है। उनको अपने कर्तव्य-पथ से भ्रष्ट न कर सके, वरन् वे द्विगुण उत्साह से उनका मुक़ाबिला करने को तैयार होती गईं।

सैनिक महिलाओं में वृद्धा-युवती और सुकुमार लड़कियाँ तक शामिल थीं, या यों कहिए कि ७० वर्ष

श्रीमती सरोजिनी नायडू

की वृद्धा स्त्रियाँ, जो आसानी से चल फिर भी नहीं सकती थीं, तथा ८ और १० वर्ष तक की दुधमुहीं बालिकाएँ तक संग्राम में सम्मिलित थीं। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि स्वतन्त्र होने की उज्ज्वल भावना ने न केवल पुरुषों में ही, वरन् स्त्रियों के हृदयों में भी जड़ जमा ली है। जेलों की चहारदीवारी के अन्दर केवल प्रौढ़ावस्था की स्त्रियाँ ही नहीं, ६०-७० वर्ष की वृद्धाएँ और ८-१० वर्ष की बालिकाएँ पर्याप्त संख्या में भरी गई थीं, जहाँ उनको अनेक प्रकार की भीषण यातनाएँ दी जाती थीं। पहिले तो अधिक कष्ट नहीं था, क्योंकि 'ए' और 'बी' क्लास मिल जाता था, परन्तु जैसे-जैसे सरकार का दमन बढ़ता गया, क्रूरता और नृशंसता बढ़ती गई।

श्रीमती सुब्बारायन

जेल की चहारदीवारियों के अन्दर भी इसकी शक्तियाँ पहुँच गईं और कारागार में बन्द, कठोर यातनाओं की शिकार असहाय अबलाओं की चूड़ियाँ और बिछुए आदि तक—जो भारतीय स्त्री-समाज के सौभाग्य-चिन्ह और जिनकी रक्षा वे प्राणपण से करती हैं—फोड़े और छीन लिए गए। इन जेलों की चहारदीवारियों में अनेक स्त्रियाँ ऐसी थीं, जो गर्भवती थीं! हृदय थाम कर कल्पना कीजिए कि इस अमानुषिक व्यवहार से उन गर्भवती रमणियों को कितनी मानसिक तथा शारीरिक वेदना हुई होगी और इसका प्रभाव उस गर्भ-स्थित बालक की मनोवृत्ति पर कितना कुत्सित पड़ा होगा! जो स्त्रियाँ अपने सुकुमार नन्हें बच्चों को लेकर जेल गई थीं, उनके कष्टों का भी ध्यान कीजिए! नौकरशाही की क्रूरता का यहाँ भी अन्त नहीं हुआ। ज़रा सोचिए कि उन पिताओं की क्या दुर्दशा हुई होगी, जिनकी गर्भवती स्त्रियों के जेल में पुत्र उत्पन्न हुए, और जो अपने माता-पिता के एकमात्र पुत्र थे। परन्तु जेल की पाशविक नृशंसता और क्रूरता के शिकार होकर चन्द दिनों में ही वे इस पार्थिव शरीर को त्याग कर ब्रिटेन की साम्राज्य-पिपासा की, उस जगतनियन्ता के दरबार में, शिकायत का ढिंढोरा पीटने के लिए अपनी माता को पुत्रहीन छोड़ कर चले गए? इन महान दैवी आपत्तियों का साहस तथा दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए भी वे अपने स्वदेश-प्रेम के पवित्र कर्तव्य से पराङ्मुख नहीं हुईं! यह हैं उनके देशानुराग के कारण कष्ट-सहन के ज्वलन्त उदाहरण?

निस्सन्देह स्वातन्त्र्य महासंग्राम में भाग लेने वालों में, त्याग, बलिदान और कष्ट-सहन में यह अबला कहलाने वाली जाति सब से आगे रही है। इनकी 'चूड़ी-सभाओं' ने विदेशी वस्तु-बहिष्कार आन्दोलन को भारी सहायता दी थी।

संसार के लगभग सभी स्वाधीन तथा पराधीन देशों में स्वातन्त्र्य युद्ध के समय वहाँ के महिला-समाज ने अपने अपूर्व स्वदेशानुराग का परिचय महान त्याग के बल पर दिया है। भारत का स्त्री-समाज अपने स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग न लेकर स्त्री-जाति पर कलङ्क का टीका लगवाने को कदापि तैयार न था। अतएव पराधीनता-पाश को काट कर फेंकने में इसने उतनी ही शीघ्रतापूर्वक पग बढ़ाया, जितना अन्य देशों की स्त्री-जाति ने बढ़ाया था।

भारत के नेताओं ने उनके तप-त्याग की प्रशंसा की है। उन्होंने जहाँ अन्य समाजों के कम कार्य करने की शिकायत की है, वहाँ स्त्री-जाति की सेवाओं को बधाई दी है। इसमें सन्देह नहीं कि स्वतन्त्र भारत इनकी अमूल्य सेवाओं का उचित आदर करेगा और उनकी दशा संसार की स्त्री-जाति की वर्तमान स्थिति से कहीं अधिक सुन्दर होगी!

❀ ❀ ❀

तूफ़ाने-ज़राफ़त

[महाकवि "अकबर" इलाहाबादी]

शैख़ ने नाक़ूस के सुर में जो ख़ुद ही तान ली,
फिर तो यारों ने भजन गाने को खुल कर ठान ली।
मुद्दतों क़ायम रहेंगी अब दिलों में गरमियाँ,
मैंने फ़ोटो ले लिया उसने नज़र पहिचान ली।
रो रहे हैं दोस्त मेरी लाश पर बेअख़तियार,
यह नहीं दरियाफ़्त करते किसने इसकी जान ली।
हज़रते 'अकबर" के इस्तक़लाल का हूँ मोतरिफ़,
ता बमर्ग उस पर रहे क़ायम जो दिल में ठान ली।

× × ×

मुरीदे दह हुए वज़्आ मग़रबी कर ली,
नये जन्म की तमन्ना में ख़ुदकुशी कर ली।
ज़वाले क़ौम की तो इब्तिदा वही थी कि जब,
तिजारत आपने की तर्क नौकरी कर ली।

× × ×

तूने जिसे बनाया उस को बिगाड़ डाला,
ऐ चर्ख़ मैंने अपनी अरज़ी को फाड़ डाला।
बरबाद क्या अजल ने मुझको किया यह कहिए,
रूहे रवाँ ने अपने दामन को झाड़ डाला।
बुनियाद दीं हवाए दुनिया ने मुनहदिम की,
तूफ़ान ने शजर को जड़ से उखाड़ डाला।
अच्छा मिला नतीजा मुझको मुरासलत का,
क़ासिद को क़त्ल कर के नामे को फाड़ डाला।

❀ ❀ ❀

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तुमने ऐसे वक़्त ऐसी बेसुरी क्यों तान ली,
बेदिली के साथ गाते हो सदा पहिचान ली।
जान जाने की शिकायत मैं करूँ तो क्या करूँ,
जब मुझे यह भी नहीं मालूम किसने जान ली।
ख़ुद ही देता है पुजारी शौक़ से परशाद अब,
उसके मन्दिर में भजन गाने की मैंने ठान ली।
हज़रते "बिस्मिल" हुआ कब हमको तनहाई का शौक़,
हमने दुनिया भर की ख़ाक अच्छी तरह जब छान ली

× × ×

किसी ने सैर ज़माने की सरसरी कर ली,
किसी ने लीडरी कर ली पिलीडरी कर ली।
शिकम-पुरी की तमन्ना में हज़रते "बिस्मिल,"
जो हमसे कुछ न बन आई तो नौकरी कर ली।

× × ×

बनता था खेल अपना उसको बिगाड़ डाला,
हाकिम का हुक्म हमने बेकार फाड़ डाला।
सीधे हुए बिलआख़िर इससे अकड़ने वाले,
आकर क़ज़ा ने सबको कैसा पछाड़ डाला।
शादाब हो कहाँ से, फूले-फले वह क्योंकर,
जिस पेड़ को किसी ने जड़ से उखाड़ डाला।
"बिस्मिल" समझ लो दिल में वारण्ट आएगा अब
तुमने यह क्या समझ कर नोटिस को फाड़ डाला।

❀ ❀ ❀

वीर नख-सिख

[राजकवि पं० अम्बिकाप्रसाद जी भट्ट, "अम्बिकेश"]

वीर-श्रवण

सुनत सदा ही रहैं, वीर रन हाँकन को,
तोपन तड़ाकन को लागत पवन हैं।
दीन के वचन, सुनि पावत अधीन भरे,
छीन है बिठारैं तिन्हैं उर के भवन हैं।
चुगुल चवाइन के चोखे आततताइन के,
बातन को घातन को करत हवन हैं।
दीन पै द्रवन, शोक सङ्कट समन,
दीह दुःख को दमन, वीर रावरे श्रवन हैं॥
देखत कुदृष्टि हैं जो, पैठि दीन-हीनन को,
लोचन मैं पैठि ताके द्वार परि जायगी।
आर-पार हैहै छूटि गरब गरूरिन को,
सारी विश्व-रचना मैं भार परि जायगी।
लोचन सी जैहै बेगि उघरि त्रिलोचन की,
त्राहि की पुकार बेशुमार परि जायगी।
झार परि जायगी खमण्डल में वीर जोपै,
तेरे कान दीन की गुहार परि जायगी॥

❀

सुमन

[श्री० 'लहरी']

फूल रहा हूँ फुलवाड़ी में,
किरणों का वैभव लेकर।
इतराता हूँ उनके बल पर,
मारुत को मदिरा देकर॥

इसी कटीली झुरमुट में,
भय है, झड़ पड़ूँ न धन खोकर।
ले न सकूँगा सिसकी भी,
पथिकों की मैं खाकर ठोकर॥

दे शशि-बाला मधुर थपकियाँ,
पय-पीयूष पिला कर।
कौन जानता, प्यार-प्यार में,
देगी पटक शिला पर॥

मधुपों का ममत्व ही कितना,
स्वार्थमयी जगती में।
लेंगे लूट सुरभि बहुरूपिए,
स्नेह न उनके जी में॥

मालाकार, न निष्ठुर बन,
चुन लेना, बिखर न जाऊँ।
उग्र-झकोरों से क्षण में,
अन्तिम घड़ियाँ दुलराऊँ॥

उपयोगी जीवन, जीवन है,
स्वर्ग-सौख्य से बढ़ कर।
अमर-बनूँगा उस शहीद की,
जड़-समाधि पर चढ़ कर॥

❀

श्याम

[श्री० कमलाप्रसाद जी 'कमल']

भूल सकते हो तुम जल यमुना का श्याम,
भूल सकते हो मोह मञ्जु-वनमाला का।
विप्र का प्रसाद तुम क्षिप्र भूल सकते हो,
भूल भले जाओ रूप एक-एक ग्वाला का।
व्रज के विपुल भूल जाओ तुम वैभव को,
भूल द्रौपदी के दृश्य जाओ द्यूतशाला का।
भूल न यशोदा का दुलार सकते हो तुम,
भूल न सकोगे तुम प्यार व्रज बाला का॥
माखन रखाते आज लाखों ललनाओं की तो,
मालहीन क्या तुम्हारा माखन चुराना था।
दीन लाख गृह में क्षुधा से जलते हैं नित्य,
व्यर्थ पाण्डवों का लाख-गृह बचाना था।
अत्याचारियों पै ना उठाते गिरिधर! कर,
व्यर्थ ही तुम्हारा गिरिवर का उठाना था॥
अब न त्रिलोक को विलोकते हो श्याम! तब—
किस काम का वह त्रिलोक दिखलाना था॥

❀

प्रण

[श्री० हरिश्चन्द्रप्रसाद जी "इन्दु"]

दुख दारुण सब सहित हर्ष हम नित्य सहेंगे।
छोड़ सभी सुख-साज द्वार घर भी भटकेंगे॥
होंगे वस्त्र-विहीन हीन सब से होवेंगे।
समय परे पर घास-फूस भी खा लेवेंगे॥
तड़प-तड़प कर भूख से या हम सब मर जायँगे।
शीश समुन्नत पर नहीं रिपु को कभी नवायँगे॥
सब विपत्ति की घटा हमीं सब पर घिर आवे।
रिपुगण होकर क्रुद्ध खुशी से वज्र गिरावे॥
देख हमारी दशा धरा भी धीरज छोड़े।
वज्र-हृदय भी पावस-सरि हो सीमा तोड़े॥
प्रिय शरीर रिपु खर्ग से टूक-टूक हो जायँगे।
शीश समुन्नत पर नहीं रिपु को कभी नवायँगे॥

❀

वेश्या और वकील

[कविरत्न मुन्शी रामाधीनलाल जी खरे]

धन ठग लेना टाल-टूल कर जाना खूब,
अनृत बताना, समझाना झूठे शील में।
फ़ीस मिलने के लिए करना आडम्बर को;
भेष भर लेना अति सुन्दर सुडौल में।
'रामाधीन' भाषै अच्छे स्वागत सुहायल में।
कायल बनाना जानते हैं वे दलील में।
स्वार्थ बिन भूल के निगाह फेरने के नहीं,
एकी ढङ्ग देखे गए वेश्या में वकील में॥
उनके समीपता में सुनिए भजन खासे,
इनके निकट मामलातन की पेशी हैं।
उन्हें धन दीजिए तो मिलता मज़ा है विश्व,
इन्हें धन दीन्हें हार जैबे को अँदेशा हैं।
उनके प्रसङ्गन में चाहे सत्य सूझि आवै,
झूठ रचिबोई इनके में या हमेशो हैं।
लोक-सुख देतीं वे, ये दोनों लोक लूट लेत,
गुन गनिकान तें वकीलन में बेशी हैं।

❀

जीवन-गीत

[श्री० नरेन्द्र]

धीरे-धीरे धीरे चल,
ओ! मेरे जीवन के साथी,
प्रलय निगोड़े धीरे चल।
चढ़ कर निज-निज टूटे रथ पर,
जीवन के इस स्वप्निल पथ पर,
मैंने तूने होड़ लगाई—
खोने अपनापन चञ्चल।
खो बैठा पर अपने को मैं,
अपनापन क्या खोऊँ अब मैं,
ठहर ढूँढ़ लेने दे मुझको—
अपने छवि-जल का लघु पल।
छोड़ दौड़ में पीछे मुझको,
बता लाभ क्या होगा तुझको,
अभी जीत कर पावेगा कुछ—
बिखरे मन-मोती केवल।
मुझे गूँथ लेने दे माला,
भर लेने दे जीवन-प्याला,
साथ-साथ फिर चले चलेंगे
हम औ' तू ओ रे पागल।*

❀

अनुनय

[श्री० ठाकुर हृदयनारायण सिंह]

भला, होगे जो मुझसे रुष्ट,
कहो, मैं जीऊँगी किस भाँति?
सरोवर यदि हो जावे क्रुद्ध,
बसेगी कहाँ कुमुदिनी-पाँति?
कहाँ पावेगी वह अवलम्ब,
अरुण यदि ऊषा को दे त्याग?
कहाँ पावेगी निद्रा शान्ति,
दिखावें उससे नयन विराग?
तुम्हारी आँखों के अतिरिक्त,
नींद-सी मुझे कौन है ठौर?
वहाँ से दोगे अगर निकाल,
मिलेगा ठाँव कहाँ पर और?
सहन कर तिरस्कार भवदीय,
रहूँगी पड़ी तुम्हारे द्वार?
करूँगी सेवा बस चुपचाप,
हमारा और कौन व्यापार?
रूठ लो रुठ, प्राण के प्राण,
तुम्हारा तो है यह अधिकार?
मनाऊँगी मैं धर कर पावँ,
हमारा यही एक आधार?

❀

*अप्रकाशित "निर्वासित" नाटक से।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

'भविष्य' के इस चित्र में पाठक अमेरिका के सुप्रसिद्ध कलाविद (Sculptor) मि० जे० डेविडसन को महात्मा गाँधी की प्रस्तर-मूर्ति (Bust) बनाते हुए देखेंगे। महात्मा गाँधी नाइट्स ब्रिज (लन्दन) के अपने दफ़्तर में बैठे अपना रोज़ाना कार्य कर रहे हैं।

पञ्जाब के प्रथम विद्यार्थी-पार्लामेण्ट के कुछ प्रमुख सदस्यों का ग्रूप। पाठक बीच में सर्दार शार्दूलसिंह जी को बैठे देखेंगे।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि भारत के अतिरिक्त, जहाँ कहीं भी भारतवासी हैं—सभों ने महात्मा गाँधी की वर्षगाँठ बड़ी धूम-धाम से मनाई थी। 'भविष्य' के इस चित्र में पाठक देखेंगे, मोम्बासा (अफ़्रीका) के सुप्रसिद्ध कन्या-पाठशाला की बालिकाएँ गाँधी-जयन्ती के उपलक्ष में की जाने वाली एक महती सभा में भाग लेने के अभिप्राय से स्कूल में छुट्टी न रहते हुए भी, 'हड़ताल' करके सड़कों पर जा रही हैं। यह चित्र अनेक ग्रूपों में से केवल एक का है, इसे विस्मरण न करना चाहिए!
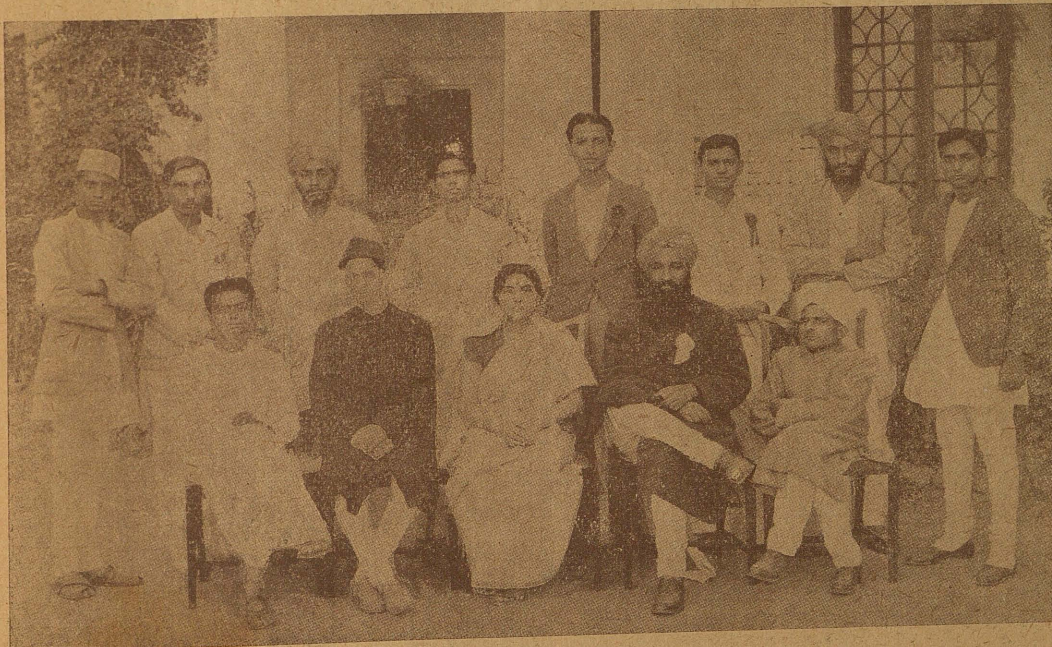
पञ्जाब-विद्यार्थी-सम्मेलन के विषय-निर्धारिणी सभा (Subject Committee) के सदस्यों का ग्रूप, जिसका ४था अधिवेशन उस दिन लाहौर में बड़ी धूम-धाम से श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय के सभापतित्व में मनाया गया।

'भविष्य' के—इस ग्रूप के बीच में पाठक श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय (प्रधाना) तथा उनकी बग़ल में सर्दार शार्दूलसिंह जी को बैठे देखेंगे।

महापुरुष गाँधी की वर्षगाँठ मनाने के लिए और उनके प्रति अपना हार्दिक सम्मान और मङ्गल-कामना प्रदर्शित करने के लिए जितना उद्योग भारतवर्ष में किया गया था, उससे कहीं अधिक उत्साह का प्रदर्शन किया गया था, प्रवासी भारतवासियों द्वारा—'भविष्य' के इस चित्र में पाठक इस अवसर पर मोम्बासा (अफ़्रीका) की एक महती सार्वजनिक महिला-सभा का दृश्य देखेंगे।

पाठकों ने 'भविष्य' के गताङ्क में पढ़ा होगा कि आगामी सम्भावनीय राष्ट्रीय संग्राम में महिलाओं के अधिकाधिक भाग लेने के लिए उत्साहित करने के अभिप्राय से बम्बई की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री—श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय (जिन्होंने बम्बई में पिछले युद्ध के अवसर पर सर्व-प्रथम महिलाओं में यह अग्नि प्रज्ज्वलित की थी) ने 'हिन्दोस्तानी सेवा-दल' की ओर से समस्त भारत में भ्रमण एवं महिलाओं के सङ्गठन करने का सङ्कल्प ही नहीं, बल्कि दौरा भी आरम्भ कर दिया है। 'भविष्य' के इस चित्र में पाठक श्रीमती चट्टोपाध्याय को अहमदाबाद की एक महती महिला-सभा में व्याख्यान देते हुए देखेंगे। आजकल देवी जी इसी अभिप्राय से संयुक्त प्रान्त में दौरा कर रही हैं।
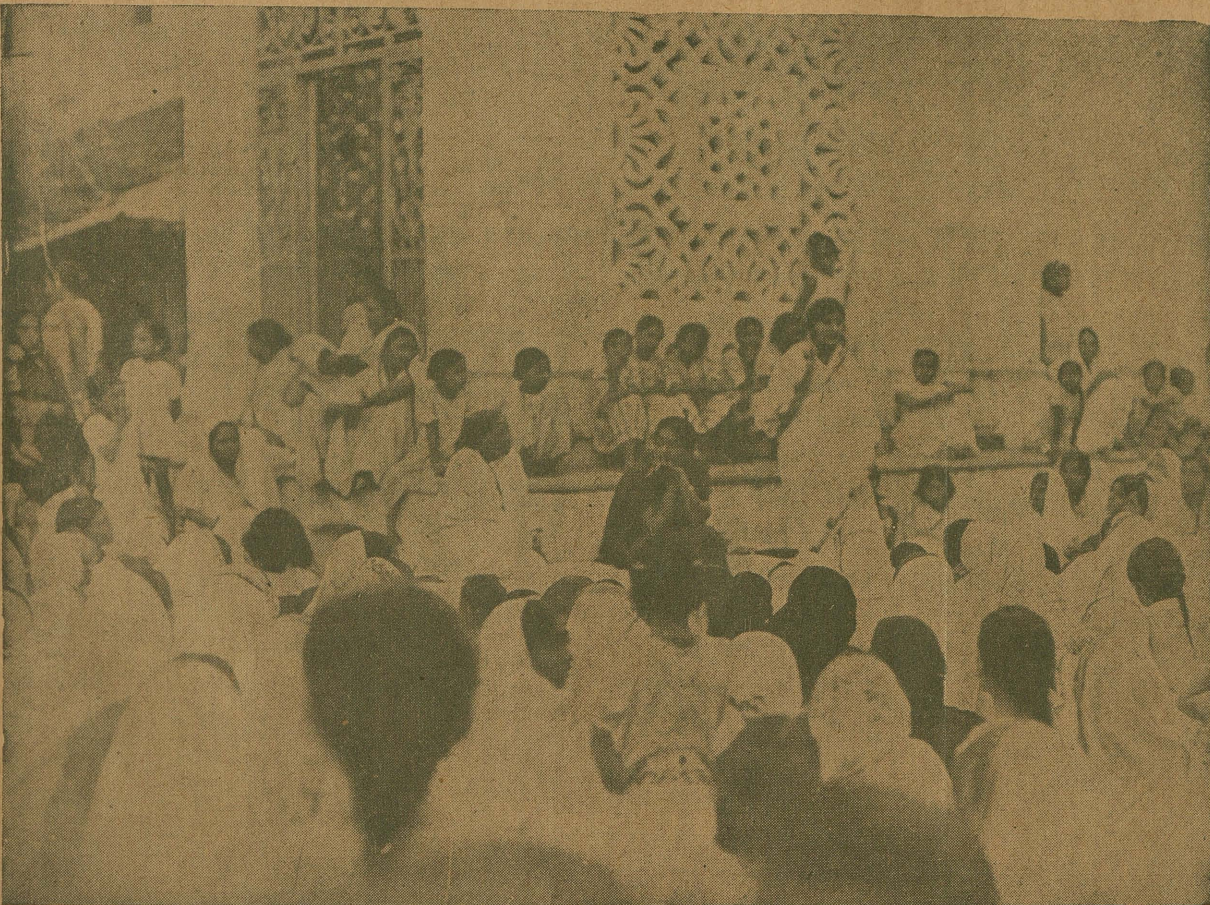
पाठकों को स्मरण होगा, गत २२वीं अक्टूबर को अमेरिका के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री० शैलेन्द्र घोष की धर्मपत्नी तथा ७ और ४ वर्ष की दो बालिकाएँ लन्दन में महात्मा गाँधी को निमन्त्रित करने के अभिप्राय से पधारी थीं। 'भविष्य' का यह चित्र उस समय लिया गया था, जबकि ये लोग महात्मा गाँधी से मिले थे। महात्मा जी की बग़ल में खड़ी हुई पाठक कुमारी मीरा (Miss Slade) को देखेंगे।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

बम्बई के महाराष्ट्र सङ्गीत-विद्यालय की कुछ लगनशील छात्राएँ, जिन्होंने उच्च सङ्गीत-शिक्षा-प्राप्ति को ही अपने जीवन का एक-मात्र ध्येय मान लिया है। यह सुप्रसिद्ध सङ्गीत-विद्यालय प्रोफ़ेसर बाबूराव गोखले की तपस्या का फल है।

राजपूताना किसान-कॉन्फ़्रेन्स के प्रमुख कार्यकर्ताओं का ग्रूप। पाठक इस ग्रूप के बीच में सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री० अर्जुनलाल जी सेठी को बैठे देखेंगे ; जो हाल ही में गिरफ़्तार कर लिए गए थे ; किन्तु एक क़ानूनी नुक़्ताचीनी के कारण छोड़ दिए गए थे। ८ नवम्बर का समाचार है कि अजमेर में आपको फिर भारतीय दण्ड-विधान की १०८ वीं धारा के अनुसार डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने नोटिस निकाल कर आपसे पूछा है कि उनसे १ वर्ष तक की 'नेकचलनी' देने को क्यों न वाध्य किया जाय ?
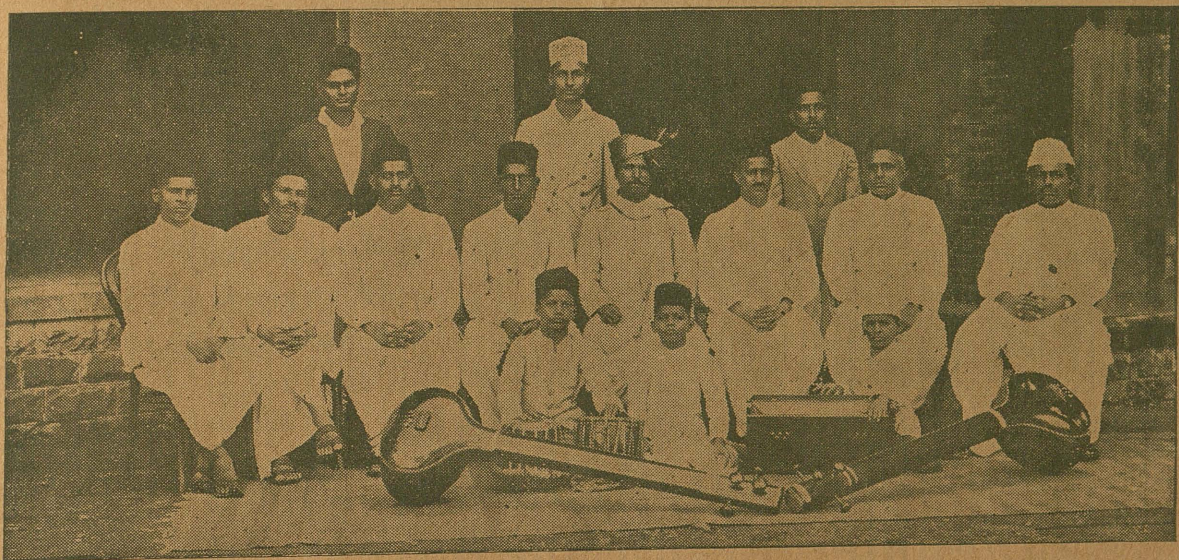
बम्बई के सुप्रसिद्ध महाराष्ट्र सङ्गीत-विद्यालय के प्रमुख कार्यकर्ताओं का ग्रूप —बीच में पाठक कोल्हापूर के गान्धर्व महाविद्यालय के आचार्य प्रोफ़ेसर वामनराव पाध्येय को बैठा देखेंगे, जो वाद्य-कला में अपना सानी नहीं रखते।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि क्षणिक गाँधी-इर्विन समझौते के कारण यदि कोई ऐसा प्रान्त है, जिसमें नाम-मात्र को भी शिथिलता न आई हो और जो आगामी सम्भावनीय युद्ध के लिए प्राणपण से चेष्टा कर रहा हो तो वह प्रान्त गुजरात ही है। इस चित्र में 'बोर्दी' नामक स्थान में गाँधी-आश्रम के उद्घाटन के समय राष्ट्रपति सर्दार बल्लभभाई पटेल को राष्ट्रीय झण्डा फहराते हुए देखेंगे।

महात्मा गाँधी के वर्षगाँठ मनाए जाने वाले सप्ताह में भारत के अतिरिक्त, लगभग सभी अन्य प्रदेशों में भी गाँधी-जयन्ती बड़े उत्साह से मनाई गई थी। 'भविष्य' के इस चित्र में पाठक देखेंगे, मोम्बासा (अफ़्रीका) की जनता बड़े समारोह से संसार के महापुरुष की जयन्ती मना रही है।
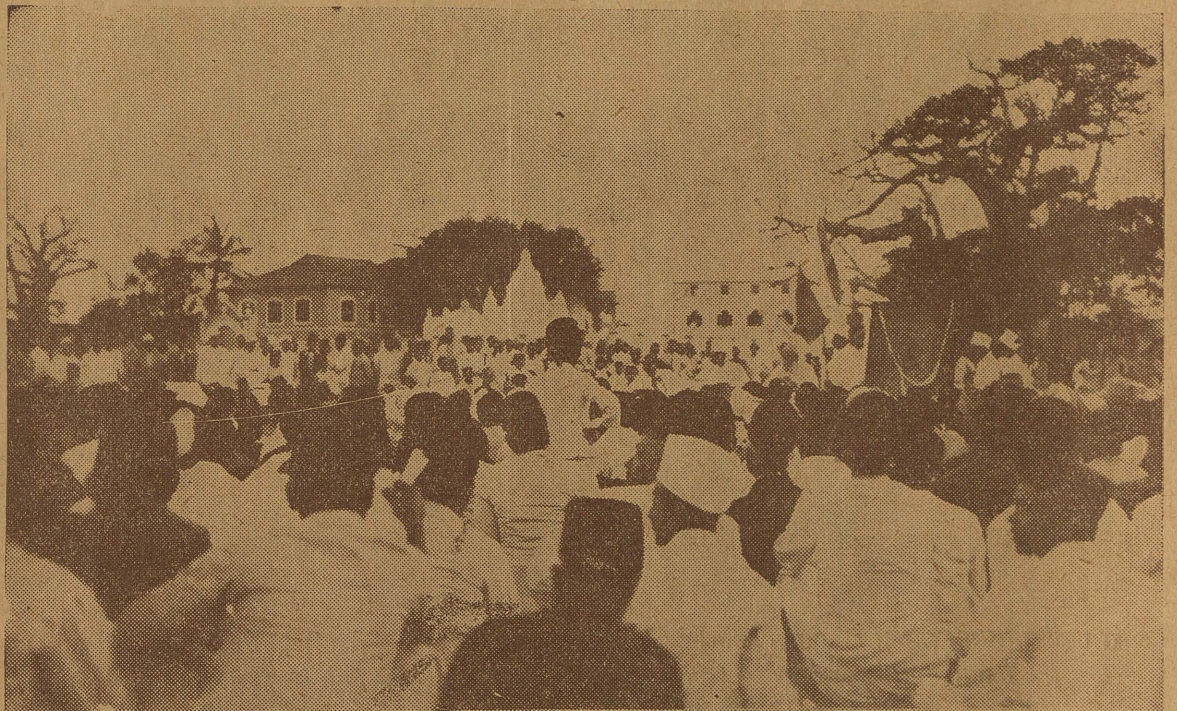
'भविष्य' के इस चित्र में भी पाठक देखेंगे 'गाँधी-जयन्ती' के सुअवसर पर मोम्बासा (अफ़्रीका) की प्रतिष्ठित महिलाएँ 'गर्बे' नामक अनुष्ठान करके अपने पूज्य नेता के मङ्गल-कामना एवं दीर्घ-जीवी होने का अनुष्ठान कर रही हैं।
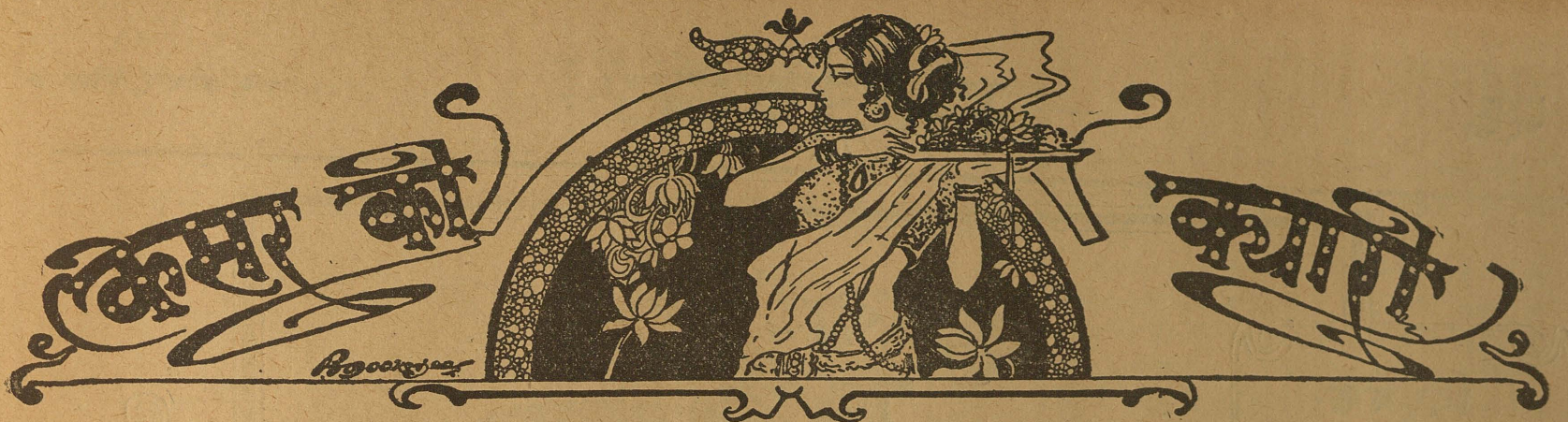
[तुलसीजयन्ती के अवसर पर इस साल गया में उर्दू कवियों का एक बृहत् मशायरा (कवि-सम्मेलन) हुआ था, जिसमें इस स्तम्भ के सम्पादक कविवर "बिस्मिल" भी पधारे थे। आप ही इस मशायरे के सभापति थे। इस मशायरे में अच्छी-अच्छी कविताएँ पढ़ी गई थीं। आपकी सरस एवं मधुर कविताओं की बड़ी प्रशंसा हुई। 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ वहाँ की ख़ास-ख़ास कविताएँ दी जाती हैं, जो वास्तव में बड़ी ही मनोरञ्जक हैं। आशा है, 'भविष्य' के उर्दू कविता-प्रेमी पाठक इसे पसन्द करेंगे।
—स० 'भविष्य']

मेरी आँखों में सूरत फिरती है एक-एक तिनके की, नशेमन सामने है दूर रह कर भी नशेमन से।

क़फ़स में जब से हूँ दुनिया उसे बर्बाद करती है, मेरे होते न पाता था कोई तिनका नशेमन से।

बचेगा दिल हमारा किस तरह उस शोख़ पुरफ़न[1] से,
जो हरदम काम ख़ञ्जर का लिया करता है चितवन से।

छुरी सय्याद ने फेरी है शायद हल्क़े बुलबुल पर,
सबा क्यों ख़ाक उड़ाती आ रही है आज गुलशन[2] से।

जो दिल पहले चुराते थे, वह अब आँखें चुराते हैं,
ग़रज़ चोरी की आदत है जवानी तक लड़कपन से।

असीरों[3] की रिहाई की तमन्ना हो तो क्यों कर हो,
बनाया है क़फ़स[4] सय्याद ने शाख़े नशेमन[5] से।

फ़ना[6] के बाद भी है ज़ोर बाक़ी नातवानी का,
कि उठ कर बैठ जाते हैं बगूले मेरे मदफ़न[7] से।

मुहब्बत ने दिखाई ख़ल्क़[8] में बर अक्स तासीरें,
बुतों ने हक़ शिनासी[9] का सबक़ पाया बिरहमन से।

ठहरती ही नहीं जम कर, किसी मुश्ताक़[10] की नज़रें,
कभी लड़ती हैं रौज़न[11] से, कभी लड़ती हैं चिलमन से।

पये तफ़रीह[12] दीवाने किसी के आते जाते हैं,
कभी सहरा[13] से गुलशन में, कभी सहरा में गुलशन से।

मेरी आँखों को हिज्रे[14] यार में रोने से मतलब है,
नहीं हैं कम बरसने में यह भादों और सावन से।

क़फ़स में रह के वह हरदम चमन का राग गाते हैं,
असीराने वतन सीखें सबक़ मुर्ग़ाने गुलशन[15] से।

मेरी आँखों में सूरत फिरती है एक-एक तिनके की,
नशेमन सामने है दूर रह कर भी नशेमन से।

ख़ुदा भी एक हो जाए, ख़ुदाई एक होने पर,
ख़ुदा के वास्ते ज़ाहिद अगर मिल ले बिरहमन से।

सख़ुन[16] में यह अजब तासीर है अहले सख़ुन[17] देखें,
ग़ज़ल गोई को "कुश्ता" भी निकल आता है मदफ़न से।

—"कुश्ता" गयावी

यह किस अन्दाज़ के ज़ालिम ने झाँका मुझको रौज़न से,
निकलने के लिए रूहे रवाँ बेचैन है तन से।

फ़लक़[18] का हो बुरा बिजली गिराई भी तो कब उसने,
निकलने भी न पाया था मैं जब अपने नशेमन से।

सिरहाने बैठ कर क्या नज़्आ[19] में आँसू बहाते हो,
चराग़े ज़िन्दगानी भी कहीं जलता है रौग़न से।

—"लाला" गयावी

१—चलता हुआ, २—बाग़, ३—क़ैदियों, ४—पिंजड़ा, ५—घोंसला, ६—मिट जाना, ७—दफ़न होने की जगह, ८—संसार, ९—ईश्वरी ज्ञान, १०—दर्शक, ११—झरोका, १२—दिल बहलाव, १३—जङ्गल, १४—बिरह, १५—बाग़ के पक्षी, १६—कविता, १७—कविता के मर्मज्ञ, १८—आकाश, १९—आख़िरी समय,

ख़ुदा जाने किया क्या सेहर[20] तुमने चश्मे पुरफ़न से,
हज़ारों हो गए बिस्मिल तुम्हारी बाँकी चितवन से।

नक़ाब उलटी दमे गुलगश्त[21] अपने रूए रौशन से,
नुमायाँ फूल है सूरजमुखी का सहने गुलशन से।

जुनूँ में मेरी हालत पर तरस खाते हैं दुश्मन भी,
उलझ जाते हैं ख़ारे दश्त[22] बढ़ कर मेरे दामन से।

मुहब्बत क्यों हुई मुझको यह पूछो हुस्न से अपने,
तड़प क्यों है मेरे दिल में यह पूछो शोख़ चितवन से।

क़यामत क्यों न हो बरपा, क़यामत से नहीं यह कम,
कलेजा थाम कर रोते हुए उट्ठे वह मदफ़न से।

मुबारक मौत हो क़ातिल अगर इस तरह पेश आए,
कि सर को काट कर मेरे छुपाए अपने दामन से।

बिखर आई है रुख़ पर ज़ुल्फ़े जानाँ[23] चैन क्या आए,
परेशाँ हो रहे हैं हम अब अपने दिल की उलझन से।

मेरी आहेरसा "मक़सूद" ऐसी बा-असर निकली,
मेरे घर आए दिल थामे हुए वह बज़्मे दुश्मन से।

—"मक़सूद" गयावी

न मिल उस ज़ुल्फ़ से दिल रह ज़रा हुशियार नागन से,
चला है दोस्ती करने तू ऐ नादान दुश्मन से।

कहाँ यह आबोताब उसमें, कहाँ यह बात है उसमें,
क़मर[24] को क्या भला निस्बत तुम्हारे रूए रौशन से।

जुदा तन से किया सर मैं तेरा मशकूर[25] हूँ क़ातिल,
सुबुकदोशी[26] हुई, तूने उतारा बोझ गर्दन से।

बुरे दिन अपने जब आए जुदा सब होगए "आजिज़",
जो थे हमदर्द वह भी अब नज़र आते हैं दुश्मन से।

—"आजिज़" गयावी

मरीज़े इश्क़ को दे दो हवा तुम अपने दामन से,
कि निकले जान आसानी से ऐ जाने जहाँ तन से।

मिटा सकती नहीं गरदूँ[27] की गर्दिश नाम उल्फ़त का,
सदा आती है यह सुबहो मसा[28] मजनूँ के मदफ़न से।

निशानी शमआ[29] थी जो दाग़े दिल की मेरी तुर्बत[30] पर,
उसे भी नाज़ से ठुकरा दिया गुज़रे जो मदफ़न से।

—"मस्त" गयावी

२०—जादू, २१—सैर करते समय, २२—जङ्गल के काँटे, २३—प्रियतम के केश, २४—चाँद, २५—कृतज्ञ, २६—हलका हो जाना, २७—आकाश, २८—शाम, २९—दीपक, ३०—क़ब्र,

निकलने को निकलते हैं वह बच कर मेरे मदफ़न से,
मगर फिर भी लिपट जाती है उड़ कर ख़ाक दामन से।

टपकता है लहू मक़तल में रिस-रिस कर सरोतन से,
किसी की तेग़[31] जब मिलती है खिंच कर मेरी गर्दन से।

तजल्ली[32] हुस्न की फैली यह उनके रूए रौशन से,
गरेबाँ जल गया अपना चराग़े ज़ेरे दामन[33] से।

ग़श आया हमको जिसके जलवए रुख़सारे रौशन से,
वह बालीं[34] पर हवाएँ दे रहा है अपने दामन से।

हवा भरती है आहे सर्द, पत्ते हाथ मलते हैं,
ख़ुदा जाने यह किसकी लाश अब उठती है गुलशन से।

क़फ़स में जब से हूँ दुनिया उसे बर्बाद करती है,
मेरे होते न पाता था कोई तिनका नशेमन से।

ख़िरामे नाज़[35] जानाँ देखने को आज महशर[36] में,
कोई अँगड़ाइयाँ लेता हुआ उठता है मदफ़न से।

असीरी फिर न ऐ सय्याद मैं समझूँ असीरी को,
बनाए तू क़फ़स तिनके अगर लेकर नशेमन से।

दमे रुख़सत तो ऐ अहले चमन आओ गले मिल लूँ,
कि अब मैं उम्र भर के वास्ते जाता हूँ गुलशन से।

मिटा कर मुझसे कहते हैं वह मेरे दाग़े हस्ती को,
तेरे मरने पर एक धब्बा छुटा दुनिया के दामन से।

फ़लक हो, बर्क़[37] हो, सय्याद हो, या बादे सरसर[38] हो
जिसे देखो उसी को लाग है मेरे नशेमन से।

यहाँ के एक-एक पत्थर से होता है गुमाँ मुझ को,
पड़ी है नींव भी काबे की तो दस्ते[39] बिरहमन से।

करिश्मे हैं यह क़िस्मत के, यह ख़ूबी है मुक़द्दर[40] की,
कोई दामन में गुल चुनता है, कोई ख़ार गुलशन से।

असीरी में मज़ा आता है मुझको सैरे गुलशन का,
कि हर गोशा[41] क़फ़स का मिलता जुलता है नशेमन से।

अब उनके तालिबे दीदार, यह कह-कह के बैठे हैं,
न झाँकेंगे, न ताकेंगे वह कब तक अपने रौज़न से।

यह रङ्गआमेज़िए[42] क़ातिल कहीं कम होने वाली है,
बहेगा हश्र तक यूँही लहू "बिस्मिल" की गर्दन से।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

❀ ❀ ❀

३१—तलवार, ३२—ज्योति, ३३—दामन के नीचे, ३४—सिरहाना, ३५—अदा से चलना, ३६—प्रलय, ३७—बिजली, ३८—आँधी, ३९—हाथ, ४०—तक़दीर, ४१—कोना, ४२—रङ्ग लाना।

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है ; मूल्य केवल ३)

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया ; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए ; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। मूल्य ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है ; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत-मात्र ३) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से २।) रु०!

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य।)

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य बारह आने!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

जापान और मञ्चूरिया

जापानी राजदूत का बम्बई के रोटेरी क्लब में भाषण

चीन प्रजातन्त्र के उत्तरी सरहद पर मञ्चूरिया नाम का देश है। रूसी साइबेरिया का कुछ अंश और जापानी कोरिया के कुछ हिस्से मञ्चूरिया के उत्तर-पूर्व सरहद पर हैं। इसका क्षेत्रफल ३,८२,००० वर्ग मील के लगभग है और यहाँ की आबोहवा क़रीब-क़रीब वैसी ही है जैसी मिश्र की।

प्रकृति पैदावार

चीन के दूसरे भागों से भिन्न, मञ्चूरिया की नैसर्गिक उपज बहुत है, ख़ासकर खेती, खान और जङ्गल में पैदा होने वाली सम्पत्ति ख़ूब है। समस्त क्षेत्रफल का चौथा हिस्सा खेती के लायक़ उर्वरा है। बहुत सी खेती की भूमि अभी तक बेजुते कोरी पड़ी है, विशेष करके उत्तर मञ्चूरिया में। मञ्चूरिया में पहले कोई जा नहीं सकता था, ख़ासकर चीनी स्वयम् नहीं जाने पाते थे।

मञ्चूरिया का नाम संसार में रण-क्षेत्र होने के नाते प्रसिद्ध हुआ। १८९४-९५ का चीन-जापान युद्ध और १९०४-५ का रूस-जापान समर मञ्चूरिया में ही हुए थे। चीन-जापान की लड़ाई के बाद रूस वालों ने चीन की पूर्वीय रेल (Chinese eastern Railway) निकाल कर मञ्चूरिया के कुछ हिस्सों का द्वार खोल दिया। लेकिन उसका एक टुकड़ा रूस-जापान युद्ध के बाद जापानियों के हाथ पड़ गया। जापानियों के हाथ में जाने से, मञ्चूरिया संसार भर के लिए—क्या चीन, क्या रूस, क्या दूसरे देशों को सुअवसर देने वाली भूमि हो गई।

उत्तर और दक्षिण मञ्चूरिया का नाम सम्बाद-पत्रों में बहुधा आता है, लेकिन उत्तर और दक्षिण का कोई भेद साफ़ तौर पर तय नहीं है।

चीन की पूर्वीय रेलवे की बाबत जुलाई सन् १८९८ में रूस और जापान के शर्तनामे की दफ़ा तीन में पहली बार उत्तर-दक्षिण के भेद के साथ मञ्चूरिया का नाम लिखा गया था। चीन-जापान की १९१५ वाली सन्धि में ये शब्द बहुधा आए हैं। जहाँ तक इधर से उधर आने-जाने या लाने-लेजाने का सम्बन्ध है, कह सकते हैं कि चीन वालों की पूर्वीय रेल की अपेक्षा, उत्तर मञ्चूरिया और दक्षिण मञ्चूरिया की रेलवे बहुत सुरक्षित है।

जलवायु

जापान, इङ्गलैण्ड और जर्मनी से मञ्चूरिया का जलवायु अधिक देहाती है, यद्यपि वास्तव में मञ्चूरिया उसी मेखलाओं (Zones) में है, जैसे उपर्युक्त देश उत्तरी अक्षांश (Latitude) में हैं। इस पर समुद्र के प्रवाह का कम असर पड़ता है, लेकिन मङ्गोलिया के मरु जङ्गल की समीपता का अधिक असर पड़ता है। मञ्चूरिया जापान से स्वाभाविक रूप में अधिक शुष्क है। इसमें शीत बहुत पड़ती है और गर्मी का मौसम छोटा होता है। १९२९ में मञ्चूरिया की जन-संख्या दो करोड़ पचास लाख और दो करोड़ नब्बे लाख के भीतर अनुमान की जाती थी।

प्रति वर्ग मील मञ्चूरिया की आबादी ७६ है; क़रीब-क़रीब जैसी यूरोपीय रूस में है, और कुल संयुक्त राज्यों से अधिक है, क्योंकि संयुक्त राज्यों की आबादी हाल में ३५.५ प्रति वर्गमील बतलाई जाती है। लेकिन जापान की तुलना में, जहाँ पर प्रति वर्गमील की आबादी ४२१ है, मञ्चूरिया बहुत पतली (क्षीण) बसी है। मञ्चूरिया में विदेशियों की जन-संख्या में दस लाख जापानी, जिनमें कोरिया वाले भी शामिल हैं, एक लाख चालीस हज़ार रूसी, पाँच सौ अङ्गरेज़, प्रायः चार सौ जर्मन, तीन सौ फ़्रान्सीसी, तीन सौ अमेरिकन और अनुमान १७०० दूसरी जाति वाले हैं। यह अनुमान १९२९ का है।

प्रबन्ध

मञ्चूरिया में शान्ति और नियम का स्थिर रखना, आजकल पूरा-पूरा चीनियों के अधिकार में है, परन्तु रेलवे के हद में और पट्टे की ज़मीन पर जापानियों का शासन-प्रबन्ध है।

पोर्टसमाउथ की सन्धि से कानटङ्ग प्रायद्वीप के पट्टे की जगहें और दक्षिण मञ्चूरिया की रेलवे लाइन की शाखा चाँगचाऊ से पोर्ट आर्थर के बन्दर तक जापान और रूस को सौंप दी गई हैं; उन्हीं को अधिकार है, कि अपने रेलवे संरक्षक रक्खें और मञ्चूरिया में अपनी-अपनी रेलवे लाइनों की रक्षा करें। ऐसे संरक्षकों की संख्या प्रति किलोमीटर* १५ आदमी से अधिक न होनी चाहिए।

पेकिङ्ग की सन्धि के साथ जो अतिरिक्त दफ़ाएँ जोड़ी गई हैं, उनके अनुसार जापान को अधिकार है कि अपनी रेलवे का संरक्षण उस समय तक रक्खे, जब तक कि चीन विदेशियों के जान-माल की रक्षा करने के लायक़ न हो।

जापानी सेना का रहना, यद्यपि सन्धिपत्र के अनुसार सेना दक्षिण मञ्चूरिया की रेलवे लाइनों में रहती है, पिछले दिनों सन्देह का कारण हुआ। लेकिन जापान मञ्चूरिया की वर्तमान परिस्थिति में अपनी सेना को बनाए रहने की अनिवार्य आवश्यकता देखता है। क्योंकि यह प्रान्त डाकुओं की दुष्कृति के लिए बदनाम है। जापानी सेना के रहते हुए भी इन डाकू दलों ने रेलवे की काँची (Zone) पर बारम्बार आक्रमण करने की चेष्टा की है।

डाकुओं की दया पर निर्भरता

अनेक बार दस्यु-दल ने तार काट डाले और दूसरी दुष्टताएँ कीं। अगर दक्षिण मञ्चूरिया की रेलवे से जापानी पहरा उठा लिया जाय, तो निस्सन्देह इन ज़िलों को डाकुओं की दया पर निर्भर रहना पड़ेगा और यही दशा बेचैनी की मञ्चूरिया के दूर-दूर जगहों में भी पैदा हो जायगी।

इस बात को मनोयोग से आप लोग सुनेंगे। कई समुदाय के लोग मञ्चूरिया में विदेशियों के प्रभुत्व को दोष देते हैं, लेकिन उत्तर चीन शाँगटङ्ग से आकर बसे हुए लोग ज़ोर के साथ मञ्चूरिया छोड़ कर भागे जा रहे हैं। यह भी एक मार्के की बात है कि चीन वाले मञ्चूरिया के उसी भाग को अधिक पसन्द करते हैं, जो जापानियों के अधिकार में है।

जब कि समस्त मञ्चूरिया में जापानी आबादी पिछले २० वर्षों में मोटी तौर पर दूनी हो गई है, रेलवे की हद के भीतर की चीनी आबादी, जो १९०७ में ९,००० थी, वह १९२७ में २,०२,००० हो गई है। दूसरे शब्दों में यों कहें कि जहाँ साधारणतः मञ्चूरिया में चीन की आबादी दो प्रतिशत बढ़ी है, वहाँ जापान के हलके में २० बढ़ी है।

चीनी क्यों जापानी हल्क़ा पसन्द करते हैं, इसका कारण स्पष्ट है। क्योंकि जापानी हल्क़े में नवीन सुधार हुए हैं, वहाँ कम और निश्चित कर हैं तथा पुलिस और जान-माल की रक्षा का उत्तम प्रबन्ध है।

अँधेरा अतीत

वर्तमान मञ्चूरिया को अच्छी तरह जानने के लिए हम जापान के आने से पहले की मञ्चूरिया को देखें और उन दिनों की मञ्चूरिया का असली चीन से मिलान करें, तब मालूम होगा कि वह अनुन्नत प्रदेश था।

शेष चीन के साथ मिलान करें तो मञ्चूरिया डाकुओं से तङ्ग जङ्गली प्रदेश था, जिसकी असली चीन को बहुत थोड़ी ख़बर और उससे भी कम चिन्ता थी। मुख्य चीन में हम नवीन उन्नति देखने को पा सकते हैं, जैसे रेलवे, बन्दरगाह, तार और अनेक दूसरी नवीन सभ्यता की चीज़ें, लेकिन मञ्चूरिया उसी अनुन्नति दशा में पड़ी थी।

पिछले तीस वर्षों में मञ्चूरिया ने न केवल मुख्य चीन को उन्नति की दौड़ में पकड़ लिया है, किन्तु अनेक बातों में उससे आगे बढ़ गई है। जहाँ चीन ख़ास में घरू लड़ाई (सिविल वार) और दूसरे उपद्रवों ने सारी उन्नति को एकदम रोक दिया है, ख़ास कर आने-जाने की सुविधा को, वहाँ मञ्चूरिया आगे बढ़ती जा रही है। हारबिन में जहाँ तीस वर्ष पहले एकमात्र चीनी नगर था, आज चार लाख निवासियों की महती नगरी है। डायरन का उजाड़ समुद्र तट, जिसका किसी ने नाम भी न सुना था, आज चीन का दूसरा बन्दरगाह है। पिछले २० वर्ष में चीन की आबादी दूनी हो गई है और मञ्चूरिया का विदेशी व्यापार दो करोड़ से बढ़ कर ७० करोड़ 'कैकवान टेल्स' (चीनी सिक्का) वार्षिक हो गया। इस तरह मञ्चूरिया जङ्गली अवस्था से अनेक बातों में चीन का अत्यन्त सम्पन्न प्रान्त बन गया है और अब चीन का एक तिहाई विदेशी व्यापार इसके द्वारा होता है।

विदेशी साहाय्य

भूलना न चाहिए कि मञ्चूरिया की समुन्नति में प्रत्यक्ष और परोक्ष-रूप से जुदा-जुदा कई देशों ने बड़ी सहायता की है। ग्रेट-ब्रिटेन ने 'पेकिङ्ग केउन' रेलवे लाइन बनाई, जिसका एक लाभप्रद हिस्सा मञ्चूरिया में है। ब्रिटेन ने दक्षिण मञ्चूरिया रेल बनाने के लिए सबसे पहले रुपया उधार दिया।

दक्षिण मञ्चूरिया रेलवे कम्पनी, ख़ास कर अपने जीवन के आरम्भ में, अपना माल ख़रीदने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका की आश्रित रही, यहाँ तक कि

(शेष मैटर २९वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

---

* एक किलोमीटर ५ फ़र्लाङ्ग अर्थात् १,१०० गज़ का होता है। यह फ़्रान्सीसी ज़मीन का नाप है, जो १,००० मीटर का होता है। एक मीटर एक गज़ से कुछ अधिक समझना चाहिए।

—स० 'भविष्य'
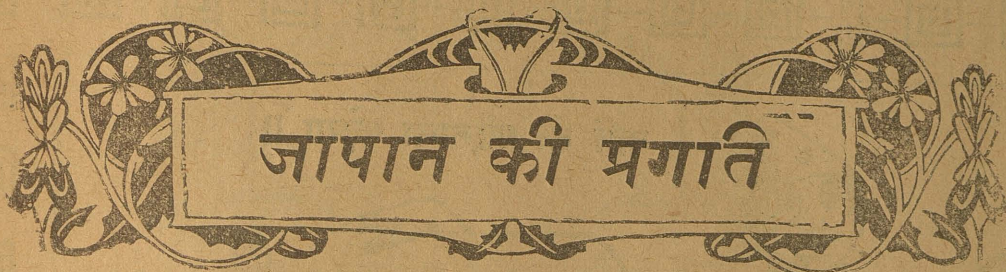
डॉ० तारकनाथ दास ने 'लिबर्टी' में जापान के सम्बन्ध में कुछ जानने योग्य बात लिखी हैं, हम उन्हें नीचे उद्धृत करते हैं :—

—सं० 'भविष्य'

टोकियो में ख़बर है कि अफ़ग़ान-सरकार ने जापान से कुछ इञ्जिनियर इसलिए माँगे हैं कि वे अफ़ग़ानों को इञ्जिनियरी सिखाएँ और उस रेलवे के काम का निरीक्षण करें, जो रूस की पद्धति के अनुसार योलेनटान से कैंटा के पास अब्दुल्लाह तक बनेगी। यह भी कहा गया है कि जापान अपना पाँच करोड़ 'यन' (५०,००,००० पौण्ड अर्थात् ६,६६,६६,६६६ रुपया) इस काम में लगाए।

एशिया के निकट पूर्व में इस समाचार का एक ख़ास महत्व है, क्योंकि इससे अफ़ग़ानिस्तान में जापान का प्रभाव बढ़ेगा और जापान की राजनैतिक जागृति पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। गत यूरोपीय महासमर की समाप्ति के बाद से जापान ने नियमबद्ध रूप से उस नीति का अनुसरण किया है, जिससे तुर्की और फ़ारस के साथ उसके राजनीतिक और साम्पत्तिक सम्बन्ध बढ़ते रहें। अब उसने अफ़ग़ानिस्तान की ओर पैर बढ़ाया है। यहाँ यह बतला देना अच्छा होगा कि पिछले महासमर के बाद अफ़ग़ानिस्तान ने अपने परराष्ट्रीय विषयों पर से ब्रिटिश अधिकार हटा कर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है। यह बात ज़ारशाही युग के रूस और ब्रिटेन में उस समय तय हो चुकी थी, जब ब्रिटेन के परराष्ट्र विषयों के सञ्चालक सर एडवर्ड ग्रे थे, जो अब अलग हो गए हैं। रूस की अतिक्रान्ति (Revolution) और उसके फ़ारस तथा अफ़ग़ानिस्तान के सम्बन्ध में पुराने ऐङ्गलो इण्डियन समझौतों के मानने से इन्कार कर देने पर ऊपर कहे हुए दोनों देशों को अर्थात् अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारस को अपनी स्वाधीनता की स्थापना का अवसर मिल गया। अफ़ग़ानिस्तान की पूर्ण-स्वाधीनता को पुष्ट करते हुए भूतपूर्व अमीर अमानुल्लाह ने तुर्की से एक नई सन्धि द्वारा दृढ़ मैत्री जोड़ी और तुर्कों को अफ़ग़ानी सेना का सङ्गठन करने के लिए बुलाया। साथ ही फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान और तुर्की ने रूसी सोवियट प्रजातन्त्र के साथ यह शर्त की कि रूस के साथ किसी का युद्ध होगा, तो हम तटस्थ रहेंगे और इसी तरह रूस भी हमारे शत्रु के साथ न मिल कर तटस्थ रहेगा।

बाद में जब अमीर अमानुल्लाह इङ्गलैण्ड गए तो उनसे प्रस्ताव किया गया कि इङ्गलैण्ड और अफ़ग़ानिस्तान का प्रेम-समझौता हो जाय अथवा अफ़ग़ानिस्तान रुपया लिया करे, जैसा पहले अफ़ग़ानिस्तान को दिया जाता था और अब नैपाल को सालाना एक लाख रुपया मिलता है। इस प्रस्ताव को अमीर अमानुल्लाह ने स्वीकार नहीं किया। इसके अनन्तर अफ़ग़ानिस्तान में अमीर अमानुल्लाह के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो गया। परन्तु इस रहस्य का पता नहीं लगा कि विद्रोह का मूल कारण क्या था? अवश्य यह ख़बरें मिलती रहीं कि विद्रोहियों को धन और दूसरी चीज़ों की सहायता बाहर से मिल रही है। परन्तु पानी भरने वाले भिश्ती का बेटा बच्चा सक्का, अमानुल्लाह के विरुद्ध बग़ावत का झण्डा उठाने वाला बहुत दिन न ठहर सका और अन्त में वर्तमान अमीर नादिर ख़ाँ ने काबुल के सिंहासन पर अधिकार जमाया। इसमें सन्देह का कोई कारण नहीं कि अमीर नादिर ख़ाँ अङ्गरेज़ सरकार के विश्वासपात्र हैं।

अमीर नादिर ख़ाँ

जान पड़ता है कि अमीर नादिर ख़ाँ अफ़ग़ानिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए चिन्तित हैं और चाहते हैं कि इस निमित्त रूसी सोवियट के साथ साधारण सद्भाव पैदा हो जाय और फ़्रान्स तथा जापान के साथ भी मैत्री का सम्बन्ध स्थापित हो।

तुर्की, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान के साथ दोस्ती पैदा करने की नियमबद्ध कोशिश करने में जापान की भीतरी मन्शा क्या है? यहाँ यह प्रश्न उठता है, लेकिन इसका उत्तर ज़रा पेचीदा है। हाँ, यह कह सकते हैं कि तुर्की, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान के साथ जापान की कोई विशेष मनोवृत्ति नहीं है, सिवा इसके कि रूस-जापान, इङ्गलैण्ड-जापान और चीन-जापान के सम्बन्धों का प्रतिक्षेप मात्र है। पिछले महासमर के पहले जापान की मैत्री ब्रिटेन, रूस और फ़्रान्स से थी। फ़्रान्स और जापान की एकता अब भी मौजूद है, क्योंकि न कभी यह तोड़ी गई, न इसकी बदगोई उड़ी, लेकिन १९२१-२२ के वाशिङ्गटन की नौसैना कॉन्फ्रेन्स (Naval Conference) के बाद इङ्गलैण्ड और जापान की मित्रता का विच्छेद हो गया। रूस की सोवियट सरकार ने ज़ार के रूस की सारी सन्धियों को रद्द कर दिया, जिनसे चीन की राजसत्ता में बाधा पड़ती थी।

एशियाई राजनीति

निस्सन्देह सुदूर पूर्व में जापान अपने को कठिन अवस्था में पाता है और वह ऐसी एशियाई शक्तियों की सहायता चाहता है, जिनके स्वार्थ जापान के स्वार्थों के विरुद्ध न पड़ते हों। कोई बात जिससे टर्की, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान को मज़बूती मिलती हो, जापान के लिए लाभदायक होगी, क्योंकि ब्रिटेन और रूस को इन शक्तियों पर चौकसी करने में मदद करनी पड़ेगी। वास्तव में यदि भारत स्वतन्त्र होता या भारत को अपने परराष्ट्र सम्बन्ध, धन और सेना के निश्चय करने की स्वतन्त्रता होती तो जापान हिन्दुस्तान से भी मेल करने की चेष्टा करता, क्योंकि इससे जापान का ब्रिटेन, रूस और चीन के साथ जो सम्बन्ध है, सुरक्षित हो जाता।

जापान के साथ मिल कर काम करने वाली कोई शक्ति एशिया में न होने के कारण जापान के राजनीतिज्ञ टर्की, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान का मुँह ताकते हैं।

अफ़ग़ानिस्तान के युद्ध-कौशल के लिए उपयुक्त अवस्थिति और उसकी जनता की वीरता-पूर्ण भावना संसार की राजनीति में एक विशेष महत्ता रखती है और जापान इनसे काम लेना चाहता है।

❋ ❋ ❋

जापान और मञ्चूरिया

(२७वें पृष्ठ का शेषांश)

आज भी वह अमेरिका के क़िस्म की रेल समझी जाती है।

चीन की पूर्वी रेलवे रूस ने बनाई, फ़्रान्स ने इसकी तैयारी में बहुत से रुपयों की मदद दी। लेकिन मैं आशा करता हूँ, आप मुझे इस बात के लिए क्षमा करेंगे, कि सारी मञ्चूरिया को ध्यान में लेकर देखें तो उसकी उन्नति का सब से अधिक श्रेय जापान को है।

उपसंहार में मैं कहना चाहता हूँ कि आज मञ्चूरिया में जापान, चीन और साधारणतः सारा संसार एक ही बात देखना चाहता है और वह यह कि वहाँ शान्ति और समृद्धि स्थापित हो। इस परस्पर आश्रित संसार में हर एक राष्ट्र के जीवन की कुञ्जी होनी चाहिए; 'तुम भी रहो और दूसरों को भी रहने दो'। कोई भी देश कितना ही धनवान क्यों न हो, संसार में अकेला नहीं स्थिर रह सकता।

इस दशा में जो एक बात ज़रूरी है, वह यह है कि जब कि हम सबके समान सुख की चेष्टा करते हों, तो परस्पर सहयोग से काम करें और मञ्चूरिया को न केवल अत्यन्त समृद्धिशाली प्रदेश बनावें, बल्कि सारे संसार के लिए एक नमूना खड़ा कर दें।

❋ ❋ ❋

[श्री॰ विश्वेश्वरप्रसाद जी कोईराला]

मैं .क़ैदी हूँ—प्रत्येक क्षण इस अस्तित्व का अनुभव कर रहा हूँ। मैं यदि कुछ सोचता भी हूँ, तो .क़ैदी होने की हैसियत से। कोई भी सोचने में स्वतन्त्र है, लेकिन मुझे क्यों सोचने की भी स्वतन्त्रता नहीं? मैं सोच सकता हूँ कि मैं क़ैदी नहीं हूँ, फिर क्यों नहीं सोच पाता? अपनी इस अवस्था को किस तरह भूल जाऊँ? आँखें मूँद लेने पर भी क्यों मुझे जेल की भीषण दीवारें, बेड़ी, हथकड़ी और अपना यह नम्बर ही साफ़-साफ़ दिखाई पड़ता है? मैं अपने पीछे देखता हूँ तो सब कुछ धुँधला दिखाई पड़ता है। स्मृति भी एक धुँधली चित्रपटी-सी दीख पड़ती है—स्वप्नों के ऊपर भी बादलों-सा पर्दा पड़ा मिलता है।

मैं इतना ही जानता हूँ कि मैं क़ैदी हूँ और सब स्वप्न समान। क्या यह सच बात है कि मेरे बाहर भी कोई सृष्टि है? जिसका कभी मैं भी एक प्राणी था। क्या यह सच है कि मैं भी कभी घूमता-फिरता, सबके साथ हँसता, खेलता, कूदता था। क्या यह भी सच है कि मेरे भी माता-पिता हैं, भाई-बहिन हैं! ये बातें सच हो सकती हैं, किन्तु इन सब पर इस काल-कोठरी की दीवारों का मोटा पर्दा पड़ा हुआ है।

मुझे यहाँ आए कितने दिन हुए, पता नहीं। कब सुबह होती है, कब शाम, इतना भी तो नहीं जान पाता। हाँ, मेरे लिए सुबह उस समय होती है, जब सन्तरी बड़ी-बड़ी चाभियों के गुच्छे गर्दन में लटकाए हुए झम-झम आवाज़ करते आता और दरवाज़ों के छेदों में से सुबह होने का सम्बाद दे जाता। और, शाम उस समय होती, जब किसी अज्ञात वेदना से चिल्लाती हुई चाभियों की ध्वनि फिर सुनाई पड़ती, साथ ही वह सन्तरी मेरे दरवाज़े के पास आकर २५ तक गिनती गिनता तथा लोहे के मोटे तालों को ज़ोर से खड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ जाता। कुछ ही देर में उन चाभियों की झनझनाहट सन्ध्या के सन्नाटे में विलीन हो जाती।

मेरी काल-कोठरी में चींटियों की एक नन्हीं-सी गुफ़ा है। उसमें से वे किस उत्साह से निकल पड़ती हैं—क़तार की क़तार! एक दिन मैं कुछ देर तक उन्हें देखता रहा, अन्त में रहा न गया। सबको एक-दो-तीन नम्बर देता हुआ गिनने लगा। इस तरह एक ट्रेन को पार कर लिया—आह कठिनता से!

ओह, चींटियाँ भी स्वाधीन हैं! मैं रह-रह कर उन्हें देखता था, अपने को भूल-भूल कर उन्हें फिर-फिर गिनता था। किन्तु धीरे-धीरे अन्धकार फैला और वे स्वाधीनता के शिशु, मेरी पराधीन दृष्टि से ओझल हो गए!

सुबह—

फिर वही चाभियों की झुनझुन-झुनझुन! प्रत्येक चाभी इस तरह टकरा रही थी, मानो वह कड़ी में बन्दी रहना नहीं चाहती। वे अपनी वेदना को जिस भाषा में कह रही थीं, उससे मैं अनभिज्ञ था; तो भी उनके साथ मेरी पूर्ण सहानुभूति थी। मैं उनकी विकलता का इज़हार अधिक सुन न सका, दर्द से कानों को बन्द कर लिया।

× × ×

"कोठरी नम्बर पाँच! उठो, सवेरा हुआ।"—अभी द्वार अच्छी तरह खुला भी न था कि सन्तरी ने चिल्ला कर जगा दिया। मैं आँखें मल कर उठ बैठा। मैं अपनी कोठरी से, कल्पना के अभिन्न सखा—स्वप्नों—के दिव्य-लोक में जा पहुँचा था। वहीं स्वतन्त्रता के सङ्ग खेल रहा था। किन्तु वाह रे सन्तरी, मुझे मेरा इतना सुख भी............!

तो भी, मैं बता दूँ—.क़ैदियों का जीवन जेल में .ज़्यादा नहीं बीतता; वे अधिकतर अपनी कल्पनाओं के मुक्त-वायुमण्डल में ही विचरते रहते हैं। इसीलिए तो .क़ैदी जेल में जी भी सकते हैं। वे बच्चों की तरह अपने अन्तर्जगत में आनन्दमयी अभिलाषाओं के घरौंधे बनाते-ढहाते, उसी में मग्न रहते हैं।

उसी कल्पना-लोक में मैं भी कितनी ही बार चींटी बन कर नन्हें-नन्हें छिद्रों से जेल के बाहर निकल जाता। कितनी ही बार पक्षी बन कर आकाश में उड़ जाता। कितनी ही बार दिन का प्रकाश बन कर, द्वार के बन्द रहते हुए भी, बाहर, सायङ्काल में मिल जाता। कितनी ही बार अन्धकार बन कर, प्रातःकाल में ग़ायब हो जाता! कितनी ही बार पवन बन कर, अदृश्य हो जाता! किन्तु, इतना स्वतन्त्र होकर भी मैं अपनी साढ़े तीन हाथ की जर्जरित देह को स्वतन्त्र नहीं कर पाता। क्यों? इसीलिए न, कि एक क़ैदी हूँ—केवल एक क़ैदी!

हिन्दी-साहित्य में चरित्र-चित्रण

[श्री० नरसिंहराम जी शुक्ल]

हापुरुषों की जीवनियाँ प्रायः सभी देशों में लिखी और पढ़ी जाती हैं। ये जीवनियाँ उनके काल के इतिहास हैं। क्योंकि किसी देश का इतिहास, वहाँ के महापुरुषों के ही कार्य-कलाप का परिणाम होता है; वे ही अपने आदर्श कार्यों द्वारा देश के इतिहास का निर्माण करते हैं। यदि संसार में महात्मा गौतम बुद्ध अवतीर्ण न हुए होते तो बौद्ध-धर्म का प्रादुर्भाव कहाँ से होता ? नेपोलियन ने क्रान्ति न मचाई होती तो फ़्रान्स का इतिहास कैसा होता ? इन प्रश्नों पर जब हम विचार करते हैं, तो उनसे यही निष्कर्ष निकलता है कि महापुरुषों की जीवनियाँ साधारण वस्तु नहीं हैं। देशवासियों को उन्हें अमूल्य सम्पत्ति समझ कर सञ्चित करना चाहिए।

जीवनियाँ प्रायः दो प्रकार की लिखी जाती हैं। एक तो ऐतिहासिक ढङ्ग से और दूसरी साहित्यिक ढङ्ग से। ऐतिहासिक जीवनियाँ एक प्रकार से इतिहास के पन्ने ही होते हैं। वे राजनीतिक प्रभाव से रँगी रहती हैं। ऐसी जीवनियाँ प्रायः इतिहासज्ञों द्वारा लिखी जाती हैं। साहित्यिक ढङ्ग से लिखी गई जीवनियाँ, ऐतिहासिक ढङ्ग से लिखी गई जीवनियों से विशेष महत्त्वपूर्ण समझी जाती हैं। दोनों में विशेष सामञ्जस्य पाया जाता है। उनकी घटनाएँ प्रायः एक ही रहती हैं। परन्तु एक कला से युक्त होती है और दूसरी कला से हीन, एक नीरस होती है और दूसरी सरस।

परन्तु दोनों प्रकार की जीवनियाँ अपने काल की जीती-जागती तस्वीरें होती हैं, वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा तत्समय सम्बन्धी भिन्न-भिन्न दशाओं का समष्टीकरण करती हैं। आधार तो केवल एक महापुरुष का चरित्र होता है, परन्तु उसके पीछे उस समय की सारी अवस्थाओं का दिग्दर्शन होता है।

ऐसी जीवनियों का लिखना उतना आसान नहीं है, जितना कि आजकल के लेखक महोदयगण समझते हैं। इसके लिए विशेष अध्ययन की आवश्यकता होती है। किसी भूतकाल के ऐतिहासिक महापुरुष की जीवनी लिखना उतना कठिन नहीं है, जितना कि वर्तमान काल के महापुरुषों का है।

वर्तमान काल के महापुरुषों के सम्बन्ध में हम ऐसी बातें कदापि नहीं लिख सकते, जो इतिहास के ख़्याल से भ्रमपूर्ण हों। क्योंकि उनके समय के लोग वर्तमान रहते हैं और उनका शीघ्र प्रतिवाद कर सकते हैं। परन्तु एक ऐतिहासिक महापुरुष के सम्बन्ध में कुछ ऐसी बातें भी जोड़ दी जा सकती हैं, जिनका उल्लेख किसी पूर्ववर्ती इतिहासकार के ग्रन्थ में नहीं होता। बहुधा लोग ऐसा करते हैं। परन्तु उसके लिए प्रबल प्रमाण की आवश्यकता होती है।

जीवन-चरित्रों के लिखने का अधिकारी कौन हो सकता है ? यह विषय विवाद-ग्रस्त है। क्योंकि कुछ लोगों का कहना है कि जीवन-चरित्र लिखने के अधिकारी केवल वही हो सकते हैं, जोकि चरित्रनायक के साथ कुछ दिन रहे हों, जिसने चरित्रनायक का मनोवैज्ञानिक (Psychological Study) अध्ययन किया हो। यदि सच पूछा जाय तो ऐसे ही लोग चरित्रनायक की सर्वाङ्गीण जीवनी लिख सकते हैं। उन्हीं की लिखी जीवनियाँ प्रमाणित मानी जायँगी। उनके आधार पर दूसरी जीवनियाँ तैयार हो सकती हैं। परन्तु जिन लेखकों ने चरित्रनायक का दर्शन तक भी नहीं किया है, चरित्रनायक के साथ एक दिन भी रहने का जिन्हें अवसर नहीं प्राप्त हुआ, उनकी लिखी हुई जीवनियाँ प्रामाणिक नहीं मानी जा सकतीं।

हिन्दी-साहित्य में ऐसी ही जीवनियाँ पाई जाती हैं। जिन-जिन लेखकों ने जीवनियाँ लिखने का व्यवसाय आरम्भ किया है, उनका न तो कोई अध्ययन हुआ है और न वे चरित्रनायक के विषय में कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें जानते हैं, जिनसे उनके चरित्र पर प्रकाश पड़े। ऐसे लोग कुछ सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही अमुक महापुरुष के जीवन-चरित्र के नाम पर कुछ पन्ने रँग डालते हैं।

इतिहास-प्रधान विषयों में तत्कालीन महापुरुषों की जीवनियाँ विशेष स्थान रखती हैं। उनके बिना उस काल का इतिहास अधूरा रह जाता है। दो-एक जीवनियों को छोड़ कर हमारे साहित्य में जितनी जीवनियाँ लिखी गई हैं, उनमें से कोई १५० पृष्ठ से अधिक की नहीं मिलती। इतने कम पृष्ठों में एक 'काल' का इतिहास किस तरह पूरा लिखा जा सका है !!

साहित्य के कई अङ्ग माने गए हैं। किसी भाषा का साहित्य तब तक सर्वाङ्गीण समुन्नत नहीं कहा जा सकता, जब तक कि उसके प्रत्येक अङ्ग की पूर्ति न हो। हिन्दी-साहित्य की जहाँ एक ओर वृद्धि हो रही है और वह राष्ट्र-भाषा के स्थान को सुशोभित करने जा रही है, वहाँ उसमें कुछ ऐसी ख़ामियाँ हैं, जो प्रत्येक सहृदय व्यक्ति को खटकती हैं। इन ख़ामियों में 'जीवन-चरित्रों' की ख़ामी कम महत्त्व नहीं रखती। जब हम पाश्चात्य भाषाओं तथा बङ्गला और गुजराती आदि देशी भाषाओं में चार-चार, छः-छः भाग की मोटी-मोटी पुस्तकें इस विषय पर देखते हैं, तो हमें अपनी हिन्दी की दशा पर बड़ा खेद होता है। बङ्गला में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की एक जीवनी है, जो लगभग ६०० पृष्ठों की है। उसका हिन्दी-अनुवाद भी हो चुका है। इतनी बड़ी जीवनी हिन्दी-साहित्य में औरों की कौन कहे, स्वयं महात्मा गाँधी और मालवीय जी की शायद ही हो। पाश्चात्य साहित्यों की तो बात ही न्यारी है, वहाँ तो साधारण कोटि के महापुरुषों की जीवनियाँ भी चार-चार खण्डों की निकलती हैं ? राजनैतिक महापुरुषों की अलग, वैज्ञानिकों की अलग, सङ्गीत शास्त्रियों, अभिनय-नेताओं और पात्रों अर्थात् प्रत्येक गुण के गुणियों की जीवनियाँ उनके यहाँ वर्तमान हैं। परन्तु हमारे साहित्य में नोबुल पुरस्कार के विजेता श्री० रमण की जीवनी दस पन्ने की भी नहीं है। जब उन्हें पुरस्कार मिला था, तो दो-एक समाचार-पत्रों में छोटे-मोटे 'नोट' निकल गए थे। स्वर्गीय गायनाचार्य विष्णुदिगम्बर जैसे पुरुष यदि पाश्चात्य देश में होते तो इनकी 'जीवनी' कम से कम दो-तीन खण्ड की अवश्य प्रकाशित की जाती और आज उन्हें सारा संसार जानता होता।

यह हिन्दी का दुर्भाग्य है कि इधर न तो बड़े-बड़े लेखकों का ही ध्यान आकर्षित हुआ है और न प्रकाशक ही इस ओर आगे बढ़े। छोटी-मोटी जीवनियाँ निकालने का श्रेय स्वर्गीय पं० रामजीलाल शर्मा को है। वहाँ से अब तक कुल ४० के लगभग महापुरुषों की जीवनियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। परन्तु वे सभी १०० पृष्ठों से कम की हैं। अधिकतर बालकों के लिए लिखी गई हैं। पं० ओङ्कारनाथ वाजपेयी ने भी कुछ जीवनियाँ प्रकाशित करना आरम्भ किया था, परन्तु उनके अवसानोपरान्त उनके उत्तराधिकारियों ने 'रीडरबाज़ी की दौड़ (??)' में पण्डित जी के उस शुभकार्य को ताक़ पर उठा कर रख दिया।

लेखकवृन्द भी जीवनियाँ लिखने में उतना परिश्रम करना नहीं चाहते, जितना कि 'कहानी' और उपन्यास लिखने में। कहानियाँ आजकल बेतरह लिखी जा रही हैं और इतनी अधिक संख्या में कि जब सम्पादक-गण 'सधन्यवाद वापिस' करते-करते थक गए, तो लौटाने के लिए पेशगी टिकट मँगाने लगे। इसमें भी जब कुछ अधिक परिश्रम जान पड़ा, तो उन्हें रद्दी की टोकरियों में डालने लगे। लेखकों को मालूम होना चाहिए कि ये कहानियाँ १०० पीछे ५ ही सम्पादकों द्वारा पढ़ी जाती हैं। और ऐसी दस पढ़ी गई कहानियों में से एक या दो को 'काले अक्षरों में,' प्रेस-मैशीन पर चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होता है। कई सम्पादक तो खुल्लमखुल्ला अपने पत्रों में नोटिस तक देने लग गए हैं कि हमारे यहाँ कहानियाँ तब तक न भेजिए, जब तक कि माँगी न जायँ।

लेखकगण यदि कल्पित कहानियाँ लिखना छोड़ कर महापुरुषों के जीवन की कहानियाँ लिखा करें और सम्पादक लोग इन कहानियों को अपने पत्र-पत्रिकाओं में स्थान दें, तो उनसे जनता का विशेष उपकार हो। प्रत्येक ज़िले में, प्रत्येक नगर में ऐसे-ऐसे महापुरुष पड़े हुए हैं, जिन्होंने देश और समाज के लिए यथेष्ट त्याग स्वीकार किया है; देश की उन्नति में जिनके परिश्रम काम आए हैं, परन्तु ऐसे लोगों को, सिवाय उस स्थान के, जहाँ के ये रहने वाले होते हैं और कोई नहीं जानता। यहाँ मैं दो-एक उदाहरण दे देना उचित समझता हूँ।

प्रयाग में स्वर्गीय पं० मोतीलाल और पं० जवाहरलाल को छोड़ कर और भी कतिपय बड़े-बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने जीवन में बड़े से बड़ा काम किया है, परन्तु उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं और यदि जानते भी हैं तो केवल उनके नाम को। ऐसे लोगों में श्री० पुरुषोत्तमदास जी टण्डन, श्री० सी० वाई० चिन्तामणि, श्री० तेजबहादुर सप्रू आदि महापुरुष हैं।

इसी तरह काशी को लीजिए। बाबू श्यामसुन्दर दास जी ऐसे हिन्दी-साहित्य-सेवी, बाबू शिवप्रसाद गुप्त से दानी, बाबू भगवानदास जी से दार्शनिक, पं० रामनारायण मिश्र से शिक्षा-जगत् में कार्य करने वाले, आचार्य ध्रुव से पण्डित भारतवर्ष में बहुत कम होंगे। परन्तु उनके जीवन की घटनाओं से जन-समाज बिल्कुल अनभिज्ञ है। इन मध्यम श्रेणी के महापुरुषों ने देश के उत्थान में जितना ठोस कार्य किया है, उतना ठोस कार्य बड़े-बड़े 'महापुरुषों' ने भी नहीं किया है। इसके बदले हम इतना भी नहीं करते कि हम उनकी स्मृति तो बनाए रक्खें। जिन-जिन स्थितियों में पड़ कर उन्होंने कार्य किया है और कर रहे हैं, उन्हें लिपिबद्ध कर, भावी सन्तान के लिए कुछ 'मसाला' तो तैयार रक्खें।

जीवन-चरित्रों के लिखने में हम दो भयङ्कर भूलें करते हैं। ऐसी भूलें पाश्चात्य देशों के लेखक कभी भी नहीं करते। हम बहुधा इस सम्बन्ध में पक्षपात और सङ्कीर्णता से काम लेने लगते हैं। दूसरे हम उन्हीं मनुष्यों की जीवनी लिखते हैं, जो बहुत बड़े अर्थात्

सबसे बड़े होते हैं। हमारे साहित्य में छोटी-मोटी जितनी भी जीवनियाँ हैं, उनमें उन्हीं लोगों की अधिक पाई जाती हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय जागृति में विशेष महत्व प्राप्त किया है। यहाँ तक कि रवीन्द्रनाथ टैगोर और जे० सी० बोस जैसे महापुरुषों की भी कभी-कभी उपेक्षा कर दी जाती है, क्योंकि वे राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग नहीं ले सकते हैं। यह सच है कि देश की पराधीनता के कारण वर्तमान समय में भारतवासियों के लिए 'देशभक्ति तथा देशभक्त' जितना महत्वपूर्ण है उतना अन्य वस्तु नहीं! परन्तु कौन कह सकता है कि सच्चा देशभक्त कौन है? क्या राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले ही सच्चे देशभक्त हैं। लेखक, कारीगर, वैज्ञानिक, पत्रकार, चित्रकार आदि क्या देशभक्त नहीं कहे जा सकते? आज यूरोप में श्री० उदयशङ्कर तथा श्री० तिमिरवरण नाथ के दो भारतीय युवक सङ्गीत-कला की जो श्रेष्ठता दरशा रहे हैं, क्या वे इसके द्वारा देश की कुछ भी सेवा नहीं कर रहे हैं? फिर हम ऐसे देश-सेवकों की उतनी मान-प्रतिष्ठा क्यों नहीं करते? हमारी इस मनोवृत्ति से काफ़ी हानि हो चुकी है। सैकड़ों देशभक्त आत्माएँ तड़पती हुई चली गईं। न तो हमने जीते जी उनका सम्मान किया और न मरने पर उन्हें इतिहास में स्थान दिया। क्या यह हमारी अकृतज्ञता नहीं है? हिन्दी साहित्य-सेवियों को ही लीजिए। पं० प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, पं० बालकृष्ण भट्ट, बाबू बालमुकुन्द गुप्त और पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तक का जीवन-चरित्र नहीं है।

यह तो हुईं चरित्रनायकों के चुनाव के सम्बन्ध की तथा लेखक के सम्बन्ध की बातें। जब हम जीवनियाँ लिखने लगते हैं, तो पात्रों के सब गुणों को एक ही जगह पर उठा कर रख देते हैं। उसकी देशभक्ति, उसकी विद्या, उसकी नीतिज्ञता आदि का वर्णन खली-भूसे की तरह एक ही में मिश्रित कर देते हैं। इससे पाठक को यह नहीं समझ में आता कि वह जिस महापुरुष के जीवन का अध्ययन कर रहा है. उसने किस-किस क्षेत्र में, कितनी उन्नति की है। अङ्गरेज़ी तथा अन्य पाश्चात्य भाषाओं में किसी चरित्रनायक का वर्णन करेंगे, तो उसके प्रत्येक गुण को अलग-अलग कहेंगे, जैसे अब्राहम-लिङ्कन की जीवनी है। इसकी, Abraham as a Laweer, Abraham as a Politician, as a President. as a Statesman. आदि अलग-अलग रूप में कई जीवनियाँ प्रस्तुत हैं। इससे चरित्रनायक के प्रत्येक गुण का थोड़ा-थोड़ा परिचय पाठक को मिल जाता है। अङ्गरेज़ी जीवन-चरित्र-लेखकों की यह प्रवृत्ति इतनी आगे बढ़ी है कि वे साहित्यिक पुरुषों के भी राजनीतिक तथा धार्मिक गुणों की और राजनीतिक पुरुषों के साहित्य तथा धार्मिक गुणों का वर्णन करते हैं। मैथ्यू ऑरनॉल्ड अङ्गरेज़ी भाषा के एक बड़े कवि हो गए हैं। परन्तु उनकी जीवनी में उनकी राजनीतिक पहुँच तक का वर्णन किया गया है। हमारे लेखकवृन्द कहेंगे कि मैथ्यू ऑरनॉल्ड से राजनीति से क्या सम्बन्ध, वह तो केवल कवि था। इससे आप देखेंगे कि लेखकों की इस भावना ने कहाँ तक हमारे महापुरुषों के जीवन के विशेष भागों को अन्धकार में रख छोड़ा है। महाकवि तुलसीदास की जितनी जीवनियाँ लिखी गई हैं और जिन-जिन लोगों ने लिखी हैं, उनको केवल भक्त-कवि के रूप में ही दिखाया गया है। परन्तु क्या तुलसीदास जी समाज-सुधारक न थे? क्या वे केवल कवि और भक्त ही थे? अन्य रूप में उनका महत्व कुछ भी न था? परन्तु उनकी रामायण और अन्य ग्रन्थ इस बात के पूरे प्रमाण हैं कि वे एक कट्टर सामाजिक क्रान्तिकारी थे। यही नहीं, वे राजनीति के भी पण्डित थे। इसी तरह एक दूसरा उदाहरण लीजिए। महात्मा गाँधी की प्रत्येक जीवनी में हम उनके 'सत्याग्रह' को और कहीं-कहीं कुछ समाज सुधार को छोड़ कर अन्य गुणों का वर्णन नहीं पाते। परन्तु महात्मा गाँधी क्या केवल सत्याग्रही ही हैं? हमारी समझ में वे साहित्यिक हैं, हास्य-रस के प्रेमी हैं। परिमार्जित और गूढ़ मज़ाक़ करने में बड़े पटु है। कुछ लोगों का कहना है कि गुजराती में जो उनकी रचनाएँ हैं, वे 'क्लासिक' साहित्य से टक्कर लेती हैं। अङ्गरेज़ी में लिखने का ढङ्ग भी उनका सराहनीय है। परन्तु शायद ही किसी जीवन में Gandhi Ji as Literary man का वर्णन किया गया हो। अथवा उनकी बैरिस्टरी की पहुँच आदि का वर्णन हो। इस तरह जब तक हम चरित्र-नायक के जीवन के प्रत्येक भाग पर प्रकाश नहीं डालेंगे, तब तक यह जीवनी अपूर्ण ही रह जायगी और चरित्र-चित्रण किसी काम का न होगा।

आशा है, लेखक, प्रकाशक तथा पाठक हिन्दी-साहित्य की इस ख़ामी को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे।

❀ ❀ ❀

२५) का नक़द पुरस्कार

पुरस्कार-प्रतियोगिता

नियम

१—इस प्रतियोगिता में 'भविष्य' के सभी पाठक भाग ले सकते हैं, परन्तु प्रत्येक उत्तर के साथ, कूपन अवश्य आना चाहिए।

२—इसमें भाग लेने वालों को कोष्ठक के ख़ानों की पूर्ति करनी है। सहायता के लिए नीचे तालिका दी गई है। उदाहरणार्थ नं० १ से ३ तक के ख़ानों में एक-एक ऐसा अक्षर हो कि तीनों अक्षरों को मिला कर जो शब्द बने, वह 'रामायण के एक पात्र का नाम' हो।

३—ख़ानों को पूरा करके तथा कूपन भर के पृष्ठ के इस भाग को काट कर सम्पादक-'भविष्य' के पास लिफ़ाफ़े में इस प्रकार भेजिए कि यहाँ वह ता० २६ नवम्बर तक मिल जाय। लिफ़ाफ़े के ऊपर बाईं ओर 'पुरस्कार-प्रतियोगिता' अवश्य लिखा हो, नहीं तो हमें लिफ़ाफ़े के मिलने में विलम्ब हो जायगा, जिसके उत्तरदाता हम न होंगे।

४—निर्णय का अधिकार सम्पादक को है। इस विषय में किसी पत्र-व्यवहार पर ध्यान न दिया जायगा। अतः पाठक लिफ़ाफ़े में कोई पत्र या टिकट न रक्खें।

५—जिसका उत्तर सम्पादक के उत्तर से मिल जायगा, उस पाठक को, यदि वह 'भविष्य' का स्थायी ग्राहक होगा तो, २५) नक़द पुरस्कार मिलेगा। यदि ग्राहक न होगा तो २०) नक़द पुरस्कार मिलेगा। यदि कोई उत्तर सही न होगा तो १५) की 'चाँद कार्यालय' की पुस्तकें सबसे कम अशुद्धियों वाले पाठक या पाठकों को दी जायँगी।

६—'चाँद' तथा 'भविष्य' से सम्बन्ध रखने वालों (कर्मचारी आदि) को इसमें भाग लेने का अधिकार नहीं है।

१	२	३	४	५	६
७	८	■	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६	१७	■
१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	■	२९	३०
३१	३२	■	३४	३५	३६

तालिका

सीधे चलने वाले—

- १–३ रामायण के एक पात्र का नाम
- ४–६ यूरोप का एक ऐतिहासिक नगर
- ७–८ शरीर का एक भाग
- ११–१२ सङ्गीत में काम आता है
- १४–१७ मन जिसमें रम जाय
- १९–२० एक फल
- २०–२३ एक औषधि
- २३–२४ मार्ग
- २५–२७ संग्रह में काम आने वाली एक संख्या
- ३१–३२ गीत
- ३४–३६ एक प्रश्नवाचक सर्वनाम

नीचे चलने वाले—

- १–१३ एक फल
- १९–३१ नदी
- २–८ हाथ-पैरों का एक भाग
- १४–२० सम्बन्धवाचक प्रथम पुरुष सर्वनाम (संस्कृत)
- २०–३२ किसान खेत रखाने के लिए बनाता है
- २१–२७ निचोड़ कर निकाला जाता है
- ४–२२ सफलता विषयक एक कहावत
- ५–११ वही जो २३-२४ में है।
- १७–२३ 'अहम्' की एक विभक्ति
- २९–३५ एक संख्या
- ६–१२ एक रङ्ग
- २४–३६ अखाड़े का एक अस्त्र

कूपन

ग्राहक-नम्बर (यदि ग्राहक हैं) ____________

नाम ____________

पता ____________

❀ ❀ ❀

आवश्यक सूचना
'चाँद' और साप्ताहिक 'भविष्य' में विज्ञापन देकर अपने कारबार में अपूर्व लाभ उठाइए! इसका रेट बहुत ही सस्ता कर दिया गया है। आज ही पत्र भेज कर नियमावली मँगाइए।

महात्मा ईसा
इस पुस्तक में महापुरुष ईसा के जीवन की सारी बातें आद्यन्त वर्णन की गई हैं। उनके सारे उपदेशों तथा चमत्कारों की व्याख्या बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए! मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।≈)
'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
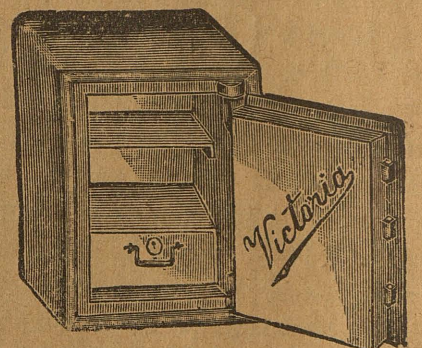
आर० एल० बर्मन कम्पनी की
सुप्रसिद्ध पुस्तकें हमसे मँगाइए !

चीना सुन्दरी	१॥)
जर्मन षड्यन्त्र	१॥)
ताया का ख़ून	।)
भक्त सूरदास	१)
वीर चरितावली	१)
जेल-रहस्य	१॥)
भीषण भण्डाफोड़	॥)
राजर्षि प्रह्लाद	१।)
काला साँप	।≈)
काला कुत्ता	॥)
ख़ूनी औरत	१।)
बालक श्रीकृष्ण	१।)
वीर अभिमन्यु	१)

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
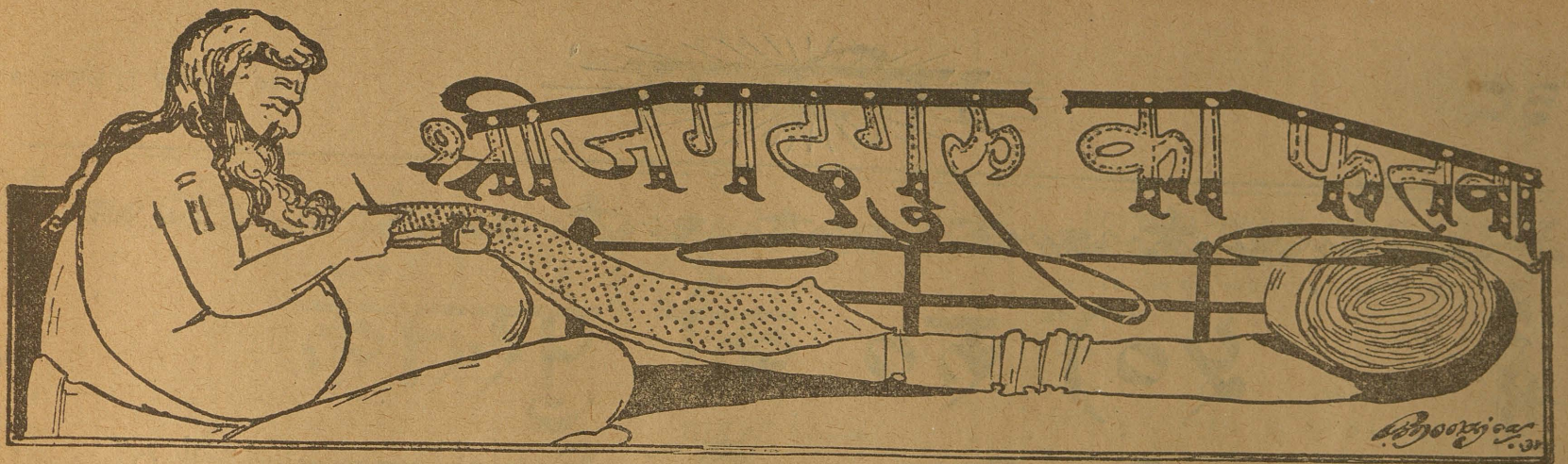
[हिज़ हालोनेस श्री० वृकोदरानन्द जी विरूपाक्ष]

जिस तरह श्रीमती जगद्गुरुआनी जी की असीम अनुकम्पा से श्रीजगद्गुरु की झोली रुपए-पैसे की ज़हमत से बरी रहती है, उसी तरह जब तक श्रीमान् सुस्टर साहब मौजूद हैं, तब तक बूढ़े भारत की झोली भी उन ख़तरनाक चीज़ों से महफ़ूज़ रहेगी। कम से कम अपने राम की तो ऐसी ही धारणा है।

❀

बात यह है कि श्रीमान् का 'बावन करोड़ी' बजट एसेम्बली के स्पेशल अधिवेशन में पेश है। और जब 'पेश' है तो 'पास' होते कितनी देर लगती है ? क्योंकि सरकार द्वारा 'पेश' का परिणाम "पास" अनिवार्य है। यह सनातन नियम है।

❀

इसके सिवा भगवद्कृपा से आजकल वहाँ सखी नौकरशाही का रामराज्य है ; उनके नाज़ो-अन्दाज़ पर—उनकी एक-एक अदा पर, सौ-सौ जान से क़ुर्बान जाने वालों की वहाँ भरमार है। बागडोर हिलाने की भी ज़रुरत नहीं, बस एक बार इशारा कर देना ही काफ़ी है।

❀

इसके सिवा दूरदर्शी अर्थ-सचिव अर्थात् श्रीमान् सुस्टर साहब ने अपने भाषण द्वारा सबको सावधान भी कर दिया है कि देखना यारों, व्यर्थ ही संशोधन आदि का अड़ङ्गा खड़ा करके भारत-अन्त्येष्टि के इस परम माङ्गलिक कार्य में बाधा डालने की बेवक़ूफ़ी न कर बैठना, नहीं तो सारा गुड़ गोबर हो जायगा और भारत की सद्गति भी न होगी।

❀

ऐसी दशा में एसेम्बली के किस सदस्य को कुत्ते ने काटा होगा जो संशोधन आदि पेश करके पाप का भागी बनेगा ! इसीलिए तो कितने ही धर्मभीरु तथा चतुर सदस्य दिल्ली की ओर गए ही नहीं। इससे सरकार का भी काम बन जाएगा और देश के सामने भी मूँछें ऊँची रह जाएँगी। भई वाह, इसे कहते हैं, कर्तव्यपरायणता !!!

❀

फिर, महज़ बावन करोड़ का तो मामला था। युग-युगान्तर के समृद्धिशाली भारत के लिए यह कौन बड़ी सी रक़म है, जो इसके लिए हमारे प्रतिनिधि महोदयगण अपनी श्रीमतियों का अनिर्वचनीय सुखद पार्श्व छोड़ कर दिल्ली दौड़े जाते और अपनी अन्नदात्री और सम्मानदात्री श्रीमती नौकरशाही के आमदनी के मार्ग में ख़लल डाल कर, अपने हाथों अपना परलोक नष्ट करते ?

❀

सर जार्ज सुस्टर महोदय के बुज़ुर्गों ने कोदो देकर इन्हें हिसाब नहीं पढ़ाया था। उनका बजट बिल्कुल ठीक और दुरुस्त था। करदाताओं ने कञ्जूसी कर दी, इसी से साढ़े उन्नीस करोड़ के घाटे की सम्भावना दिखाई देने लगी। फलतः इसकी पूर्त्ति तो होनी ही चाहिए। क्योंकि अगर टका ही नहीं तो राज्य किस काम का।

❀

सरकार स्वयं अपने सामरिक और असामरिक विभागों के ख़र्च में एकदम नौ करोड़ की कमी कर देने को तैयार है। थोड़े से गोरे ग़रीबों को छोड़ कर बाक़ी सब कर्मचारियों का वेतन दस सैकड़ा घटा रही है—यहाँ तक कि ४०) वेतन वाले काले क्लर्क भी नहीं बचने पाए हैं। ऐसी हालत में यह इतना बड़ा विशाल भारत बावन करोड़ भी न देगा तो क्या देगा ?

❀

लोग एतराज़ करते हैं कि इस ग़रीब देश में सिवीलियनों को बहुत रुपए दिए जाते हैं, उनकी छुट्टियों का वेतन, भत्ता, विलायत जाने-आने का ख़र्च—ली कमीशन के फ़तवे के अनुसार प्रायः तीन करोड़ और बढ़ गया है। सरकार अगर चाहती तो इसमें कमी कर सकती थी।

❀

परन्तु इन हज़रात को यह मालूम नहीं कि हमारी सरकार कुछ पत्थर की पुतली नहीं है, जो ऐसा निर्मम कार्य कर डालेगी ! और फिर, जब तक भारत के लँगोटीबन्द अधिवासी नमक और किरासिन तेल का व्यवहार करते हैं, तब तक हज़ारों कोस से आए हुए गोरे कर्मचारियों के आराम में ख़लल डालना कोई बुद्धिमानी भी तो नहीं है।

❀

कहीं विजया भवानी कृपा कर दें और थोड़ी देर के लिए सर जार्ज सुस्टर की जगह इस बूढ़े भङ्गड़ को मिल जाय (घबराइए नहीं, कार्य हो जाने पर गङ्गा नहा लेंगे, सारा पाप धुल जाएगा) तो क़सम ख़ुदा की 'लँगोटी-टैक्स' लगा कर सखी नौकरशाही को मालामाल कर दें। वह राज्य ही क्या, जिसकी प्रजा लँगोटी पहने और टैक्स न दे।

❀

एसोसिएटेड प्रेस ने ख़बर दी है कि लूट-तराज़ और दङ्गा-फ़साद के भय से ढाका के बहुत से हिन्दू बोरिया-बँधना समेट कर इधर-उधर भाग रहे हैं। अच्छी बात है, इससे संसार को हिन्दुओं की 'पलायन-पटुता' का परिचय तो प्राप्त ही होगा, साथ ही बङ्गाल सरकार के गौरव की भी वृद्धि होगी। हमारी तो राय है कि अगर ये हिन्दुस्तान ही छोड़ दें तो सारा बखेड़ा तय हो जाय और हमारे वृकोदर मौलाना को तोंद पसारने के लिए काफ़ी जगह भी मिल जाय।

❀

एक तो 'कुफ़्रिस्तान' उस पर यह जगहतङ्गी। अगर हिन्दू इस देश में बने रहे तो एक दिन मौलाना का दम ही घुट जाय, तो आश्चर्य नहीं। इसीलिए बेचारे आजकल जी-जान से इसे इस्लामिस्तान बनाने की फ़िक्र में लगे हुए हैं और माशा अल्लाह सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं।

❀

यही नहीं, मौलाना के तोंद-चक्रव्यूह में पड़ कर दादा मुग्धानल देव भी राह भूल गए हैं और उसमें से निकलने के लिए पिंजड़ाबद्ध पत्ती की तरह पर फड़फड़ा रहे हैं। ख़ुदा बचाए दादा जी को। बेचारे क्या जानते थे कि यह अपना ही बनाया हुआ फन्दा अपने को ही फाँस लेगा।

❀

गत २१ नवम्बर को उदार-हृदय साम्राज्यवादियों ने गत यूरोपीय महासमर का अवसान-दिवस मना डाला। साम्राज्य के बड़े आदमियों के लिए जिन लोगों ने समर में जूझ कर जानें दी थीं, उनके स्मृति-स्तम्भों पर पुष्प-मालाएँ चढ़ा दी गईं और गिर्जाघरों में उनकी आत्माओं की चिर शान्ति के लिए 'स्वर्गस्थ पिता' से सिफ़ारिश भी (प्रार्थना ?) कर दी गई। दोनों ज़रूरी काम एक साथ ही हो गए।

❀

आशा है, स्वर्गस्थ पिता जी ने अपने इन परम दयालु पुत्रों की सिफ़ारिश के अनुसार गत युद्ध में शरीर त्यागने वाली आत्माओं की शान्ति के लिए कोई 'स्पेशल अरेञ्जमेण्ट' कर डाला होगा। क्योंकि अपने परम भक्तों के अनुरोध की उपेक्षा भला वे कैसे कर सकते हैं और वह भी अपने गोरे लाड़लों का।

❀

और सुनिए, परम पिता से सिफ़ारिश करने के बाद दयालुओं ने दो मिनिटों तक उन स्वर्गस्थ आत्माओं के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं। इन दो मिनिटों में उन्होंने क्या सोचा और क्यों आँखें बन्द कर लीं, इसका वास्तविक रहस्य तो वे और उनके 'पिता जी' को ही मालूम होगा। परन्तु अपने राम तो इस दया और करुणा के ढोंग पर दिलोजान से फ़िदा हैं। साथ ही अपने राम का यह भी विश्वास है कि हयादारी का यह सम्पूर्ण अभिनव अभिनय देख कर बेचारी निर्लज्जता ने भी लज्जा से सिर झुका लिया होगा।

❀

साम्राज्य की रक्षा के लिए लाखों मासूमों ने अपनी जानें निछावर कर दीं, हज़ारों लँगड़े-लूले और अन्धे होकर जीवन-यापन कर रहे हैं। हज़ारों अपने प्रिय परिजनों को खोकर अनाथ बन गए ! इनके लिए यह दो मिनिट की 'आँख मुदौअल !' माशा अल्लाह, यह अलौकिक उदारता और अनुपम त्याग गोरे साम्राज्य-वादियों के लिए ही सम्भव है।

❀

किसी उर्दू कवि का कथन है,—"कहाँ ले जाऊँ दिल दोनों जहाँ में सख़्त मुश्किल है। यहाँ परियों का मजमा है, वहाँ हूरों की महफ़िल है।" अर्थात् 'यहाँ' और 'वहाँ'—कहीं भी हसीनों की कमी नहीं। एक से एक ख़ूबरू भरे पड़े हैं। मगर माशा अल्लाह, जैसा आकर्षक रूप बङ्गाल के नौनिहाल लीडर श्री० सुभाष-चन्द्र बोस ने पाया है वैसा न तो किसी परी को नसीब है, न किसी हूर को।

❀

हुस्नपरस्तों की नानी अर्थात् हमारी सखी नौकर-शाही को तो बोस बाबू के इस आकर्षक रूप ने परेशान कर डाला है। बेचारी दिन-रात उनके पीछे

(शेष मैटर ३६वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

५०) रु० की पुस्तकें

२) रु० मासिक क़िश्त पर कैसे ली जा सकती हैं ?

(१) जो लोग अपनी ज्ञान-वृद्धि के उत्सुक हैं और प्रत्येक मास पुस्तकें मँगवाया करते हैं—जिससे बार-बार उन्हें डाक-व्यय देकर सरकारी ख़ज़ाना भरना पड़ता है—उनकी सुविधा के लिए तथा हिन्दी के प्रचार को दृष्टि में रखते हुए यह निश्चय किया गया है, कि कार्यालय से ५०) रु० के मूल्य की इच्छानुकूल पुस्तकें इस स्कीम के अनुसार प्रत्येक मेम्बर को रेलवे-पार्सल द्वारा भेज दी जावें और वे नियमित रूप से प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में २) रु० कार्यालय को भेजते रहें।

(२) पुस्तकें केवल 'चाँद' तथा 'भविष्य' के प्रतिष्ठित ग्राहकों को ही दी जावेंगी, हर किसी को नहीं।

(३) कार्यालय का छपा हुआ प्रार्थना-पत्र इसी के साथ भेजा जा रहा है। ग्राहकों को इसी पर हस्ताक्षर करके भेजना चाहिए।

(४) प्रार्थना-पत्र स्वीकृत होने पर पुस्तकें देने पर विचार किया जायगा, यदि किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह उपस्थित हुआ, तो बिना किसी प्रकार का कारण बतलाए, उन्हें इन्कार कर दिया जायगा।

(५) सब प्रकार का इतमीनान हो जाने से यहाँ से इक़रारनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जायगा और साथ ही उनके पास पुस्तकों का बड़ा और नया सूचीपत्र भेज दिया जायगा, ताकि ग्राहक अपनी इच्छानुकूल पुस्तकें पसन्द करके अपना ऑर्डर बना कर भेज सकें।

(६) सूचीपत्र में जिन पुस्तकों का उल्लेख न होगा और यदि ग्राहक अन्य पुस्तकें मँगाना चाहेंगे तो उन्हें भेजने के लिए संस्था बाध्य न होगी।

(७) इन पुस्तकों पर किसी भी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायगा, चाहे वे अपनी प्रकाशित हों अथवा बाहरी (कमीशन केवल नक़दी पुस्तकें ख़रीदने पर ही देने का नियम है—इसे पाठक स्मरण रक्खें)।

(८) ऑर्डर देते समय ग्राहकों को ५०) रु० की जगह ६०-७० रुपयों की पुस्तकों का ऑर्डर बना कर भेजना चाहिए, क्योंकि प्रायः ऐसा होता है, कि माँगी हुई समस्त पुस्तकें स्टॉक में तैयार नहीं होतीं, अतएव उस समय जो भी पुस्तकें तैयार होंगी, उनमें से ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें भेज दी जावेंगी।

(९) पुस्तक भेजने में रेल का जो किराया लगेगा (जो नाम-मात्र का होता है) वह, तथा बिल्टी की रजिस्ट्री आदि का व्यय, ग्राहकों को ही देना होगा।

(१०) बिल्टी रेल तथा डाक-व्यय के अतिरिक्त ६) रु० की वी० पी० द्वारा भेजी जायगी, और शेष २२ क़िश्तें २) रु० मासिक की होंगी, जो प्रत्येक अङ्गरेज़ी मास के प्रथम सप्ताह में आ जाना चाहिए। भेजने में जो व्यय होगा वह ग्राहकों को ही देना होगा।

(११) यदि २ क़िश्तें पिछड़ गईं तो शेष सारा रुपया ग्राहकों का एक-मुश्त फ़ौरन चुका देना होगा! अन्यथा क़ानूनी कार्रवाही की जायगी और मुक़दमे के ख़र्च लिए ग्राहकों को ज़िम्मेदार होना पड़ेगा।

(११) यदि एक वर्ष तक प्रत्येक मास की क़िश्त समय पर अदा होती रही, तो उस ग्राहक को दूसरी बार भी ५०) रु० की पुस्तकें इसी शर्त पर भेज दी जावेंगी—पर यदि एक भी क़िश्त समय पर न पहुँची अथवा मुक़दमा आदि करना पड़ा तो उस ग्राहक से भविष्य में कोई व्यवहार न रक्खा जायगा।

हमें पूर्ण आशा है, पढ़ने के व्यसनी पाठक इस नई स्कीम द्वारा ईमानदारी से उचित लाभ उठावेंगे और हमें भी उत्तरोत्तर सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

* *

उपरोक्त नियमों में किसी भी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं किया जायगा, व्यर्थ में आए हुए पत्रों का तब तक उत्तर नहीं दिया जायगा, जब तक पते का टिकटदार लिफ़ाफ़ा पत्रोत्तर के लिए न भेजा जायगा।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर की आज्ञा से

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,

इलाहाबाद

ऑर्डर-फ़ॉर्म

श्री० प्रबन्धक महोदय,

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

महाशय जी,

मुझे आपकी नई स्कीम बहुत पसन्द है। आप मेरा नाम इसके मेम्बरों की सूची में लिख लें और प्रकाशित होते ही पुस्तकों का नया सूचीपत्र तथा इक़रारनामे (Agreement) का फ़ॉर्म हस्ताक्षर करने के लिए भेज दें। मुझे ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें एक साथ मँगाना स्वीकार है। ६) का वी० पी० (डाक-व्यय सहित) स्वीकार कर ली जायगी और नियमित रूप से आपको २) रु० हर मास के शुरू में पहुँचते रहेंगे।

मेरा 'चाँद' / 'भविष्य' का ग्राहक-नम्बर —————— है।

हस्ताक्षर ——————

पूरा पता ——————

——————

——————

यदि पुस्तक मँगाना चाहते हों तो इसी ऑर्डर-फ़ॉर्म को साफ़-साफ़ भर कर भेजने की कृपा करें ताकि शर्तनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जा सके।

बातचीत

एजेण्टों से—

'भविष्य' की बिक्री के हिसाब में हमें ६-११-३१ से १२-११-३१ तक के सप्ताह में निम्न-लिखित एजेण्टों का रुपया मिला है। बहुत से एजेण्टों ने अभी तक न तो रुपया ही भेजा है और न हिसाब ही! अतएव उन्हें चाहिए कि वापसी डाक से कुल रक़म भेज कर अक्टूबर मास का हिसाब साफ़ कर दें। जो एजेण्ट बिना बिकी हुई कॉपियाँ वापस करें, उन्हें चाहिए कि वह १० सैकड़ा से अधिक न लौटाएँ, अन्यथा हिसाब में जमा न की जा सकेंगी। जिन एजन्टों का रुपया समय पर नहीं मिला, उनको कॉपियाँ नहीं भेजी जायँगी!

१ मेसर्स ना० च० रा० च० देहरादून ... २०)
२ श्री० बी० एम० गुप्ता, आगरा (चेक से) ३१।≡)।।।
३ श्री० एस० आर० सिन्हा, बाराबङ्की (चेक) १०=)
४ श्री० ज० झा, मधुबनी ... १३।-)
५ श्री० अ० प्र० जी, आरा ... १८)
६ श्री० प० रा० जायसवाल, जम्होर ... १०)
७ मेसर्स म० प्र० रा० गो० होशङ्गाबाद ... ३ ।।≡)
८ श्री० ती० रा० पटना ... १०)
९ श्री० वि० प्र० गुप्ता, आज़मगढ़ ... १०)
१० श्री० एन० एस० कालकर, नागपुर ... ३०)
११ मेसर्स मो० ला० हु० च० हरद्वार ... १०)
१२ श्री० जा० श० पटना ... २५)
१३ मेसर्स सू० न० तिवारी ऐण्ड ब्र०, फ़ैज़ाबाद २५)
१४ श्री० रा० न० दीक्षित, इटावा ... १५)
१५ श्री० प० रा० दवे, इटारसी ... १२।।।-)
१६ मेसर्स स० ज० न्यू० ए० ग़ाज़ियाबाद ४।।)
१७ श्रीमती फू० दे० अजमेर ... १०)
१८ श्री० क० ला० जी खुर्जा, 'चाँद' के लिए १३।।)
१९ श्री० चि० ला० रायपुर, 'चाँद' के लिए ४५)

इसके अतिरिक्त श्री० ज० झा मधुबनी की २ कॉपी, जोकि १० सैकड़ा के हिसाब से अधिक वापस की हैं, जमा नहीं की गई हैं, अतएव इनका मूल्य ।=) नाम निकल रहा है।

—मैनेजर 'भविष्य'

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

(३७वें पृष्ठ का शेषांश)

फिरकी सी फिरा करती हैं और मौक़ा पाते ही Gulliver's Travels की उस 'याहुनी' की तरह बोस बाबू से चिपट जाती हैं, जो मि० गुलीवर को नग्न नहाते देख, 'याहू-याहू' कह कर चिपट गई थीं।

❀

ढाका के मैजिस्ट्रेट मि० डुर्नो की हत्या के बाद से वहाँ की पुलिस ने जो ताण्डव आरम्भ किया था, उसकी एक ग़ैर-सरकारी जाँच होने वाली है। श्री० बोस उसी के लिए ढाका जा रहे थे। परन्तु बीच में गिरफ़्तार कर लिए गए। यद्यपि और भी बहुत कार्यकर्ता इस जाँच के लिए वहाँ गए हैं, परन्तु उनमें कोई आकर्षण न होने के कारण सखी ने श्री० बोस को हीं पसन्द किया है। 'जाहि जाहि सों मन रमै, ताहि-ताहि सों काम!'

❀ ❀ ❀

ग्राहकों से—

निम्न-लिखित ग्राहकों की सेवा में निम्नाङ्कित अङ्क दुबारा भेजे गए हैं।

४८वाँ अङ्क १३८५ को।
५२वाँ अङ्क ३०३६, ३०२८, और १३८५ को।
५३वाँ अङ्क २७९२, २९८२, और २१०९ को।
५४वाँ अङ्क २९८२, १९४६, २४९२, १२२१ और २५५३ को।
५५वाँ अङ्क ३०३६, ९०३, ३१८० और ३१९२ को।

निम्नाङ्कित नम्बर वाले ग्राहकों के पते बदल दिए गए हैं।

२६७२, ३१६३, १७४४, २९८२, ३१७२, २२६८ २८०० और १२४५।

गत ६-११-३१ से १२-११-३१ तक के सप्ताह में 'भविष्य' के निम्न-लिखित पुराने ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ। जिनका चन्दा प्राप्त हुआ है, उनका ग्राहक-नम्बर तथा चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है:—

ग्राहक-नम्बर				प्राप्त रक़म
११०६	...	...	...	३।।)
२५८६	...	...	...	६।।)
२६८१	...	...	...	६।।)
२५८७	...	...	...	६।।)
२६२०	...	...	...	६।।)
२७०९	...	...	...	६।।)
२९३९	...	...	...	३।।)
२९९२	...	...	...	३।।)

गत ६-११-३१ से १२-११-३१ तक के सप्ताह में निम्न-लिखित 'भविष्य' के नवीन ग्राहक हुए हैं। जिन-जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ है, उनका नाम तथा ग्राहक-नम्बर के साथ चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है। ग्राहकों से प्रार्थना है कि वे अपना ग्राहक-नम्बर स्मरण रक्खें तथा पत्र-व्यवहार के समय इसे लिखना न भूलें, ताकि उचित कार्रवाई करने में किसी प्रकार का विलम्ब न हो।

ग्राहक-नम्बर	नाम ग्राहक	रक़म
३२५१	श्री० सेक्रेटरी महोदय, आर्य-वाचनालय, मोमीनाबाद ...	३)
३२५२	मेसर्स हीरालाल शिवनारायण, धुलिया (खानदेश) ...	६।।)
३२५५	श्री० अनरूपलाल, नायब-तहसीलदार, चकिया (बनारस स्टेट)	६)
३२५६	श्रीमती प्रतापबहादुर, लखनऊ	६।।)
३२५७	श्री० सेक्रेटरी महोदय, रिक्रीएशन क्लब, नरहन (दरभङ्गा) ...	६।।)
३२५८	लाला निरञ्जनलाल, अल्मोड़ा	३।।)
३२५९	बाबू गोविन्दराव सेक्रेटरी, भैंसदेही (बैतूल) ...	१२)
३२६०	ठा० रघुबीरसिंह रावत, चौमासू	३।।)
३२६१	श्री० मोतीराम त्रिपाठी, भीमताल (नैनीताल) ...	६।।)
३२६४	श्री० झगड़ूसिंह, शाहजहाँपुर (मेरठ) ...	२।।=)

निम्न-लिखित ग्राहकों को अगले सप्ताह में साप्ताहिक 'भविष्य' की वी० पी० भेजी जाएगी। आशा है, ग्राहकगण वी० पी० स्वीकार कर पूर्ववत् 'भविष्य' को अपनाए रहेंगे।

३०८४	३०९२	३०८१	३०४०
१२४७	१३१७	१३५८	३०४१
२७८८	२७९३	२७९६	३०५०
३०४२	३०४६	३०४७	१४०१
३०५८	३०५९	१३७९	२८०३
१४११	२८०१	२८०२	२८१०
२८०५	२८०७	२८०८	३०८८
३०६९	३०७३	३०७७	...
३०८५	३०९०	२९१०	...

❀ ❀ ❀

Price As. 4 only

Registered No. A—2085

उपन्यास-प्रेमियों के लिए एक नूतन उपहार !

[अत्यन्त मनोहर, सामाजिक उपन्यास]

सांसारिक आपत्तियों में डूबे हुए मनुष्यों के लिए यह उपन्यास ईश्वरीय सन्देश है। विपत्ति-काल में मनुष्य को किस प्रकार स्थिर-चित्त, शान्त, सहिष्णु, धैर्यवान तथा धर्मनिष्ठ होना चाहिए; शत्रुओं के प्रहार सहते हुए उनके प्रति कैसे पवित्र भाव रखने चाहिए; दीनता का ताण्डव-नृत्य होने पर भी प्रसन्नतापूर्वक त्याग-व्रत लेकर किस प्रकार लोक-सेवा तथा परोपकार के लिए उद्यत रहना चाहिए; और इसके फल-स्वरूप किस प्रकार सारी आपत्तियाँ स्वर्ग-सुख में परिणत हो जाती हैं, इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन आपको इसमें मिलेगा। जो मनुष्य किसी समय एक दीन-हीन व्यक्ति के ख़ून का प्यासा था, दैवी संयोग से वह किस

छपाई-सफ़ाई अत्यन्त सुन्दर व दर्शनीय ! मूल्य केवल लागत मात्र !

पुस्तक छप रही है ! अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए !

प्रकार अपना सारा वैभव उसके चरणों में अर्पण करके संन्यास ग्रहण कर लेता है तथा आपत्तियों का क्रीड़ास्थल—एक दरिद्र की कुटी किस प्रकार विवाह-मन्दिर बन जाती है, इसका अद्भुत रहस्य पुस्तक पढ़ने से ही मालूम होगा।

स्त्रियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। अपर्णा देवी का चरित्र पढ़ कर प्रत्येक स्त्री अपना जीवन सफल बना सकती है। उसका आदर्श पति-प्रेम, सेवा-भाव एवं दारुण परिस्थिति में सर्वदा प्रसन्न रहते हुए, पति को धैर्य एवं साहस प्रदान कर, क्षण-मात्र के लिए भी दुखी न होने देना वे अलौकिक गुण हैं, जिन्हें प्रत्येक भारतीय रमणी को हृदयङ्गम करना चाहिए। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल है, जिसे छोटा सा बच्चा भी समझ सकता है। वर्णन-शैली अत्यन्त मनोहर है। पुस्तक छप रही है; शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

Edited, Printed and Published by Shrimati Lakshmi Devi, at The Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.